VIDYA BHARATI
Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan
Quality Education with Values

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
मूल्य आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

सेवा विशेषांक 2020-21

कोरोना महामारी में लॉकडाउन के दौरान मदद के लिए आगे आया विद्या भारती परिवार

देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें

39 विद्या भारती का अभिनव प्रयोग मोहल्ला पाठशालाएं

47 आत्मनिर्भर ग्रामों के लिए एकल विद्यालयों की सार्थक पहल

48 प्रशिक्षण केन्द्र तिलौथू स्वरोजगार में बना सारथी

63 अनुभवः कोरोना दे गया मितव्ययता की सीख

सेवा विशेषांक

संपादक मंडल

श्री अवनीश भटनागर, कुरुक्षेत्र
श्री सुधाकर रेड्डी, हैदराबाद
श्री विजय मारू, दिल्ली
श्री रवि कुमार, कुरुक्षेत्र
श्री अक्षि अग्रवाल, हसनपुर (अमरोहा)
डॉ. नीरज शर्मा, मेरठ
डॉ. नरेंद्र मिश्रा, मेरठ
डॉ. कुलदीप मेहंदीरत्ता, कुरुक्षेत्र

प्रकाशक

प्रचार विभाग
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
प्रज्ञा सदन, सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
महात्मा गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065
Email: vbsamvad@gmail.com
Website: www.vidyabharti.net

सेवा विशेषांक

	पृष्ठ का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	02
2	विद्या भारती का परिचय	03
3	लॉकडाउन में संकटमोचक बने सरस्वती विद्यालय	07
4	तन–मन–धन से सेवा में संलग्न रहा विद्या भारती परिवार	10
5	शिक्षा के साथ सामाजिक दायित्व में अग्रणी विद्या भारती	11
6	16 जिलों में विद्यालयों ने चलाया सेवा अभियान	12
7	देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें	13
8	चरितार्थ किया नर सेवा नारायण सेवा का मंत्र	17
9	लॉकडाउन में टोली के साथ करते रहे दायित्व निर्वहन	19
10	राहत सामग्री वितरण के साथ किया सेनेटाइजेशन	20
11	तीन माह तक वितरित की जरूरत की सामग्री	21
12	124 विद्या मंदिरों से प्रतिदिन की भोजन व्यवस्था	22
13	राहत सामग्री वितरण के साथ बच्चे का कराया इलाज	23
14	विद्या भारती दिल्ली प्रांत द्वारा किए गए सेवा कार्य	24
15	आइसोलेशन सेंटर में बच्चों की निस्वार्थ भाव से की सेवा	25
16	जम्मू–कश्मीर में राहत सामग्री और मास्क का वितरण	26
17	Small acts, when multiplied by millions of people	27
18	विद्यालय परिवार की मदद के लिए आगे आए पूर्व छात्र	28
19	शिक्षा विकास समिति ओडिशा उड़ीसा ने पूरे राज्य...	29
20	Seva activities in Telangana	30
21	बिना भेदभाव सेवा पर ईसाई परिवार ने जताया आभार	31
22	एक सेवा ऐसी भी...	32
23	बाजार में खत्म हुए तो आचार्य और दीदी ने बनाए मास्क	33
24	आइसोलेशन वार्ड के लिए समर्पित किए विद्यालय भवन	36
25	आदर्श क्वारंटाइन सेंटर बना धाबा छात्रावास	38
26	विद्या भारती का अभिनव प्रयोग, मोहल्ला पाठशालाएं	39
27	विद्यालय चला गांव की ओर	40

	पृष्ठ का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
28	मोहल्ला शिक्षण केन्द्रों से बना सकारात्मक माहौल	41
29	आचार्यों ने दी जरूरतमंद बच्चों की आधी ट्यूशन फीस	42
30	लॉकडाउन में चलीं ऑनलाइन कक्षाएं	43
31	पूर्व छात्रों ने किया निर्बल विद्यालयों का सहयोग	44
32	एक और कदम समाज की ओर	45
33	दिल में है यदि आग लक्ष्य का पंथ स्वयं आएगा...	46
34	आत्मनिर्भर ग्रामों के लिए एकल विद्यालयों की पहल	47
35	औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र तिलौथू स्वरोजगार में बना सारथी	48
36	शिक्षा की अलख जगा रहे आचार्य	49
37	पूर्वोत्तर भारत में कोरोना आपदा को अवसर में...	50
38	गीता निकेतन ने बनाई हैंड सैनिटाइजेशन मशीन	51
39	गतिविधियों के माध्यम से सीखे रचनात्मक कार्य	52
40	विद्या भारती उत्तराखंड ने पूरे राज्य में किए सेवा कार्य	53
41	जनजागरण के लिए कला को बनाया हथियार	54
42	सही अर्थों मे समाज सेवक हैं विद्या मंदिर वाले	55
43	बालकों के लिए माताओं को भेजे गतिविधियों के वीडियो	56
44	लॉकडाउनः क्षमता जागरण का पर्व	57
45	सामान्य व्यक्ति में भी जगी संवेदना	58
46	सेवा कार्य में जुटे रहे विद्या भारती के कार्यकर्ता	59
47	कुछ ऐसे रहे भी अनुभव...	60
48	...काश कोरोना फिर से हो जाए	62
49	कोरोना दे गया मितव्ययता की सीख	63
50	बच्ची के संस्कार का हिस्सा बन गया सेवा का भाव	64
51	जमाखोरी के इस माहौल में अपरिग्रह का दर्शन	65
52	समाचार–पत्रों में सुर्खियां बने विद्या भारती के सेवा कार्य	66
53	कोरोना से मुक्ति के लिए गायत्री मंत्र का सामूहिक जप	68

प्रवाह

'देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।' विद्या भारती के विद्यार्थी भैया–बहनों व आचार्यों के मुख से मैंने यह गीत अनेकों बार सुना है। विद्या भारती के लक्ष्य में इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि हमें ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो जीवन में अपने अभावग्रस्त बधुओं की सेवा हेतु संकल्पित हो। गीत में आगे पंक्तियाँ आती हैं :–

गर्मी की तपती दुपहर में, पेड़ सदा देते हैं छाया।
सुमन सुगंध सदा देते हैं, हम सबको फूलों की माला।
त्यागी तरुओं के जीवन से हम परहित कुछ करना सीखें।।

हमारा जीवन केवल अपने लिए नहीं है वरन् हमें जीवन में समाजहित में भी कार्य करते रहना चाहिए, यह शिक्षा विद्यालयों में दी जाती है। विद्या भारती के विद्यालयों में बालक के सर्वांगीण विकास हेतु पांच आधारभूत विषयों की शिक्षा दी जाती है, जिनमें से एक है 'नैतिक एवम् आध्यात्मिक शिक्षा'। सम्पूर्ण सृष्टि में एक ही परम तत्त्व अनुस्यूत है यही अध्यात्म का केन्द्र बिन्दु है इसलिए 'नर सेवा – नारायण सेवा' का भाव विकसित हो, इसका प्रयास विद्या भारती के विद्यालयों में किया जाता है।

विद्यालयों में दिए जाने वाले इन शुभ संस्कारों के सुपरिणामों का अनुभव वैसे तो अनेक बार दिखाई देता ही है परन्तु इसका विशेष अनुभव आया कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थिति का सामना करने के लिए, जब सम्पूर्ण भारत में लॉकडाउन (24 मार्च से 3 मई) लगाया गया तथा उसके पश्चात् जब क्रमशः अनलॉक शुरु हुआ तब देश में हजारों लोगों के सामने उस समय भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इस भीषण आपदा के कारण चारों और भय व्याप्त हो गया था। घरों से निकलना पूर्णतः प्रतिबंधित था। ऐसी परिस्थितियों में सरकार से विशेष अनुमति प्राप्त कर संघ प्रेरित संगठनों ने सेवा भारती के बैनर के नीचे सेवा कार्य प्रारम्भ किया। कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे, सभी को अत्यावश्यक दवाइयाँ मिलती रहे इस हेतु प्रयास प्रारम्भ किए गए। सेवा के इस कार्य में विद्या भारती की योजनान्तर्गत चलने वाले विद्यालयों के आचार्यों व विद्यार्थियों ने भी बढ़–चढ़ कर सहयोग किया। इस कार्य में जो अनुभव आए उनको संकलित करना तथा उन्हें लिखना यह सरल कार्य नहीं था। अपनों की ही तो सेवा की है अतः इसे लेखबद्ध करने की आवश्यकता ही क्या है? यही भाव सामान्यतः कार्यकर्ताओं का रहता है। परन्तु भविष्य के लिए अभिलेख का अपना महत्त्व रहता है इसे ध्यान में रखकर इस काल के कुछ संस्मरण एकत्र कर पुस्तक रूप में छापने का निर्णय लिया गया और उसी का परिणाम यह पुस्तक है। बहुत बड़े स्तर पर हुए सेवा कार्य की यह झलक मात्र है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन से वाचकों को उस समय की गंभीर परिस्थिति तथा उस समय किए गए सेवा कार्यों की व्यापकता का अनुमान हो सकेगा।

श्रीराम आरावकर
महामंत्री

भारत विश्व का प्रथम राष्ट्र है। विश्व के अनेक राष्ट्र जब पशुवत जीवन जीते थे, तब भारत ने ही उन्हें सभ्यता व संस्कृति का पाठ पढ़ाया था। इसलिए वे सभी देश भारत को अपना गुरु मानते थे। भारत के लिए कहा गया है–

एतद्देश प्रसूतस्य शकासाद अग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मानवाः।

इस देश में उत्पन्न पूर्वजों के चरित्रों से शिक्षा ले पृथ्वी के सभी लोगों ने अपने–अपने जीवन को संवारा है। यही कारण है कि भारत विश्व गुरु था।

उसी विश्वगुरु भारत ने दीर्घकाल काल तक चले संघर्ष एवं सद्गुण विकृति के फलस्वरूप अपना गुरुत्व खो दिया। अपना

विद्या भारती

दुनिया को भारत ने पढ़ाया सभ्यता और संस्कृति का पाठ

गुरुत्व खो देने से भारत कमजोर हुआ। भारत की इस कमजोरी का लाभ उठाकर पहले मुगलों ने और बाद में अंग्रेजों ने इस पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। केवल अधिकार ही नहीं अंग्रेजों ने इसके श्रेष्ठ वेद ज्ञान को गडरियों के गीत अर्थात् मिथक घोषित कर शिक्षा की मूल धारा से बाहर कर दिया।

विद्या भारती शिक्षा क्षेत्र में क्यों आई?

भारत की स्वाधीनता से पूर्व अर्थात् अंग्रेजी काल में ही स्वदेश प्रेमियों के ध्यान में यह बात आ गई थी कि यह अंग्रेजी शिक्षा भारतीय नवयुवकों में भारतीयता के संस्कार मिटाकर उनमें अंग्रेजीयत भर रही है, जो आगे चलकर देश के लिए घातक सिद्ध होगी। इस अंग्रेजी शिक्षा के विरोधस्वरूप सबसे पहले रवीन्द्र नाथ ठाकुर के नाना राज नारायण बसु ने राष्ट्रीय शिक्षा का बीडा उठाया। उनके बाद महर्षि अरविन्द, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, स्वामी विवेकानंद, भगिनी निवेदिता, स्वामी दयानंद सरस्वती, लाल बाल व पाल तथा गांधीजी ने राष्ट्रीय शिक्षा की ज्योति को प्रज्जवलित रखा।

स्वाधीनता के पश्चात् सारा देश चाहता था कि अब देश स्वाधीन हो गया है, अंग्रेज चले गए हैं, इसलिए अंग्रेजी शिक्षा को हटाकर पुनः भारतीय शिक्षा प्रतिष्ठित करनी चाहिए। जब भारत आजाद हुआ तब एक पत्रकार ने विनोबा भावे से पूछा था कि स्वतंत्र भारत में आप कैसी शिक्षा चाहते हैं? विनोबा जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था अब भारत में भारतीय शिक्षा लागू होनी चाहिए। भारतीय शिक्षा को लागू करने के लिए यदि छः माह का समय लगे तो छः महीने तक देश के सभी विद्यालय बंद कर देने चाहिए। जब छः महीने बाद विद्यालय खुलें तब उनमें भारतीय ज्ञान ही दिया जाए। किन्तु उस समय के नेतृत्व ने

विनोबा जी की बात नहीं मानी और वही अंग्रेजी शिक्षा चलने दी। इतना ही नहीं देश की शिक्षा उन लोगों के हाथों में सौंपी जो अभारतीय मानस के थे। इस प्रकार स्वतंत्र भारत में भी जब अभारतीय शिक्षा ही दी जाती रही, तब विद्या भारती ने शिक्षा क्षेत्र में आना आवश्यक समझा। सन् 1952 में विद्या भारती योजना का पहला सरस्वती शिशु मंदिर, गोरखपुर में प्रारम्भ हुआ। आज तो विद्या भारती के लगभग 25 हजार शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं, जिनमें व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की शिक्षा दी जा रही है।

विद्या भारती क्या चाहती है?

विद्या भारती ने शिक्षा क्षेत्र का वरण तो कर लिया, किन्तु उसने शिक्षा को ही क्यों चुना? यह जानना भी आवश्यक है। विद्या भारती ने देश के शिक्षा क्षेत्र की चुनौती को स्वीकार किया है और भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन कर उसका विकल्प विकसित करने का संकल्प लिया है। इस संकल्प की पूर्ति हेतु विद्या भारती ने अपना लक्ष्य निर्धारित किया है। उसने अपने लक्ष्य में जो–जो करना चाहती है, उसे स्पष्ट शब्दों में कहा है।

विद्या भारती का लक्ष्य

विद्या भारती इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना चाहती है, जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी–झोंपडियों में निवास करने वाले दीन–दुखी, अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न, एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

विद्या भारती का यह लक्ष्य अपने आप में इतना स्पष्ट है और इतना सुविचारित है कि कुछ और कहना शेष नहीं रहता। लक्ष्य साफ–साफ बताता है कि हमारे देश में विदेशी नहीं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली हो, जिससे हिन्दुत्वनिष्ठ युवा पीढ़ी निर्मित हो जो राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित हो। मैं समझता हूं इससे बढ़कर व्यक्ति और राष्ट्र हित का विचार नहीं हो सकता। इसी लक्ष्य की पूर्ति में विद्या भारती प्रयत्नरत है और अपने प्रयत्नों में उसे सफलता भी मिल रही है।

विद्या भारती का शैक्षिक विचार क्या है?

विद्या भारती की मान्यता है कि केवल किताबी ज्ञान जानकारी बढ़ा सकता है किन्तु जीवन निर्माण नहीं कर सकता। इसी प्रकार पर्सनालिटी विकास से आकर्षक व्यक्तित्व बनाया जा सकता है, परन्तु व्यक्तित्व की मूलभूत सम्भावनाओं का विकास नहीं हो सकता। हमारा तैत्तिरीय उपनिषद् कहता है कि व्यक्तित्व पंच कोशात्मक है। ये पंच कोश हैं– अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आनन्दमय कोश। इन पांचों कोशों का विकास करने से अर्थात् शरीर, प्राण, मन, बुद्धि तथा चित्त जब विकसित होते हैं, तभी सर्वांगीण विकास हुआ माना जाता है। केवल इतना ही नहीं तो जब तक विकसित व्यक्ति का समष्टि के साथ समायोजन नहीं होता, अर्थात् मेरा जीवन केवल मेरे लिए नहीं है, वह परिवार, समाज, देश, एवं विश्व के लिए भी है, जब तक इस बात का भान नहीं होता तब तक व्यक्ति मैं और मेरा परिवार तक ही सीमित रहता है। इसी प्रकार व्यक्ति का सृष्टि के साथ समायोजन करते हुए जब उसे परमेष्ठी की ओर अग्रसर किया जाता है, तभी वह 'सा विद्या या विमुक्तये' इस उक्ति को सार्थक करने की योग्यता अर्जित करता है।

विद्यार्थी को शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण कर अधिक अंक लाने के लिए नहीं दी जाती, वह तो जीवन की चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते हुए कुलदीपक बनाने के लिए, समाजसेवी बनाने के लिए, देशभक्त निर्माण करने के लिए तथा सम्पूर्ण मानवता के लिए जीवन खपाने हेतु दी जाती है। ऐसा जीवन केवल पुस्तकें पढ़ने से नहीं बनता अपितु क्रिया, अनुभव, विचार, विवेक तथा दायित्व बोध आधारित शिक्षा देने से बनता है। यही भारतीय शिक्षा है, इसी शिक्षा से योग्य एवं निष्ठावान नागरिक निर्माण होते हैं, यह विद्या भारती का अनुभूत मत है। भारतीय शिक्षा से ही हमारा देश पुनः एक बार जग सिरमौर बनेगा।

विद्या भारती के विविध उपक्रम कौन-कौन से हैं?

विद्या भारती के आयाम: भारतीय शिक्षा के माध्यम से भारत को पुनः जग सिरमौर बनाने में रत विद्या भारती ने अनेक उपक्रम खड़े किए हैं। विद्या भारती के चार आयाम हैं– देश की विद्वत् शक्ति को इस ज्ञान यज्ञ में आहुति देने के लिए विद्वत परिषद् है। शिक्षा में क्रिया शोध कर उसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए शोध विभाग है। भारतीय संस्कृति मय जीवन बनाने हेतु संस्कृति बोध परियोजना है और अपने पूर्व छात्रों में दिए गए संस्कार अमिट रहें, इसके लिए पूर्व छात्र संगठन है। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि विद्या भारती के पूर्व छात्र संगठन ने अपने पोर्टल में पांच लाख से अधिक पूर्व छात्रों को जोड़ा है, जो विश्व कीर्तिमान बना है।

आधारभूत विषय: विद्या भारती यह मानती है कि व्यक्ति निर्माण में आधारभूत विषयों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ये विषय हैं– शारीरिक, योग, संगीत, संस्कृत, नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा। शारीरिक व योग शिक्षा से शरीर व प्राण का विकास होता है। संगीत शिक्षा मन को साधती है। संस्कृत शिक्षा उच्चारण एवं बुद्धि विकास करती है, वहीं नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा हमारे धर्म और संस्कृति से जोड़कर उसके चित्त को निर्मल करती है। इस प्रकार इन पांचों आधारभूत विषयों की शिक्षा विद्या भारती का वैशिष्ट्य है।

गुणात्मक विकास के उपक्रम: विद्या भारती ने शिशुओं के विकास के लिए भारतीय पद्धति 'शिशु वाटिका' विकसित की है। बाल आयु के विद्यार्थियों के लिए क्रिया व अनुभव आधारित प्रारम्भिक शिक्षा के द्वारा उनमें गुण विकसित किए जाते हैं। 'सबके लिए खेलकूद' विद्या भारती का प्रमुख उपक्रम है। भारत सरकार ने एस.जी.एफ. आई. में विद्या भारती को एक प्रान्त माना है। इसलिए विद्या भारती के खिलाड़ी भैया–बहिन विद्यालय से जिला स्तर पर, प्रान्त स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर खेलते हुए विजयी होते हैं और एस.जी.एफ.आई. में भाग लेते हैं। विद्यालय से लेकर एस.जी. एफ.आई में प्रतिवर्ष खेलने वाले खिलाड़ियों की संख्या लगभग 3.5 लाख है।

विद्या भारती के विशेष विषय: बालिका शिक्षा, ग्रामीण एवं

जनजाति की शिक्षा, विज्ञान एवं वैदिक गणित की शिक्षा, आचार्य प्रशिक्षण तथा कौशल विकास ये ऐसे विषय हैं, जो भैया–बहिनों में वैज्ञानिक सोच का निर्माण करते हुए उनके कौशलों का विकास करते हैं। साथ ही साथ शिक्षा से वंचित रह जाने वाले बालक–बालिकाओं में शिक्षा व संस्कार की अलख जगाने के लिए विद्या भारती सेवा बस्तियों में संस्कार केन्द्र भी चलाती है। देश भर में ऐसे हजारों केन्द्र हैं।

विद्या भारती के कार्य की संख्यात्मक स्थिति क्या है?

विद्या भारती यह संगठन का संक्षिप्त नाम है। इसका पूरा नाम– विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान है। इस संस्थान ने अपने नाम को सार्थक किया है। सभी दृष्टि से विद्या भारती एक अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान है। उत्तर में लेह से लेकर दक्षिण के रामेश्वरम तक तथा पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा से लगे मुनाबाव से लेकर पूर्वोत्तर में हाफलांग तक विद्या भारती के विद्या मंदिर हैं। बड़े–बड़े महानगरों की समृद्ध कालोनियों से लेकर गिरिकन्दराओं में बसी छोटी–छोटी बस्तियों तक विद्या भारती के शिक्षा केन्द्र राष्ट्र निर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य में लगे हुए हैं।

विद्या भारती ने संगठनात्मक दृष्टि से पूरे देश को ग्यारह क्षेत्रों में बांटा हुआ है। प्रत्येक क्षेत्र में एक क्षेत्रीय समिति है, जिसके निर्देशन में प्रान्तीय समितियां अपने–अपने प्रान्त के कार्यों की देखभाल करतीं हैं। इन प्रान्तीय समितियों के अन्तर्गत जिला समिति एवं विद्यालय समिति प्रत्यक्ष कार्य करती हैं।

ये ग्यारह क्षेत्र इस प्रकार हैं

1. विद्या भारती उत्तर क्षेत्र – उत्तर क्षेत्र में जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा व दिल्ली आते हैं। इन प्रान्तों में कुल आठ समितियां हैं। क्षेत्र में कुल 513 विद्या मंदिर तथा 658 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चलते हैं। क्षेत्र में कुल छात्र संख्या 1,41,254 है।
2. विद्या भारती पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र – पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ब्रज, मेरठ व उत्तराखंड प्रदेश हैं। कुल 11 समितियां

कार्यरत हैं। क्षेत्र में 1314 विद्या मंदिर तथा 460 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र हैं। कुल छात्र संख्या 1,00,545 है।

3. विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र – इस क्षेत्र में काशी, अवध, गोरक्ष एवं कानपुर प्रदेश हैं। क्षेत्र में 10 समितियां कार्यरत हैं। कुल 1101 विद्या मंदिर तथा 946 अनौपचारिक केन्द्र चलते हैं। क्षेत्र में कुल छात्र संख्या 3,77,357 है।

4. विद्या भारती उत्तर पूर्व क्षेत्र – उत्तर पूर्व क्षेत्र में उत्तर बिहार, दक्षिण बिहार तथा झारखंड प्रदेश आते हैं। इसमें तीन समितियां कार्यरत हैं। क्षेत्र में 695 विद्या मंदिर और 2803 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं। कुल छात्र संख्या 2,37,731 है।

5. विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र – पूर्वोत्तर क्षेत्र में असम, अरुणाचल, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा तथा मेघालय प्रदेश हैं। इनमें सात समितियां कार्यरत हैं। क्षेत्र में कुल 667 विद्या मंदिर तथा 704 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र हैं, जिनकी छात्र संख्या 1,83,430 है।

6. विद्या भारती पूर्व क्षेत्र – इस क्षेत्र में ओडिसा, उत्तर बंग तथा दक्षिण बंग सम्मिलित हैं। क्षेत्र में कुल पांच समितियां कार्य कर रहीं हैं। इनमें 1384 विद्या मंदिर एवं 309 अनौपचारिक केन्द्र हैं और छात्र संख्या 5,11,985 है।

7. विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र – दक्षिण मध्य क्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना व कर्नाटक प्रदेश हैं। तीन प्रादेशिक समितियां कार्यरत हैं जिनमें 789 विद्या मंदिर तथा 361 अनौपचारिक केन्द्र चल रहे हैं। कुल छात्र संख्या 1,68,197 है।

8. विद्या भारती दक्षिण क्षेत्र – इस क्षेत्र में तमिलनाडु व केरल प्रान्त आते हैं। तीन प्रान्तीय समितियां कार्यरत हैं। कुल 592 विद्या मंदिर व 197 अनौपचारिक केन्द्र चल रहे हैं। क्षेत्र में कुल छात्र संख्या 1,49,430 है।

9. विद्या भारती पश्चिम क्षेत्र – इसमें गुजरात, महाराष्ट्र एवं गोवा को सम्मिलित किया गया है। कुल छः समितियां कार्य कर रही हैं। इनमें 626 विद्या मंदिर चल रहे हैं, जिनकी छात्र संख्या 1,52,207 है।

10. विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र – राजस्थान में विद्या भारती के तीन प्रदेश हैं, जयपुर, जोधपुर व चित्तौड़ और तीन ही प्रादेशिक समितियां कार्यरत हैं। क्षेत्र में 1012 विद्या मंदिर तथा 1430 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चलते हैं। कुल छात्र संख्या 2,86,022 है।

11. विद्या भारती मध्य क्षेत्र – मध्य क्षेत्र में मध्य भारत, मालवा, महाकौशल और छत्तीसगढ़ हैं, जिनमें आठ समितियां कार्यरत हैं। क्षेत्र में 4000 विद्या मंदिर तथा 11,353 अनौपचारिक केन्द्र चल रहे हैं। कुल छात्र संख्या 8,39,698 है।

ये सभी ग्यारह समितियां केन्द्रीय समिति के मार्गदर्शन में कार्य करतीं हैं। केन्द्रीय समिति का प्रधान कार्यालय देश की राजधानी दिल्ली में है।

सम्पूर्ण देश में विद्या भारती के कार्य की स्थिति

- देश में कुल जिले 711 इनमें कार्यमुक्त जिले 632 हैं।
- कुल औपचारिक विद्यालय 12,830। कुल अनौपचारिक केन्द्र 11,353।
- कुल शैक्षिक इकाइयां 24,153। देशभर में अध्ययनरत छात्रों की संख्या 34 लाख, 47 हजार, 856।

उपर्युक्त सांख्यिकी के आधार पर कहा जा सकता है कि गैर सरकारी स्तर पर विद्या भारती देश का सबसे बड़ा शिक्षा संस्थान है। विद्या भारती अ सरकारी होते हुए भी सर्वाधिक असरकारी शिक्षा संस्थान भी है।

विद्या भारती का शिक्षा जगत को योगदान क्या है?

स्वाधीनता पूर्व से संपूर्ण देश में राष्ट्रीय शिक्षा स्थापना के जो प्रयास चल रहे थे, विद्या भारती ने उस ज्योति को बुझने नहीं दिया। देश में दी जा रही शिक्षा अभारतीय है, हमारे देश को भारतीय शिक्षा चाहिए। स्व की शिक्षा और स्व के तंत्र से ही देश समृद्ध व सुसंस्कृत बनेगा। यह विचार देशवासियों के मानस में बिठाकर उन्हें पश्चिम का अंधानुकरण न करने तथा अपनी आत्म विस्मृति को हटाते हुए स्वाभिमान जगाने की प्रेरणा देने का महती कार्य किया है।

इसी प्रकार शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं, मातृभाषा होना चाहिए, इसकी चर्चा देश भर में चलाते हुए मातृभाषाओं के महत्त्व को बढ़ाया है। देश में समय–समय पर बनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा को राष्ट्र की जड़ों से जोड़ने की संस्तुतियां देकर भारत सरकार को शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन के लिए दिशा प्रदान की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्या भारती की अनेक संस्तुतियों को स्थान मिला है।

इस प्रकार विद्या भारती देश में भारतीय शिक्षा की पुनर्प्रतिष्ठा करने के कार्य में अग्रसर है। विद्या भारती की मान्यता है कि भारतीय शिक्षा की पुनर्प्रतिष्ठा से भारत आत्मनिर्भर तो होगा ही अपनी ज्ञान विरासत के बल पर पुनः एक बार 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' की भूमिका निभाते हुए जग सिरमौर बनेगा। विद्या भारती, राष्ट्र के इस ज्ञान यज्ञ में आप भी आहुति दें, यह अपेक्षा रखती है।

वासुदेव प्रजापति
सह सचिव
विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र

लॉकडाउन में संकटमोचक बने सरस्वती विद्यालय और संस्कार केंद्र

पूर्वी उत्तर प्रदेश। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आनुषंगिक संस्था विद्या भारती सरस्वती शिशु मंदिरों, सरस्वती विद्यालयों, संस्कार केंद्रों आदि का संचालन करती है, लेकिन संकट के समय मानव सेवा में भी अग्रणी भूमिका निभाती है। लॉकडाउन के समय विद्या भारती जरूरतमंदों को हरसंभव सहायता पहुंचाकर संकटमोचक के रूप में सामने आई। विद्या भारती ने विद्यालय परिवार, अपने कार्यकर्ताओं और पूर्व छात्रों आदि के सहयोग से खाद्य सामग्री, मास्क और सेनेटाइजर आदि का बड़े पैमाने पर वितरण किया।

विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के संगठन मंत्री हेमचन्द्र जी ने बताया कि लॉकडाउन लागू होने के कुछ ही दिनों के भीतर जब रेहड़ी, फड़ी लगाकर अपनी रोजी–रोटी चलाने वाले लोगों के सामने भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई तो विद्या भारती ने कुछ और संस्थाओं की मदद से विभिन्न स्थानों पर ऐसे लोगों को भोजन के पैकेट मुहैया कराए। निर्बल वर्ग के सैकड़ों लोगों को राशन और उनके पशुओं के लिए पशु आहार का वितरण किया। परमार्थ समाजसेवी संस्थान और हिन्दुस्तान यूनीलीवर के सौजन्य से मिले राशन किटों का वितरण विद्या भारती ने व्यापक स्तर पर किया। राशन वितरण के कार्य में सामाजिक संस्था यूनाइट फाउंडेशन ने सहयोग किया। मई मध्य तक विद्या भारती ने लगभग 1 हजार राशन किटों का वितरण कराया था। 239 स्थानों पर 34,473 लोगों को मास्क का वितरण, झुग्गी बस्तियों और जरूरतमंदों के बीच 193 स्थानों पर 13,500 लोगों को सेनेटाइजर का वितरण, 120 स्थानों पर 1,995 पशुपालकों को पशु आहार का वितरण किया गया। 2,399 स्थानों पर 41,241 लोगों को कोरोना महामारी के प्रति जागरूक किया गया।

राशन किट के लिए किया जरूरतमंदों का चयन संस्कार केंद्रों की ली मदद

राशन किट के वितरण के लिए पात्र व्यक्तियों और वितरण स्थानों का चयन किया गया था। जरूरतमंदों का चयन करने में संस्कार केंद्रों की प्रमुख भूमिका रही। संस्कार केन्द्र निर्बल वर्ग की बस्तियों में संचालित किए जाते हैं। इन केंद्रों पर आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इन संस्कार केंद्रों के माध्यम से जरूरतमंदों की सूची बनाकर राशन किट का वितरण किया गया। इस कार्य में विद्या भारती के कार्यकर्ताओं के अलावा पूर्व छात्रों की प्रमुख भूमिका रही।

प्रवासी श्रमिकों को घरों तक पहुंचाने के लिए उपलब्ध कराईं विद्यालय की बसें

कोरोना महामारी में जरूरतमंदों को मास्क, सेनेटाइजर आदि उपयोगी वस्तुओं का भी वितरण किया गया और इस महामारी के प्रति जागरूकता अभियान चलाया गया। व्हाट्सएप आदि माध्यमों से लोगों को योग आदि की मदद से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और घर में रहने के लिए प्रेरित किया गया। अपने विद्यालय में पढने वाले बच्चों के अभिभावकों को भी सोशल मीडिया के माध्यम से जागरुक किया गया। विभिन्न महानगरों से अपने घरों को लौट रहे प्रवासी मजदूरों के लिए रेलवे व बस स्टेशनों पर विद्या भारती की ओर से न केवल भोजन की व्यवस्था की गई बल्कि अपने विद्यालयों की बसों से उन्हें उनके गांव तक पहुंचाने की भी व्यवस्था की गई।

क्वारंटाइन सेंटर के लिए दिए 125 विद्यालय: विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र शर्मा ने बताया कि राशन, भोजन, मास्क, सेनेटाइजर, पशु आहार के वितरण में विद्या भारती ने अहम भूमिका निभाई। पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के 125 विद्यालयों को क्वारंटाइन सेंटर बनाने के लिए प्रशासन को दिया गया। विद्या भारती ने अपने विद्यालय भवनों को क्वारंटाइन सेंटर बनाने का प्रस्ताव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भेजा था।

कोरोना वारियर्स को किया गया सम्मानित: लॉकडाउन में अपने दायित्वों का निर्वहन करने वाले और परेशान लोगों की सेवा और मदद करने वाले कोरोना वॉरियर्स डॉक्टर, नर्स, पुलिसकर्मियों को विद्या भारती की ओर से सम्मानित भी किया गया।

दत्तोपंत ठेंगड़ी अंत्योदय सेवा केन्द्र में की गई ठहरने की व्यवस्था

विद्या भारती ने यूनाइट फाउंडेशन, वैदिक सेवा न्यास की ओर से केजीएमयू के वीसी को लखनऊ के निरालानगर में प्रशासनिक परिसर स्थित माधव सभागार को कोरोना संदिग्धों को ठहराने के लिए आइसोलेशन सेंटर बनाने का प्रस्ताव दिया था। केजीएमयू के वीसी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और साथ ही कोरोना योद्धाओं को ठहराने के लिए पावर ग्रिड विश्राम सदन को क्वारंटाइन सेंटर बनाने का प्रस्ताव दिया। वीसी के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर इन स्वयंसेवी संगठनों ने एक अप्रैल से यहां दत्तोपंत ठेंगड़ी अंत्योदय क्वारंटाइन सेंटर और सेवा केन्द्र शुरू कर दिया था। प्रतिदिन लगभग 130 लोग भोजन, नाश्ता ग्रहण करते रहे जबकि लगभग 50 लोग ठहरे भी। किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के शताब्दी हॉस्पिटल के नजदीक पावर ग्रिड विश्राम सदन के संचालन में भी विद्या भारती ने प्रमुख सहयोगी की भूमिका निभाई।

पीएम राहत कोष में साढ़े 46 लाख और सीएम राहत कोष में दिए 17.75 लाख रुपए

विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र शर्मा ने बताया कि देश के हर हिस्से में विद्या भारती के आचार्य, स्वयंसेवक और सहयोगी संगठन पूरे समर्पण के साथ योगदान कर रहे हैं। हर स्तर पर जनसेवा की जा रही है। इनमें विद्या भारती के गोरक्ष प्रान्त, काशी प्रान्त, अवध प्रान्त और कानपुर प्रान्त की शिशु शिक्षा समितियां, जन शिक्षा समितियां, भारतीय शिक्षा समितियां शामिल हैं। इन समितियों ने 41 लाख 91 हजार 534 रुपये प्रधानमंत्री केयर फंड में और लगभग 16 लाख 15 हजार 500 रुपये मुख्यमंत्री राहत कोष में दान किए हैं। पूर्व छात्रों के सहयोग से प्रधानमंत्री केयर फंड में 4 लाख 61 हजार 101 रुपये और मुख्यमंत्री राहत कोष में 1लाख 60 हजार 900 रुपये जमा कराए गए।

गोरक्ष और काशी प्रान्त ने पूर्व छात्रों के सहयोग से किया राहत सामग्री का वितरण

पूर्व छात्रों के सहयोग से गोरक्ष प्रान्त के 25 विद्यालयों की शिशु शिक्षा समिति ने 348 कार्यकर्ताओं के माध्यम से 69 स्थानों पर 2075 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 6450 जरूरतमंदों को भोजन कराया। इसके अलावा 2250 मास्क, 2350 सैनेटाइजर, पशु आहार का वितरण कराया। 92 गांवों में कोरोना के प्रति जनजागरण अभियान चलाया गया। गोरक्ष प्रान्त के 49 विद्यालयों की शिशु शिक्षा समिति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 2314 कार्यकर्ताओं के माध्यम से 56 स्थानों पर 7975 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 1351 जरूरतमंदों

को भोजन कराया। इसके अलावा 4560 मास्क, 725 सैनेटाइजर, पशु आहार का वितरण कराया और 81 गांवों में जनजागरण किया। काशी प्रान्त के चार विद्यालयों की भारतीय शिक्षा समिति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 23 कार्यकताओं के जरिए 10 स्थानों पर 4700 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 3050 जरूरतमंदों को भोजन कराया। इसके साथ ही 2500 मास्क, 500 सैनेटाइजर का वितरण कराया और तीन गांवों में जनजागरण किया। काशी प्रान्त के 13 विद्यालयों की जन शिक्षा समिति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 125 कार्यकर्ताओं के माध्यम से 26 स्थानों पर 375 पैकेट अनाज का वितरण कराया, 170 जरूरतमंदों को भोजन कराया, 210 मास्क, 160 सैनेटाइजर का वितरण किया और 31 गांवों में जनजागरण किया।

अवध और कानपुर प्रान्त में भी पूर्व छात्रों के सहयोग से उपलब्ध कराई जरूरत की सामग्री

अवध प्रान्त के 57 विद्यालयों की भारतीय शिक्षा समिति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 726 कार्यकर्ताओं के माध्यम से 329 स्थानों पर 39,288 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 35,215 जरूरतमंदों को भोजन कराया। 45,315 मास्क, 6460 सैनेटाइजर और 6,225 लोगों को पशु आहार का वितरण किया और 910 गांवों में जनजागरण किया। अवध प्रान्त के 35 विद्यालयों की जन शिक्षा समति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 650 कार्यकताओं के जरिए 60 स्थानों पर 1950 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 3760 जरूरतमंदों को भोजन कराया। 4500 मास्क, 3860 सैनेटाइजर, 1100 लोगों को पशु आहार का वितरण कराया और 800 गांवों में जनजागरण किया। कानपुर प्रान्त के 13 विद्यालयों की भारतीय शिक्षा समति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 296 कार्यकताओं के जरिए 61 स्थानों पर 538 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 3638 जरूरतमंदों को भोजन कराया। 1825 मास्क, 574 सैनेटाइजर, 834 लोगों को पशु आहार का वितरण कराया और 13 गांवों में जनजागरण कराया। कानपुर प्रान्त के ही 34 विद्यालयों की जन शिक्षा समति ने पूर्व छात्रों के सहयोग से 337 कार्यकताओं के जरिए 70 स्थानों पर 1806 पैकेट अनाज का वितरण कराया और 6350 जरूरतमंदों को भोजन करवाया। 1928 मास्क, 1300 सैनेटाइजर, 815 स्थानों पर पशु आहार का वितरण कराया और 217 गांवों में जनजागरण किया।

प्रत्येक राशन किट में थी ये सामग्री

एक राशन किट में पांच किलो आटा, पांच किलो चावल, एक किलो चना दाल, एक लीटर सरसों का तेल, एक किलो चीनी, 200 ग्राम चाय पत्ती, 100 ग्राम धनिया, 100 ग्राम हल्दी, 100 ग्राम मिर्च पाउडर, पांच रिन साबुन, चार लाइफबॉय साबुन रखे गए थे। राशन किट में रखे गए सामान की कीमत 939 रुपये थी।

तन, मन, धन से सेवा कार्यों में संलग्न रहा विद्या भारती परिवार

लॉकडाउन के दौरान विद्या भारती गुजरात प्रान्त के कार्यकर्ताओं, ट्रस्टियों, आचार्यों, सहायकों आदि ने घरदृघर जाकर लोगों को जागरुक करने के साथ भोजन की व्यवस्था, लाकडाउन में फंसे लोगों को उनके गांवों तक पहुंचाने की व्यवस्था, पुलिस जवानों के लिए भोजन और निवास के लिए विद्यालयों में व्यवस्था की। विद्या भारती 'कोई लाभ नहीं, कोई हानि नहीं' के आधार पर विद्यालय चलाता है। समाज के सारे वर्ग के लिए अनुकूल हो उतना ही शुल्क लिया जाता है और सेवाबस्ती के बच्चों को निशुल्क शिक्षण प्रदान किया जाता है। कोरोना काल में 55 विद्यालयों द्वारा मास्क वितरण किया गया और 76 विद्यालयों ने राशन किट वितरित कीं। इसके अलावा सेनेटाइजर और सब्जी किट का वितरण किया गया। 70 विद्यालयों ने औषधीय काढ़े और होम्योपैथिक दवाओं का वितरण किया। विद्यालयों के आचार्यों, ट्रस्टियों ने 12 लाख रुपये एकत्र करके पी.एम. केयर फंड और सेवाभारती के खाते में जमा कराए। बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें, इसके लिए आचार्यों ने ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था की। जहां नेटवर्क और मोबाइल फोन की समस्या रही वहां पर आचार्यों ने घर–घर जाकर विद्यार्थियों को पढ़ाने की व्यवस्था की। विद्या भारती परिवार तन, मन और धन से सेवा कार्यों में संलग्न रहा।

लाकडाउन में किया 4,757 बच्चों का सुवर्णप्राशन संस्कार

विद्या भारती, गुजरात प्रदेश ने आचार्यों, व्यवस्थापकों तथा सेविका बहनों आदि के सहयोग से 4,757 बच्चों का सुवर्णप्राशन संस्कार किया। लाकडाउन के समय में कार्यकर्ताओं ने पुलिस स्टेशन से परमिशन लेकर यह कार्यक्रम किया था। पुलिस बंधुओं, आरोग्य अधिकारी, होमगार्ड जवानों, पत्रकारों सब लोगों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। पुलिस बंधुओं द्वारा मास्क, ग्लव्ज, सेनेटाइजर की व्यवस्था की गई थी। वहीं, गैर–हिन्दी भाषी अभिभावकों, आचार्यों, प्रधानचार्यों के लिए सुवर्णप्राशन पिलाने की सही पद्धति के वीडियो और विषय समझने के लिए वीडियो बनाए गए। हर्ष की बात यह रही कि सबको निशुल्क प्राशन मिला और इसके आजीवन डोनर भी मिल गये हैं।

शिक्षा के साथ सामाजिक दायित्व निभाने में भी अग्रणी रहा विद्या भारती

विद्या भारती हरियाणा शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संगठन है जो राज्य में विभिन्न स्तर के 75 विद्यालयों का संचालन कर रहा है। कोरोना महामारी में लॉकडाउन के कारण विद्यालय आरंभ नहीं हो पाए थे, लेकिन विद्या भारती के आचार्य, प्रबंध समितियां, पूर्व छात्र समाज सेवा में अहम भूमिका निभाते रहे हैं।

हरियाणा में विद्या भारती की दो समितियां, हिंदू शिक्षा समिति एवं ग्रामीण शिक्षा विकास समिति कार्य कर रही हैं। इन दोनों समितियां के अंतर्गत काम करने वाले विद्यालयों के आचार्य, प्रबंध समितियां एवं पूर्व छात्रों के सहयोग से 11 हजार 593 पैकेट अनाज वितरित किया गया जिससे 11 हजार 111 लोगों को सहयोग मिला। इसके अलावा 1 लाख 7 हजार 635 भोजन के पैकेट वितरित किए गए। कोरोना वायरस से बचाव के लिए 1952 सैनिटाइजर, 8 हजार 179 मास्क का वितरण किया गया। विद्या भारती की ओर से 784 जगहों पर पशुओं के लिए आहार उपलब्ध कराया गया और अभियान चलाकर 85 गांवों के लोगों को कोरोना वायरस से बचाव के प्रति जागरूक किया गया। विद्या भारती के आचार्यों व पूर्व छात्रों ने 31 लाख 94 हजार 200 रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष एवं 4 लाख 41 हजार 100 रुपये मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा कराकर समाज के लिए मिसाल प्रस्तुत की है।

इसके अतिरिक्त श्रीमदभगवद गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़ में प्रवासी मजदूरों के लिए शेल्टर होम का संचालन किया गया। विद्यालय के प्राचार्य सुधीर जी ने बताया कि इस शेल्टर होम में लगभग 7 परिवारों के 35 से 40 सदस्यों को संरक्षण दिया गया था। इन सभी को समाज के सहयोग से तीनों समय का भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं प्रदान की गईं। नगर के सम्पन्न लोगों के सहयोग से 12 प्रभावित परिवारों को महीने भर का राशन उपलब्ध कराया गया।

विद्या भारती से संबद्ध विद्यालयों के आचार्य एवं दीदियों ने अपने–अपने घरों में कपड़े के मास्क बनाकर जरूरतमंद लोगों तक पंहुचाने का कार्य किया। देश–विदेश से पूर्व छात्रों ने जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए संसाधन जुटाने को दिल खोलकर आर्थिक सहायता की। रोहतक के पूर्व छात्रों ने प्रशासन द्वारा प्रवासी मजदूरों के लिए संचालित काल सेंटर में स्वयंसेवकों के रूप में सहयोग दिया।

- *कोरोना काल में राशन के साथ दिए भोजन के पैकेट*
- *जागरुक करने के साथ सैनिटाइजर, मास्क किए वितरित*
- *प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री राहत कोष में भी किया दान*

फरीदाबाद, गुड़गांव, करनाल आदि में कार्यरत पूर्व छात्रों ने भी अधिक से अधिक लोगों तक सहायता पहुंचाने का हर संभव प्रयास किया। प्रचार विभाग ने सोशल मीडिया आदि के माध्यम से कोरोना वायरस से बचाव के लिए जागरुकता अभियान चलाया। विद्यार्थी भी घरों में रहकर अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को कोरोना से बचाव के लिए जागरूक करते रहे। गोपाल विद्या मंदिर जींद के कला अध्यापक अपने कार्टूनों के माध्यम से प्रतिदिन लोगों को इस महामारी से आगाह करने का काम करते रहे।

16 जिलों में विद्यालयों ने चलाया सेवा अभियान

उपलब्ध कराई जरूरत की सामग्री

मेरठ प्रान्त। विद्या भारती मेरठ प्रान्त के कार्यकर्ताओं ने "सेवा ही परमोधर्मः" उक्ति को चरितार्थ करते हुए सेवा कार्यों में योगदान दिया। विद्या भारती की योजना के आधार पर सभी 16 जिलों में विद्यालयों की ओर से सेवा कार्य संचालित किए गए। विद्यालयों के आचार्यों, भैया–बहिन ने घरों पर मास्क का निर्माण कर वितरण किया। 54 विद्यालयों ने लगभग 16 हजार मास्क वितरित किए। सेवा बस्तियों में साबुन वितरित किए गए तथा 30 विद्यालयों ने जरूरतमंदों को सेनेटाइजर का वितरण किया। 40 विद्यालयों ने लगभग 3 हजार राशन की किट उपलब्ध करायीं और प्रवासी मजदूरों के लिए मार्ग में भोजन पैकेट की व्यवस्था की गई। तीन विद्यालयों में प्रवासी मजदूरों के लिए प्रशासन की ओर से क्वारंटाइन सेंटर बनाए गए। इन क्वारंटाइन सेंटर पर विद्यालय के आचार्यों ने समाज के सहयोग से दैनिक वस्तुओं की व्यवस्था की। इम्युनिटी बढाने की दृष्टि से काढ़ा बनाकर वितरित किया गया और काढा की लगभग 1700 बोतल बांटी गयीं। इसके अतिरिक्त 5 स्थानों पर रसोई चलाई गई, जहां भोजन बनाकर अपने घरों को वापस लौट रहे प्रवासियों को भोजन कराया गया। आवारा पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था भी की गई।

पूर्व छात्रों ने किया 5 लाख रुपये का सहयोग

पूर्व छात्रों ने भी स्थान–स्थान पर सेवा कार्य किए। मास्क, सैनिटाइजर, राशन किट, भोजन पैकेट वितरित करने के साथ कोरोना से बचाव के लिए जनजागरण अभियान भी चलाया। अभावग्रस्त विद्यालयों के आचार्यों के वेतन के लिए लगभग 5 लाख रुपये का सहयोग किया।

संस्कार केन्द्रों के माध्यम से भी की सेवा

संस्कार केन्द्रों के माध्मय से भी किए सेवा कार्य। सरस्वती संस्कार केन्द्रों के माध्यम से भी सेवा कार्य किए गए। 49 स्थानों पर लगभग 250 कार्यकर्ताओं के सहयोग से बस्ती के लोगों को मास्क और सैनिटाइजर वितरित किए गए। सहारनपुर के नंगला मार्ग पर ग्राम मसूरी महराल में 8 दिन तक समाज के सहयोग से रसोई चलाई गयी, जिसमें 250 लोगों को प्रतिदिन भोजन कराया गया। इससे लगभग 2 हजार लोग लाभान्वित हुए।

श्रीमती मीरा अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज अमरपुर काशी पिलखुआ, हापुड़ के सहयोग से राहत सामग्री वितरित की गई।

विद्या मंदिर साहिबाबाद (गाजियाबाद) की ओर से जरूरतमंदों को राशन सामग्री का वितरण किया गया।

देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें

लॉकडाउन में 56 दिनों तक गीता रसोई बनी बेसहारों के लिए सहारा

पूर्व छात्रों की पहल से हजारों लोगों को समय पर मिल सका भोजन

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें, यह संस्कार विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थियों को शिशुकाल से दिए जाने की परम्परा रही है। जिस समय पूरा देश वैश्विक महामारी कोरोना से जूझ रहा था और कर्फ्यू जैसी स्थिति का सामना कर रहा था, उस समय काम–धंधा बंद होने से समाज के समक्ष विशेषकर गरीब लोगों और रोज कमाने–खाने वाले वर्ग के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया था। ऐसे कठिन समय में ही विशेष रूप से संस्कारों की पहचान होती है। इन्हीं संस्कारों का परिचय देते हुए बेसहारा लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए विद्या भारती के अंतर्गत श्रीमद्भागवत गीता वरि० मा० विद्यालय, कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों ने 23 मार्च, 2020 को गीता रसोई का प्रारम्भ किया। इन पूर्व छात्रों ने गीता रसोई के माध्यम से जरूरतमंद, बेरोजगार हुए दिहाड़ीदार मजदूरों, रिक्शा चालकों आदि के लिए राशन और भोजन की व्यवस्था की।

समाज सेवा की इस शृंखला के तहत 23 मार्च से पूर्व छात्रों ने बेरोजगार मजदूरों के लिए कुरुक्षेत्र के सन्नी ढाबा से भोजन का प्रबंध किया और भोजन उपलब्ध कराना आरम्भ किया। इस तरह प्रतिदिन एक हजार से 12 सौ लोगों को भोजन के पैकेट और 40–50 परिवारों को 15 किलो सूखा राशन प्रति परिवार देने की व्यवस्था की गई। यह सिलसिला निरंतर चलता रहा और कुल मिलाकर जरूरतमंद परिवारों को 50 हजार भोजन पैकेट और 100 क्विंटल सूखा राशन उपलब्ध कराया गया। पूर्व छात्रों द्वारा प्रारम्भ की गई गीता रसोई के माध्यम से किए जा रहे सेवा कार्यों को समय–समय पर अधिकारियों, समाज के विशिष्ट जनों, संतों एवं सामाजिक संस्थाओं का मार्गदर्शन एवं सान्निध्य प्राप्त होता रहा। गीता रसोई 23 मार्च, 2020 से 17 मई, 2020 तक लॉकडाउन में 56 दिन तक निरंतर चलती रही। विद्यालय प्रबंध समिति, प्रधानाचार्य एवं आचार्य परिवारों ने भी इस कार्य में अपेक्षित सहयोग किया।

नवरात्र पर कन्या पूजन और एक हजार लोगों को कराया भोजन

भक्ति–भाव से नवरात्र पूजन की अपने देश में विशद परम्परा रही है। 1 अप्रैल, 2020 को गीता रसोई के माध्यम से पूरे विधि–विधान के अनुसार नवरात्रि अष्टमी के दिन कन्या पूजन किया गया। समस्त कुरुक्षेत्र वासियों के सहयोग का संकल्पित भाव लेकर, इस पूजा में देसी घी का हलवा तथा सब्जी बनाई गयी और एक हजार लोगों को जिनमें 400 कन्याएं शामिल थीं को भोजन कराया गया। स्वास्थ्य और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हुए नई सामाजिक शुरुआत करते हुए कंजक रूप में सभी कन्याओं को हाथ धोने के लिए साबुन दिया गया।

विश्व कल्याण के लिए किया गीता शांति यज्ञ का आयोजन

भोजन और राशन उपलब्ध कराने के साथ ही गीता रसोई में प्रतिदिन आचार्य नरेश कौशिक और उनके शिष्यों द्वारा समाज और राष्ट्र के लिए मंगल कामना करते हुए श्री हनुमान चालीसा, श्री राम स्तुति, श्री श्याम स्तुति, श्री हनुमान आरती का गायन किया गया। प्रतिदिन भगवान को भोग लगाकर प्रसाद स्वरूप समाज में भोजन का वितरण किया गया। गीता रसोई में श्रीराम नवमी, श्री हनुमान जयंती, श्री परशुराम जयंती, श्री आदि शंकराचार्य जयंती, श्री अंबेडकर जयंती भी मनाई गई। 22 अप्रैल को श्रीमदभगवद गीता वरि० मा० विद्यालय परिसर में परमात्मा से विश्व के कल्याण की प्रार्थना करते हुए गीता विश्व–शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में देश–विदेश के पूर्व छात्रों ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर सहभागिता की।

सहपाठियों के परिवारों के लिए बनाई हेल्पलाइन घर पर उपलब्ध कराई सामग्री

जरूरतमंदों को भोजन और राशन उपलब्ध कराने के साथ ही पूर्व छात्रों ने अपने सहपाठियों के परिवारों का भी ध्यान रखते हुए 'माता–पिता हेल्पलाइन' की शुरुआत की। यह एक अभूतपूर्व और सराहनीय कार्य था। बहुत से छात्र आजीविका के

लिए कुरुक्षेत्र से बाहर कार्य कर रहे हैं, लेकिन उनके माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य कुरुक्षेत्र में रह रहे हैं। ऐसे में संकट के समय जब बसें और रेलगाड़ियों सहित आवागमन के सभी साधन बंद हो गए थे उस समय अपने सहपाठियों के परिवारों के लिए पूर्व छात्रों द्वारा 18 मार्च, 2020 को शुरू की गई हेल्पलाइन बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। इस हेल्पलाइन के माध्यम से पूर्व छात्रों के परिवार आवश्यक दवाइयां और राशन सहित जरूरत की सामग्री अपने घर पर मंगा सकते थे। पूर्व छात्रों द्वारा शुरू की गई ये हेल्पलाइन ऐसे तमाम परिवारों को जरूरी सहायता प्रदान करने और उनकी समस्याओं को कम करने में सहभागी बनी।

जन्मदिन और वैवाहिक वर्षगांठ जैसे समारोहों का ऑनलाइन किया आयोजन

समाज में जन्मदिन और वैवाहिक वर्षगांठ आदि को उत्सव के रूप में मनाया जाता रहा है और इस अवसर पर समाज को किसी न किसी रूप में सहयोग करना हमारी परम्पराओं में सम्मिलित रहा है। इसे दृष्टिगत रखते हुए गीता रसोई में पूर्व छात्रों और उनके परिवारों के सदस्यों का जन्मदिन और वैवाहिक वर्षगांठ आदि को भी मनाना शुरू किया गया। इन आयोजनों में सभी लोग ऑनलाइन तकनीक के माध्यम से घर बैठे ही सम्मिलित हुए और लॉकडाउन के समय घरों में अकेलेपन का अनुभव कर रहे तमाम लोग समाज के साथ जुड़ सके। इस दौरान अमेरिका से एक, इंग्लैंड से 4, ऑस्ट्रेलिया से

कोरोना काल में हुआ संस्कारों का अद्भुत परिचय

विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद के अखिल भारतीय संयोजक डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि लॉकडाउन में चुनौतियां पहले दिन से ही आनी शुरू हो गयी थीं। कोरोना के मनोवैज्ञानिक प्रभाव और भय के कारण घर के सदस्य ही बाहर जाने पर सबसे ज्यादा विरोध करते थे। कोरोना का भय इतना ज्यादा था कि पड़ोसी न केवल आशंकित रहते थे कि यह प्रतिदिन बाहर जाता और आता है, बल्कि लगभग 21 दिनों तक पड़ोसियों ने मेरे घरवालों से बात करनी बंद कर दी थी, क्योंकि गीता रसोई और समाज सेवा के कार्यों से मुझे नियमित रूप से बाहर आना–जाना पड़ता था। कोरोना का फैलाव न हो इसलिए सरकार ने दिशा–निर्देश जारी किए गए थे जिसमें बार–बार हाथ धोने और मास्क लगाने जैसी सावधानियां शामिल थीं। गीता रसोई में कार्य कर रहे मेस कर्मियों में भी कोरोना के प्रति जागरूकता जैसे मास्क लगाना, हाथ धोना, सामाजिक दूरी बनाकर कार्य करना आदि का ध्यान रखना भी अपने आप में अनोखा अनुभव रहा।

डा. पंकज शर्मा के इन अनुभवों में स्वाभिमान और सेवा का अत्यंत सुंदर उदाहरण सम्मिलित है। एक साथी जो बेरोजगार हो गया था, प्रतिदिन सुबह आकर गीता रसोई में सारा काम करता था, भोजन वितरण व राशन वितरण में सहयोग करता था। पर न कभी स्वयं खाता था और न ही परिवार के लिए भोजन लेकर जाता था। सेवा और समर्पण की दृष्टि से इस साथी का सहयोग उल्लेखनीय था। लेकिन एक दिन जब हमें उसकी खराब घरेलु परिस्थितियों का पता लगा और हमने उससे पूछा कि आप अपने लिए भोजन क्यों नहीं ले जाते तो उसने कहा कि मुझे भोजन वितरण में लगाया गया था, पर खाने या घर लेकर जाने के लिए नहीं कहा गया था। हम बहुत आश्चर्यचकित थे कि उसके घर में इतनी समस्या है, उसके पास मोटरसाइकिल में तेल के पैसे भी नहीं थे, फिर भी वह साथी कुछ भी नहीं लेकर जाता था। इसके बाद हम सब उसके घर जाकर राशन देकर आये। विद्यालय के संस्कारों का ऐसा अद्भुत परिचय कोरोना काल में हुआ।

2, कुवैत से 1, कनाडा से 3, दिल्ली से 12 और अन्य स्थानों से 6 पूर्व छात्रों आदि ने जन्मदिन अथवा वैवाहिक वर्षगांठ के आयोजन कर गीता रसोई की अनूठी पहल में आर्थिक सहयोग प्रदान किया। गीता रसोई के माध्यम से 5 पूर्व छात्रों ने अपने माता–पिता की पुण्यतिथि पर हवन और पूजा भी कराई।

गीता शिक्षा अभियान: जरूरतमंद बच्चों को प्रदान की शिक्षण सामग्री

लॉकडाउन में आर्थिक गतिविधियों के बंद हो जाने के कारण यह देखने में आया कि बेरोजगार हुए तमाम लोग अपने बच्चों के लिए शिक्षा सामग्री नहीं जुटा पा रहे थे। इस विषय को ध्यान में रखकर पूर्व छात्र परिषद ने 'गीता शिक्षा अभियान' की शुरुआत की और जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षा सामग्री के तहत 5 कॉपी, 10 पेंसिल और 5 पेन का सेट भेंट किया। ये शिक्षण सामग्री 1000 विद्यार्थियों को वितरित की गई। इसके साथ ही इन विद्यार्थियों को विद्या भारती के संस्कार केन्द्रों से भी जोड़ा गया। इन बच्चों को संस्कार मिलें, इस दृष्टि से विद्या भारती और अन्य प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित की गई महापुरुषों की जीवनियां निःशुल्क वितरित की गईं।

गीता आरोग्य अभियान: अस्वस्थ लोगों को मिली नि:शुल्क चिकित्सा सुविधा

कोरोना महामारी में लॉकडाउन के दौरान रोज कमाने और खाने वाले लोगों के लिए पैसों की कमी के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का उपचार कराना बहुत मुश्किल हो गया था। इन लोगों की इस पीड़ा को अनुभव करते हुए 'गीता आरोग्य अभियान' चलाया गया, जिसमें जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा के साथ दवाएं आदि उपलब्ध कराई गईं। इस पुनीत कार्य में सिग्नस अस्पताल कुरुक्षेत्र और पूर्व छात्रों ने विशेष रूप से सहयोग किया।

गीता नक्षत्र वाटिका

आयुष मंत्रालय ने कोरोना महामारी में आयुर्वेद को शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सबसे अच्छा बताया था। आयुष विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के उपकुलपति डॉ. बलदेव धीमान और डॉ. गीता ने विद्यालय में आकर 100 लोगों को रोग प्रतिरोधक दवाइयां प्रदान कीं। इसके साथ ही विद्यालय प्रांगण में औषधीय गुणों वाले पौधे लगाए गए। इस दौरान पूर्व छात्र परिषद की ओर से सभी को तुलसी के पौधे भेंट किये गये।

फ्रंटलाइन वारियर्स का किया सम्मान

कोरोना महामारी और लॉकडाउन के समय समाज का और समाज में सेवा कर रहे लोगों का मनोबल बनाये रखना अत्यंत आवश्यक था। इस दृष्टि से कुरुक्षेत्र के लगभग 400 सफाई कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों, चिकित्सकों, नर्सों और मेस कर्मचारियों आदि को पूर्व छात्रों ने उनके सेवा कार्यों को देखते हुए सम्मानित किया।

करीब से जानी आम लोगों की लोगों की पीड़ा

कोरोना काल में ऐसे ही अनुभव पूर्व छात्र कुलदीप चौपड़ा के रहे। कुलदीप को विद्यालय के मुख्य द्वार के बाहर भोजन वितरण करते हुए एक साधु मिले जिनके एक पैर में काफी सूजन थी। उनसे पूछा तो पता लगा कि एक महीने से पैर में सूजन है, पर इलाज नहीं करा पा रहे हैं। पेट की भूख ने उनके पैर के दर्द को भुला दिया था। पता चलने पर पूर्व छात्रों ने उनके उपचार की व्यवस्था की और 5–6 दिन में उनका पैर बिल्कुल ठीक हो गया। ऐसे ही एक महिला के पति 3 महीने से बिस्तर पर थे। उनके पास इलाज के भी पैसे नहीं थे। पूर्व छात्रों की ओर से उनके उपचार की व्यवस्था करते हुए उनको 2 महीने की दवा दिलाई गई।

अच्छे कार्यों में साथ खड़ा रहता है समाज

अच्छे काम में समाज भी सहयोग करता है। कुछ ऐसा अनुभव रहा पूर्व छात्र और वर्तमान में विद्यालय प्रबन्धन से जुड़े अशोक रोशा जी का। रोशा जी प्रतिदिन गीता रसोई के लिए सब्जी मंडी से सब्जी लेकर आते थे। एक दिन उन्होंने पूरे दिन की सब्जी ली और जैसे ही सब्जी विक्रेता को पता लगा कि सब्जी गीता रसोई में जा रही है तो उसने सब्जी के पैसे नहीं लिए। जब रोशा जी ने बार– बार कहा तो उसने सांकेतिक रूप में धनिया के 5 रुपये ही लिए। प्रभु पर विश्वास और श्रद्धा रखने से न केवल मनोबल बढ़ता है, बल्कि आपदा में अद्भुत ऊर्जा का संचार हमारे तन–मन में होता है। हमारे पुनीत संकल्पों में मानो परमात्मा का प्रत्यक्ष आशीर्वाद मिलता है और कार्य सफलतापूर्वक चलते हैं। रंजन शर्मा ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि गीता रसोई में जब भी यह लगा कि शायद आगे काम कर पाना मुश्किल रहेगा, तभी प्रभु कृपा से किसी ने सहायता कर दी और इस तरह हम लोग 56 दिन तक निरन्तर जरूरतमंद लोगों की सेवा कर सके।

सेवा कार्य करते नहीं हुआ थकान का अनुभव

पूर्व छात्र प्रवीण गुप्ता ने बताया कि प्रतिदिन भोजन वितरण से पहले भगवान की आरती और हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता था, फिर भगवान का भोग लगाया जाता था। शायद इसी कारण समाज में भोजनरूपी प्रसाद वितरित करने में कभी कमी नहीं आई। अजय गोयल ने कहा कि कोरोना महामारी के

कारण सभी के मन में भय था, पर हम सभी सदस्य पूरे मनोयोग से भजन–आरती करते हुए काम करते थे और पूरे दिन कार्य करते हुए भी गीता रसोई में उत्साहित और ऊर्जावान बने रहते थे। विद्या भारती हरियाणा के प्रान्त प्रचार प्रमुख तथा विद्यालय के पूर्व छात्र संजय चौधरी ने कहा कि सभी साथियों ने उत्साहपूर्वक सहयोग दिया और जब भी कोई आवश्यकता पड़ी या समस्या आई, तो किसी न किसी साथी ने उस समस्या का समाधान किया। सभी सदस्यों ने सरकार की गाइडलाइन के अनुसार पूरी सावधानी बरतते हुए गीता रसोई, गीता शिक्षा अभियान तथा गीता आरोग्य अभियान आदि के माध्यम से कोरोना काल में समाज की सेवा की।

सामाजिक सहयोग कर सही अर्थों में सार्थक करेंगे पारिवारिक उत्सव

पूर्व छात्र गिरीश चौधरी ने बताया कि इस बार जन्मदिन पर 1000 लोगों को खाना खिलाना बहुत अच्छा अनुभव रहा। अब सभी ने यह निश्चय किया है कि भविष्य में जन्मदिन और वैवाहिक वर्षगाँठ जैसे पारिवारिक उत्सवों पर किसी न किसी रूप में सामाजिक सहयोग कर उत्सव को सही अर्थों में सार्थक करेंगे। कोरोना काल में गीता रसोई के अनुभवों को साझा करते हुए पूर्व छात्र गौरव गुप्ता ने कहा कि सभी ने मिलकर खाटूश्याम उत्सव, श्री हनुमान जयंती, श्री परशुराम जयंती, कन्या पूजन, शंकराचार्य जयंती तथा अन्य उत्सवों को मनाना शुरु किया जो काफी अलग और अद्भुत अनुभव वाला रहा। व्यवसायी तथा पूर्व छात्र नवीन गोस्वामी ने बताया कि लॉकडाउन में गीता रसोई में आकर भोजन वितरण करके सकारात्मक ऊर्जा मिलती थी। गीता रसोई का यह अनुभव हमेशा याद रहेगा। आनंद बजाज ने बताया कि हर वर्ष हम विवाह की वर्षगांठ घर या होटल पर मनाते थे, पर इस बार गीता रसोई में हमने सभी के साथ हवन किया और गीता रसोई में सहयोग किया। आपदा के समय जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराना अधिक उचित लगा।

चरितार्थ किया नर सेवा नारायण सेवा का मंत्र

भोपाल। कोरोना संकट की घड़ी में विद्या भारती के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं ने अलग–अलग प्रकार से समाजसेवा में सक्रिय सहभागिता की। विद्या भारती के कार्यकर्ता कहीं स्वयं भोजन तैयार कर निर्धन बस्तियों और बेरोजगार हुए परिवारों तक पहुंचाते रहे तो कहीं लाकडाउन की स्थिति के चलते पैदल ही अपने घरों की ओर लौट रहे लोगों के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए भोजन–पानी उपलब्ध कराते रहे। विद्या भारती के कुछ कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों को निःशुल्क मास्क उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया। कार्यकर्ता स्वयं के खर्च पर मास्क तैयार करके ग्रामीणों को निःशुल्क वितरित करते रहे। विद्या भारती जनजाति शिक्षा जिला रायसेन के प्रवासी कार्यकर्ता राम सिंह लोधी ने स्वयं घर पर मास्क तैयार किए और उन्हें ग्राम पिपलिया में गरीब परिवारों को निःशुल्क वितरित किए। विद्या भारती जनजाति क्षेत्र के प्रवासी कार्यकर्ता राजाराम उईके ने भी मास्क तैयार किए और सुदूर वनांचल ग्राम बेरखेड़ी में निःशुल्क वितरित किए।

गुना। कोरोना के कारण लॉकडाउन के दौरान विद्या भारती का सेवा सरोकार अभियान लगातार जारी रहा। सरस्वती शिशु मंदिर महावीरपुरा में 100 असहाय परिवारों को भोजन और राशन के पैकेट वितरित किए गए। लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंदों को विद्या भारती की ओर से लगातार खाद्य सामग्री आदि उपलब्ध कराई जाती रही।

दीन बन्धुओं की सेवा में लगा रहा शिशु मंदिर परिवार

मुरैना। विद्या भारती की संस्थाएं गरीबों की मदद करने में लगी रहीं। सरस्वती शिशु मंदिर की ओर से गरीबों को भोजन सामग्री प्रदान की गई। सरस्वती शिशु मंदिर जरूरतमंदों की सेवा करने में पीछे नहीं रहे और पूर्ण मनोयोग से अभावग्रस्त दीन बन्धुओं की सेवा में तत्पर रहे। विद्यालय की ओर से लगातार भोजन सामग्री, मास्क, वाहन आदि उपलब्ध कराए जाते रहे। जिले में 1560 किलो भोजन सामग्री, 145 मास्क एवं 30 परिवारों के बीच 60 किलो खिचड़ी का वितरण किया गया।

सीधी। सरस्वती शिशु मंदिर सुभाषनगर सीधी की ओर से स्थानीय बस्ती के दो सौ से अधिक लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया। विद्यालय के अध्यक्ष रामपाल तिवारी, पूर्व व्यवस्थापक लालमणि सिंह, सह व्यवस्थापक श्रद्धा सिंह सेंगर, प्राचार्य सुशील कुमार सिंह, वरिष्ठ आचार्य इंद्रमणि प्रसाद

द्विवेदी, प्रसन्न कुमार गुप्ता, अशोक वर्मा, संस्कार केंद्र की शिक्षिका उर्वशी मांझी आदि के सहयोग से संस्कार केंद्र में ही भोजन तैयार कर वितरित किया गया।

श्रमिकों को प्रदान की खाद्य सामग्री

राजगीर। पूज्य तपस्वी जगजीवन जी महाराज सरस्वती विद्या मंदिर की ओर से पुलिस एकेडमी में 101 प्रवासी मजदूरों को 10 दिनों तक खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। विद्यालय के प्राचार्य अमरेश कुमार ने बताया कि ये सभी मजदूर बिहार एवं झारखंड राज्य के दरभंगा, बगहा, जमुई, मोतीहारी, चाईबासा एवं मधेपुरा के रहने वाले थे जो लॉकडाउन में फंस गए थे। विद्या भारती दक्षिण बिहार भारतीय शिक्षा समिति के तत्त्वाधान में दक्षिण बिहार स्थित सभी सरस्वती शिशु विद्या मंदिरों ने संपूर्ण लॉकडाउन की स्थिति में नर सेवा नारायण सेवा को ध्यान में रखते हुए श्रमिकों को भोजन सामग्री के अलावा कच्ची एवं पक्की सब्जी का वितरण किया गया।

जरूरतमंदों को उपलब्ध कराते रहे भोजन के पैकेट

उदयपुर। शहर में लॉकडाउन के दौरान आहुति सेवा संस्थान, परमार्थ मेमोरियल ट्रस्ट, विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद्, रिद्धि सिद्धि एडवरटाइजर के संयुक्त तत्त्वावधान में लाल मगरी कच्ची बस्ती, आरकेपुरम, सवीनी कच्ची बस्ती, दक्षिण विस्तार योजना, ढ़ीकली गांव, बोरा–मंगरी गांव में जरूरतमंदों को 525 भोजन के पैकेट वितरित किए गए। पारीक परिषद् उदयपुर द्वारा प्रतिदिन जरूरतमंदों तक भोजन के पैकेट नियमित रूप से पंहुचाए गए। परिषद् के अध्यक्ष हरिशंकर तिवाड़ी ने बताया कि इस कार्य में राजकुमार पारिक आदि ने सहयोग किया। आहुति सेवा संस्थान, विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद्, विप्र फाउंडेशन युवा मंच, परमार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में उदयपुर शहर में गरीबों, असहायों एवं निराश्रित लोगों को भोजन के 1135 पैकेट व पानी की बोतलें वितरित की गईं। संस्थान के अध्यक्ष डा. विक्रम मेनारिया के अनुसार हिरणमगरी स्थित बंजारा बस्ती, लाल मगरी, बलीचा स्थित जोगी तालाब सेवा बस्ती, प्रताप नगर, बलीचा आदि में राहत सामग्री उपलब्ध कराई गई एवं कोरोना से बचाव की जानकारी दी गई।

गरीब बस्तियों में पहुंचकर की मदद

जहानाबाद सदर। मगध हॉस्पिटल के तत्त्वाधान में डा. राजीव कुमार रंजन के सहयोग से रामगढ़ जहानाबाद स्थित गरीब बस्तियों के लगभग 100 घरों में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इसके साथ ही शारीरिक दूरी बनाए रखने, हाथ धोते रहने एवं मास्क लगाकर रहने का संदेश भी दिया।

बस से घर-घर पहुंचाई राहत सामग्री

चांगसारी। कामरूप जिले के उत्तर गुवाहाटी स्थित शंकरदेव शिशु निकेतन द्वारा गरीब परिवारों के घरों तक बस से राहत सामग्री पंहुचाई गई। इस अभियान में रांग श्री संगीत महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी पुलिस ने भी सहायता की। शंकरदेव शिशु निकेतन उत्तर गुवाहाटी थाना प्रभारी मिंटू बोड़ो, समाजसेवी भारत राजवंशी, योगेश दास, रमेश बोड़ो, रमेश बोरा, गंगाधर दास आदि ने व्यक्तिगत स्तर पर जरूरतमंदों को हरसंभव सहयोग प्रदान किया। मुकुटेश्वर गोस्वामी, मुन दास, पिंकुमणि चौधरी, आचार्य पलाश शर्मा ने खाद्य सामग्री का वितरण किया। शंकरदेव शिशु निकेतन की ओर से करीब एक हजार लोगों को सहायता प्रदान की गई। आमीनगांव प्रखण्ड के विश्व हिन्दू परिषद् और उत्तर गुवाहाटी परिवेश सुरक्षा समिति ने भी सहायता की।

लॉकडाउन में टोली के साथ करते रहे दायित्व का निर्वहन

भिण्ड। गोहद तहसील में विद्या भारती द्वारा संचालित सभी सरस्वती शिशु मंदिर सेवा कार्य में निरंतर लगे रहे। मध्य भारत प्रान्त के प्रान्त प्रचार प्रमुख एवं जिला प्रमुख राजेन्द्र सिंह ठाकुर के अनुसार विद्यालयों के आचार्य परिवार, संयोजक मण्डल, पूर्व छात्र परिषद् एवं हितचिंतक टोली की पांच–पांच सदस्यीय टीम लगातार सेवाएं देती रही। मालनपुर में पुलिस के साथ टोल प्लाजा पर सुरक्षा में सहयोग दे रहे आचार्य बादाम सिंह कुशवाहा के अनुसार वह टीआई के सहयोग हेतु प्रतिदिन पांच घंटे सेवा देते रहे। मानहड़ में गोविन्द सिंह भदौरिया और राजू सिंह भदौरिया मास्क वितरण और जनजागरण अभियान में लगे रहे। बाराहैड में सोबरन सिंह कुशवाह, धर्म सिंह कौरव आदि अनाज, साबुन, मास्क वितरण कर लोगों से बार–बार हाथ धोने, पर्याप्त दूरी बनाए रखने एवं घर पर ही रहने का आग्रह करते रहे।

चंदोखर में ब्रजपाल सिंह तोमर, सुरेश तोमर, पप्पू शर्मा आदि ने पक्षियों को दाना–पानी एवं अपंग जानवरों को पानी–चारा देकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया। राय की पाली, लोधे की पाली, दशरथपुरा, छरेटा, खनेता में संतगिरि गोस्वामी, गंगा सिंह गुर्जर, प्रदीप तोमर, हर्ष पवैया, चन्द्रभान सिंह तोमर आदि लॉकडाउन के समय अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे सफाईकर्मियों, स्वास्थ्यकर्मियों आदि को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन करते रहे। हरीराम पुरा में देवेन्द्र गौड़ एवं उनकी टीम ने 50 लोगों को भोजन उपलब्ध कराया। पूरा विद्या भारती परिवार 'नर सेवा नारायण सेवा' के महाकथन को चरितार्थ करते हुए मां भारती की सेवा में अहर्निश लगा रहा।

झारखण्ड के सुदूर जनजातीय क्षेत्र में चलाया सतत सेवा अभियान

झारखण्ड के सूदूर जनजातीय क्षेत्र में जहां सरकार की ओर से कोई भी सहायता कोरोना काल में नहीं पहुंची वहां विद्या भारती ने न केवल कोरोना से बचाव के लिए जागरुकता अभियान चलाया, बल्कि सेवा के कई अकल्पनीय कार्य कर विशेष पहल की। विद्या भारती ने खाद्य सामग्री, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा प्रदान करने के लिए अलग–अलग टीमों का गठन किया और इनके माध्यम से जरूरतमंद लोगों की हरसंभव सहायता की। स्वास्थ्य की दृष्टि से सेनेटाइजर और मास्क आदि का वितरण करने के साथ ही आवश्यक दवा का वितरण भी किया गया। कोरोना महामारी के प्रति जागरूकता के लिए दीवारों पर लेखन किया गया तथा पोस्टर आदि लगाए गए। इसके अलावा राशन, भोजन के पैकेट आदि का वितरण किया गया। बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए मोहल्ला पाठशालाओं के माध्यम से पहल की गई।

राहत सामग्री वितरण
के साथ कई मोहल्लों में किया
सेनेटाइजेशन

दिल्ली। श्री सनातन धर्म सरस्वती बाल मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली की प्रधानाचार्या रीना वर्मा जी के अनुसार आचार्य/आचार्या नियमित रूप से विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के संपर्क में रहे। विद्यालय ने ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्था कर विद्यार्थियों और अभिभावकों को जोड़ा। कई अभिभावकों की विशेष रुचि रहती है कि वे योग, नृत्य, संगीत, शारीरिक शिक्षा, वाद्य यंत्र, कला आदि का ज्ञान अर्जित करें। पूर्व छात्रों ने 600 प्रवासी मजदूरों की सहायता का कार्य किया। पूर्व छात्र के एनजीओ 'हरी–भरी सोसायटी' के माध्यम से हजारों लोगों की सेवा का पावन कार्य किया गया। पूर्व छात्रों ने मोहल्लों में जाकर सेनेटाइजेशन कार्य के साथ जागरूकता अभियान भी चलाया। प्रधानमंत्री राहत कोष के लिए विद्यालय ने एक लाख पच्चीस हजार रुपये का सहयोग समर्थ शिक्षा समिति को किया। इसके अलावा 18,500 रुपये सीधे प्रधानमंत्री राहत कोष में भेजे गए। विद्यालय परिसर में संगठन के सहयोग से भोजन के लगभग 500 पैकेट और सूखे राशन का वितरण निरंतर किया गया।

3 माह तक वितरित की जरूरत की सामग्री

मालवा। कोरोना की विषम परिस्थिति में भी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली विश्व की सबसे बड़ी तथा गैर–अनुदान प्राप्त संस्था विद्या भारती के विद्यालय एवं उसके कार्यकर्ता कहां रुकने वाले थे। संकट की इस घड़ी में श्री शैक्षणिक विकास समिति देपालपुर मालवा प्रान्त के कार्यकर्ता भी आगे आए। समिति ने प्रशासन के आग्रह पर विद्यालय भवन को कोविड–19 से प्रभावित लोगों के लिए अस्पताल बनाने हेतु दे दिया। आचार्य परिवार, प्रधानाचार्य एवं समिति परिवार के कार्यकर्ता बन्धुओं ने जरूरतमंदों की हरसंभव सेवा की। इस दौरान सचिव महोदय स्वयं चाय बनाते थे। लगभग तीन माह तक पुलिस, अस्पताल, जनपद पंचायत, सेवा बस्ती आदि में चाय एवं बिस्किट का वितरण किया गया। इसके अलावा 12 क्विंटल खाद्यान्न, मास्क, सैनिटाइजर व साबुन आदि भी वितरित किए गए।

कोरोना काल में मुझे विद्यालय की ओर से सेवा करने का अवसर मिला क्योंकि मैं पत्रकार हूं और इस कारण मेरे पास पत्रकार का कार्ड था, जिससे मैं बाहर आ–जा सकता था। हमने विद्यालय के कुछ आचार्यों और अन्य लोगों के सहयोग से भोजन निर्माण कर पैकेट वितरण का कार्य किया। इसी दौरान एक दिवस की पैकेट व्यवस्था करने का निर्णय सरस्वती विद्या मंदिर (उ.मा.वि.) बड़ौद के प्राचार्य नारायण सिंह जी मल्डावदिया व व्यवस्थापक विजय कुमार जी जैन ने लिया। लगभग 900 भोजन के पैकेट प्रतिदिन वितरित किए गए।

मुकेशराव धुले

कक्षा आठ की बहन ने वितरित किए 11,500 मास्क

सरस्वती शिशु मन्दिर बिछड़ोद की कक्षा आठ की बहन सुमन सिसोदिया ने आसपास के गावों में 11,500 मास्क का वितरण किया। वह गरीब अनुसूचित जाति वर्ग के परिवार से है। पिताजी की सिलाई की दुकान है। इस सराहनीय कार्य के लिए ग्राम पंचायत एवं विधायक द्वारा ने सम्मानित किया।

लॉकडाउन के दौरान 124 विद्या मंदिरों से प्रतिदिन सैकड़ों लोगों के लिए की गई भोजन व्यवस्था

70 हजार मास्क और 800 परिवारों को दवा का वितरण, पी.एम. केयर फंड में दिए 3 लाख रुपए

विद्या धाम, जालंधर। विद्या भारती पंजाब के प्रचार प्रमुख सुखदेव वशिष्ठ और प्रान्त प्रचार टोली के सदस्य मोहित चुघ के अनुसार पंजाब के 124 विद्या मंदिरों से प्रतिदिन सैकड़ों लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। इनमें प्रवासी मजदूर भी शामिल थे जो लॉकडाउन के कारण बेरोजगार हो गए थे। इस दौरान 10,000 पैकेट सूखा राशन, 40 विद्या मंदिरों द्वारा 8,000 लोगों को प्रतिदिन भोजन, 70,000 मास्क का वितरण और 800 परिवारों को दवा वितरित की गई। इसके अलावा डेराबस्सी के पास जंडली गाँव के विद्यालय में आर्थिक समस्या आने पर एक माह का वेतन देने का संकल्प प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्य संयोग दत्त जी ने लिया। पी.एम. केयर फंड में तीन लाख रुपये दान किए गए। रामपुरा फूल विद्या मंदिर के संरक्षक तरसेम जेठी जी और बरनाला विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य संजीव चन्देल जी ने क्रमशः एक लाख और दस हजार रुपये दान किए। विभिन्न व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से सोशल डिस्टेंसिंग बनाने, मास्क लगाने और बार–बार हाथ धोने जैसे कोरोना से बचाव के उपायों के प्रति लोगों को जागरुक किया गया।

लॉकडाउन में भी शिक्षण कार्य सुचारु रूप से चलता रहे इसके लिए आनलाइन माध्यमों का बेहतर उपयोग किया गया। प्रान्त स्तर से लेकर प्रधानाचार्य, अध्यापक, विद्यालय का अन्य स्टाफ, प्रबन्धन से जुड़े कार्यकर्ता और विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावक विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुपों में जुड़े हैं और ये संख्या लगभग एक लाख है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ्य–सामग्री उपलब्ध कराने के साथ यूनिट टेस्ट भी संचालित किए गए हैं। दैनिक समय सारणी के अनुसार आचार्यों द्वारा प्रदत्त कार्य, बनाए गए वीडियो, यू–ट्यूब वीडियो के लिंक, स्लाइड्स आदि व्हाट्सएप समूहों में भेजे गए। जूम तथा टीम लिंक पर प्रतिदिन आनलाइन कक्षाओं का संचालन किया गया।

योजना बनाकर जालंधर में की जरूरतमंदों की मदद

कोरोना महामारी के दौरान प्रकाशवती सर्वहितकारी विद्या मंदिर जालंधर की प्रबंध समिति ने विशेष बैठक कर लॉकडाउन के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में प्रवासी मजदूरों एवं अन्य जरूरतमंद लोगों के साथ ही सुरक्षाकर्मियों के सहयोग के लिए योजना बनाई और सभी को सहयोग प्रदान किया। इस पहल के तहत 800 भोजन के पैकेट सुबह के समय और 900 पैकेट रात्रि में वितरित किए जाते रहे। इसके अलावा 100 किट सूखा राशन उपलब्ध कराया गया। सुरक्षा की दृष्टि से तैनात सौ पुलिसकर्मियों को फलों का वितरण किया गया। विद्यालय और आसपास के क्षेत्र में 6 बार सेनेटाइजेशन किया गया। इस दौरान विद्या मंदिर के आचार्यों, दीदियों और अभिभावकों द्वारा निर्मित 3 हजार से अधिक मास्क वितरित किए गए। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध कराई गईं। लॉकडाउन के दौरान प्रबंध समिति के सदस्य स्थानीय प्रशासन से लगातार संपर्क में रहे और पूर्ण तालमेल के साथ सेवा कार्य में संलग्न रहे। प्रशासन के आग्रह पर भी विभिन्न स्थानों पर जरूरत के अनुसार कई लोगों को सहायता उपलब्ध कराई गई।

ऐसे समय में जब लोग घरों से अपने आवश्यक कार्यों के लिए भी बाहर निकलने में संकोच कर रहे थे तब विद्या मंदिर के आचार्य और प्रधानाचार्या दीदी सामने आए और सहायता उपलब्ध कराने के लिए पहल की। विद्या मंदिर के आचार्यों के सेवाभाव को देखकर अभिभावकों ने भी सेवा कार्यों में बढ़–चढ़कर सहयोग किया। एक समय सेवा कार्यों के लिए लोगों में इतना उत्साह था कि अगर किसी को यह कहा

गया कि उसे आज सेवा हेतु नहीं आना है तो वह उदास हो जाता था। किसी भी दिन ऐसा नहीं हुआ जब जितनी सामग्री की आवश्यकता हुई वह उपलब्ध न हो सकी हो। सेवा संबंधी कार्यों के लिए धन की व्यवस्था भी सरलता से होती रही। यह सारा सेवा कार्य प्रबंध समिति के निर्देशन में एक माह तक सतत रूप से चलता रहा। इसके परिणामस्वरूप, इस विद्या मन्दिर क्षेत्र से प्रवासी मजदूरों का पलायन न के बराबर हुआ।

राहत सामग्री वितरण के साथ बीमार बच्चे का कराया इलाज

शिमला में अपने विद्यालय में छतीसगढ़ के श्रमिक रामू का परिवार काफी वर्षों से रहता है। रामू जनवरी मास में ही अपने गांव चला गया और दो बच्चों को शिमला में ही छोड़ दिया, क्योंकि यहां पर उनकी पढ़ाई चल रही थी। उन्हें वापस आना था कि इतने में कोरोना के कारण लॉकडाउन लग गया। इसी बीच शिमला में लड़का काफी बीमार हो गया। माता–पिता छत्तीसगढ़ में परेशान हो रहे थे। ऐसे में उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं से संपर्क किया और इलाज कराने की प्रार्थना की। कार्यकर्त्ताओं ने गाड़ी का प्रबंध कर बच्चे को अस्पताल पहुंचाया और डाक्टरों से बातचीत की। लड़का लगभग 20 दिन तक अस्पताल में रहा। कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से इलाज का सारा खर्च हुआ। माता–पिता ने इस कार्य के लिए कार्यकर्त्ताओं का कोटिशः धन्यवाद किया।

इसके अतिरिक्त प्रदेश में 1251 अनाज के पैकेट, 1374 लोगों को भोजन, 12,983 लोगों को मास्क, 1620 सैनेटाइजर, 746 पशुओं को आहार का वितरण किया गया। 733 ग्रामों में कोरोना से बचाव के सम्बन्ध में जन–जागरण अभियान चलाया गया। प्रांत से पी.एम. केयर फण्ड़ में 5,01,001 रुपये की धनराशि भेजी गई।

देवी सिंह वर्मा
प्रान्त प्रचार प्रमुख
हिमाचल शिक्षा समिति

पीएम केयर फंड में दिए 11 लाख रुपये

दिल्ली। विद्या भारती दिल्ली प्रान्त के संवाददाता सतीश शर्मा के अनुसार समर्थ शिक्षा समिति दिल्ली, हिन्दू शिक्षा समिति दिल्ली व हिंदू शिक्षा समिति न्यास दिल्ली के सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य, आचार्य और कर्मचारियों ने अपना एक दिन का वेतन, कुछ ने एक मास का वेतन और समर्थ शिक्षा समिति दिल्ली ने 11 लाख रुपये प्रधानमंत्री आपदा कोष में जमा कराने का निर्णय लिया। विद्या भारती ने उपेक्षित बस्तियों में संस्कार केन्द्रों के माध्यम से साबुन का वितरण किया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली के साथ मिलकर जरूरतमंदों को राशन उपलब्ध कराया।

सोलन के वार्ड नंबर 13 क्लीन में जहां मेरा घर है वहां पर ऊत्तर प्रदेश व बिहार से मजदूरी करने आए करीब 400 मजदूर रहते थे। लाकडाउन में उनका काम पूरी तरह से बंद हो गया था। भोजन सामग्री खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे में 30 अप्रैल 2020 को कुछ लोगों को सरकारी सहायता के रूप में राशन वितरित किया गया जो जरूरत का केवल 10 प्रतिशत ही था। उस दिन जिन श्रमिकों को राशन प्राप्त नहीं हुआ उनमे से कुछ मजदूर मेरे घर आए और कहने लगे कि घर में खाने को कुछ भी नहीं है। कुछ लोग परिवार सहित रहते हैं उनके बच्चों की दुहाई देने लगे। इस पर कार्यकर्त्ताओं से उनकी सहायता करने के बारे में विचार किया। कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से 15 लोगों को राशन की किट जिसमें 10 किलो आटा, 5 किलो चावल, सरसों का तेल, चीनी, हल्दी आदि सामग्री थी जिसकी कीमत 600 रुपये थी बॉबी किराना स्टोर से दिलवाई। दूसरे दिन 2 अप्रैल को काफी संख्या में लोग मेरे घर पर एकत्र हुए तथा अपनी परेशानी बयान की। मेरी पत्नी ने करीब 100 लोगों की लिस्ट तैयार की जिसमें उनके फोन नंबर भी लिए। मेरे परिवार ने तुरंत 20 राशन की किट तैयार कराईं और जो अधिक जरूरतमंद थे उन्हें वितरित कीं। कनाडा में रह रहे वीरेंद्र सरदाना जी ने भी अपनी ओर से 10 किट राशन जरूरतमंद लोगों को देने हेतु कहा। सरकारी विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री सत्य प्रकाश जी व स्टाफ ने 10 राशन किट दीं। सरस्वती विद्या मंदिर माल रोड सोलन के प्रधानाचार्य रविकान्त जी ने 2 किट तथा बॉबी कियाना स्टोर ने 5 राशन किट दीं। मजदूरों की मदद करने के लिए मैंने प्रशासन से बात की तो तहसीलदार नेगी जी ने 100 राशन की किट भिजवाईं। कई घरों में तहसीलदार नेगी जी ने रात 10 बजे राशन भिजवाया। उपरोक्त सेवा कार्य से मुझे यह अनुभव हुआ कि यदि आप किसी कार्य को निस्वार्थ भाव से करते हैं तो ईश्वर भी आपका साथ देता है।

कन्हैया लाल शर्मा
जिला मंत्री
हिमाचल शिक्षा समिति सोलन जिला

विद्या भारती दिल्ली प्रांत द्वारा किए गए सेवा कार्य

गीता बाल भारती विद्यालय दिल्ली में श्रीमती सुशीला राजीव जी ने मास्क बनाकर जरूरतमंदों को वितरित किए। श्रीमती गुरलीन कौर जी के घर से प्रतिदिन 20 लोगों का भोजन उपलब्ध कराया गया। श्री वासुकि नाथ जी ने हेडगेवार भवन में भोजन के पैकेट बनाए। श्रीमती नीलम जी ने भोजन के पैकेट बनवाए। श्री राकेश पांडे जी, संघ द्वारा बनवाए गए पैकेट्स के वितरण में संलग्न रहे। श्रीमती रेनू चौहान जी ने भंडारा आयोजित किया। श्रीमती लक्ष्मी शर्मा व श्रीमती श्वेता तिवारी जी ने गरीबों को राशन का वितरण किया। श्रीमती सीमा शर्मा जी ने साबुन और सैनिटाइजर का वितरण किया।

स्वच्छता और फिजीकल डिस्टेंसिग का पालन करते हुए आशा लाखोटिया सरस्वती बाल मंदिर जी–ब्लॉक नारायणा विहार, दिल्ली में प्रतिदिन 3 हजार लोगों के लिए दोनों समय के भोजन की व्यवस्था की गई। यह पुनीत कार्य विद्यालय परिवार और राधा स्वामी सत्संग व्यास सहित सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से किया गया। इसके अलावा विद्यालय से जुड़े दोनों संस्कार केन्द्रों के बच्चों के भोजन की व्यवस्था भी विद्यालय प्रबंधन समिति की ओर से की गई। कोरोना वायरस से प्रभावित निर्धन परिवारों की सहायता के लिए विद्यालय ने 18,100 रुपये समर्थ शिक्षा समिति के खाते में जमा कराए।

ललित महाजन सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल वसंत विहार दिल्ली में नेशनल मेडिकोज आर्गेनाइजेशन, एम्स, सक्षम, सेवा भारती और विद्यालय के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। ''सेवा, परोपकार करना मनुष्य के प्रधान कर्तव्य हैं।'' जयशंकर प्रसाद के इस कथन को चरितार्थ करते हुए श्रीमती लीलावन्ती सरस्वती शिशु मंदिर, टैगोर गार्डन, दिल्ली ने सेवा कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई। विद्यालय की व्यवस्थापिका श्रीमती गरिमा गुप्ता जी व प्रधानाचार्य निधि सच्चर जी आदि ने जरूरतमंदों को राहत सामग्री वितरित की।

आइसोलेशन सेंटर में बच्चों की निस्वार्थ भाव से की सेवा आरोग्य के लिए नियमित रूप से सिखाया योग

बावीच्या आश्रम शाळेतील
परप्रांतीयासाठी मदतीचा ओघ

विद्यानगर बावी। कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान उद्योग बंद हो गये और परिवहन सुविधाएं बंद होने से सैकड़ों मजदूर अपने गांव की ओर हजारों मील की पैदल यात्रा करते नजर आए। कक्षा 10वीं का सामाजिक शास्त्र भाग–1 का पेपर 19 मार्च 2020 को समाप्त हुआ और उसी दिन सरकार ने कोरोना संक्रमण को देखते हुए 21 मार्च का भूगोल का पेपर रद्द कर दिया। हमारे शैक्षणिक परिसर में रहने वाले सभी छात्रों को उनके माता–पिता के साथ भेज दिया गया।

सांजा परिसर उस्मानाबाद में मार्केटिंग का प्रशिक्षण लेने के लिए चार महीने से आंध्र, तेलंगाना और तमिलनाडु के छात्र रह रहे थे। लॉकडाउन के कारण सभी व्यवहार बंद थे। इसलिए उस्मानाबाद तालुका के दंडाधिकारी तथा तहसीलदार श्री गणेश माली, ग्रामीण पुलिस स्टेशन के पुलिस निरीक्षक श्री दत्तात्रेय सुरवसे और बावी गांव के तलाठी श्री अमोल निरफव ने सरकारी गाड़ी से इन छात्रों को स्कूल के अलगाव केंद्र में दाखिल किया।

हमारे स्कूल में स्थापित अलगाव केंद्र में आए बच्चे भूख से परेशान थे। छात्रों की भाषा तमिल और तेलगू होने के कारण उनसे वार्तालाप करते समय दिक्कत आ रही थी। शुरू में इन छात्रों को सरकार की मदद से एक दिन में दो समय भोजन दिया गया। बाद में संगठन और स्थानीय सरकारी प्रमुखों के माध्यम से क्षेत्र के उदार किसानों और कर्मचारियों ने खाद्यान्न, सब्जियां, दवाएं, फल और साबुन वितरित किए। तेल और टूथपेस्ट आदि सुविधाएं बच्चों तक पहुँची। जो बच्चे भयभीत और परेशान थे वे स्नेहपूर्ण व्यवहार के कारण खुश रहने लगे।

मानसिक स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए उस्मानाबाद योग केंद्र के प्रमुख नितिन तावडे और उनकी टीम ने नियमित रुप से सुबह बच्चों को योग सिखाया। डा. शहापूरकर मैडम जी ने छात्रों में उत्साह और खुशी निर्माण हो, इसलिए दो भाषाओं के माध्यम से परामर्श के साथ छात्रों को अपनी भाषा में कला प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया। संस्था के सामाजिक उत्तरदायित्व से संचालित आश्रम स्कूल अलगाव केंद्र में 22 मार्च 2020 से 2 मई 2020 तक हर रोज सुबह का नाश्ता और खाना दिया गया। संस्था प्रमुख माननीय श्री मनोहरराव शोभा राठौड (दलित मित्र) के जन्मदिन के अवसर पर स्वादिष्ट महाराष्ट्र की पुरानी थाली जिसे पुरन पोली कहते हैं, उसका स्वाद छात्रों को मिला। इस अलगाव केंद्र में 73 छात्र रहते थे। जिला कलेक्टर दीमा मुधोल मुंडे, जिल्हा पोलिस प्रमुख राजतिलक रोशन, तहसीलदार, मा. पोलिस निरीक्षक ग्रामीण पुलिस स्टेशन उस्मानाबाद, मा. ग्रामसेवक और अन्य स्थानीय पदाधिकारियों ने समय–समय पर केंद्र का दौरा किया और व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया।

आखिर विदाई का समय आया। तालुका प्रशासन ने इन छात्रों की कोविड–19 जांच कराई और उसके बाद उनके राज्य की सहमति से उनको जिला मुख्यालय पहुंचाने की योजना बनाई। 4 मई, 5 मई और 6 मई को शाम का भोजन देकर आंखों में आंसू के साथ छात्रों की विदाई की गई। कठिन समय में मानवता की दीवार बनाकर दूसरे राज्य के छात्रों की कुछ मदद करके संस्थान ने निस्वार्थ मन से सेवा की।

जम्मू-कश्मीर में राहत सामग्री और मास्क वितरण के साथ किया सैनिटाइजेशन

जम्मू। लॉकडाउन के दौरान जम्मू–कश्मीर प्रांत में देश के अनेक प्रांतों के यात्री, मजदूर फंस गए थे। भारतीय शिक्षा समिति के अन्तर्गत चल रहे भारतीय विद्या मन्दिरों की प्रबन्ध समिति के सदस्यों, प्रधानाचार्यों, आचार्यों ने आपदा की इस घड़ी में तन, मन, धन से सेवा की। प्रभावित लोगों के लिए मास्क निर्माण कर वितरित किए, राशन तथा सब्जी वितरण किया और गलियों को सैनिटाइज किया। प्रांत के दूरस्थ स्थानों पर यथा अठोली पाडर, पुल्लर नागसेनी तथा किश्तवाड़ के विद्यालय परिवार ने गांव–गांव जाकर सामान्य जन को कोरोना महामारी से सुरक्षित रहने के सरल उपाय बताए और मास्क बनाने के लिए प्रेरित किया और कुछ मास्क बांटे। अपने–अपने घर से राशन एकत्रित करके गरीब परिवारों को वितरित किया। डोडा एवं रामबन जिला में चल रहे अपने विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं आचार्यों ने मास्क तैयार करके जरूरतमंद लोगों में बांटे। बसोली संकुल के विद्यालयों की प्रबन्ध समिति सदस्यों, प्रधानाचार्यों एवं आचार्यों ने आसपास के गांव–गांव जाकर लोगों को कोरोना महामारी के प्रति जागरुक किया।

सेवा कार्यों के दौरान कई ऐसे प्रसंग सामने आए जो हम सबके लिए प्रेरणादायक हैं। उधमपुर की प्रधानाचार्या जी ने दुकानदारों से आग्रह कर मास्क हेतु कपड़ा लेकर अभिभावकों एवं आचार्यों, दीदियों के द्वारा तैयार कराए और समाज में वितरण किया। स्थानीय प्रशासन को भी सेवा कार्य हेतु हमें राशन के पैकेट

बांटना चाहिए इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रान्त के दूरदराज क्षेत्र अग्राल सरथल में प्रबन्ध समिति के सदस्यों, आचार्यों ने धन संग्रह कर प्रत्येक परिवार को 5 किलो चावल, 5 किलो आटा, तेल, दाल वितरित की। कटरा विद्यालय के अध्यक्ष श्री शिव कुमार जी ने प्रबन्ध समिति के सदस्यों के साथ चार बार पूरे कटरा क्षेत्र में सब्जी और भोजन पैकेट्स का वितरण किया। रामनगर विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुडियार जी ने अपने परिवार के साथ कई दिनों तक घर में मास्क बनाकर समाज में वितरित किए। उधमपुर के पूर्व छात्रों ने प्रधानाचार्या से सम्पर्क कर सैनेटाइजर मशीन लेकर शहर की अनेक गालियों को सैनिटाइज किया।

करीब 7 लाख लोगों ने सस्वर किया हनुमान चालीसा का पाठ

मुजफ्फरपुर। जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था तब ईश्वर के सिवा दूसरा कोई रक्षक दीख नहीं रहा था। चहुंदिशा में अंधकार ही अंधकार दिख रहा था। इसी मध्य आभासी बैठक में लोक शिक्षा समिति, मुजफ्फरपुर के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने न्यूनतम पांच एवं अधिकतम 11 आवृत्ति श्री हनुमान चालीसा पाठ करने का निश्चय किया। पुनः यह विचार आया कि इस पुण्य कार्य में अपने विद्यालय के पंचप्राण सहित सभी हितधारक सपरिवार सम्मिलित हों। जब यह निर्णय किया गया तो सबने इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार किया। निर्धारित तिथि को पूर्णकालिक प्रांतीय समिति के कार्यकर्ता, विद्यालय समिति एवं आचार्य, प्रधानाचार्य, कर्मचारी संवर्ग तथा पूर्व छात्र एवं संस्कार केन्द्र/एकल विद्यालय के कार्यकर्ताओं ने सपरिवार हनुमान चालीसा का सस्वर पाठ किया। 3 लाख 32 हजार 317 परिवारों के 6 लाख 82 हजार 477 व्यक्तियों ने हनुमान चालीसा पाठ में भाग लिया। इस पारिवारिक धार्मिक आयोजन को सबने सोशल मीडिया पर प्राख्यापित कर सामूहिक धार्मिक अनुष्ठान का स्वरूप प्रदान किया। बड़ी संख्या में लोगों की

सहभागिता से यह कार्यक्रम सफल एवं फलदायी रहा। हनुमान जी पर भरोसा रखते हुए सभी लोग तन–मन–धन से सेवा कार्य में जुट गए। उल्लेखनीय है कि जिन्हें कभी भी पूजा–पाठ करते हुए सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया, वे भी पारिवारिक हनुमान चालीसा पाठ का चित्र एवं वीडियो सोशल मीडिया पर डालकर प्रसन्न हो रहे थे।

नकुल कुमार शर्मा
प्रदेश सचिव, लोक शिक्षा समिति, बिहार

"Small acts, when multiplied by millions of people, can transform the world"

Uttar Tamilnadu. During Covid-19 pandemic crisis, Vidya Bharati Vidyalayas took an initiative in serving the humanity. Sangh &Seva Bharathi distributed Grocery Kit consisting of 21 items and kabasura kudineer for scavenger- conservancy workers. Kabasura kudineer and Nilavembu Kashayam were distributed to 3,84,020 people. CRPF, Avadi Group center has donated magnanimously Rs.600 worth kit with 103 Grocery items for the needy & poor. 9361 Family of Samskar Kendra children are benefitted by receiving Grocery kit. 236 Poor Temple Priests were provided with a Relief of Rs. 1000 each.c 2,02904 food packets,9361 grocery kit ,485 Vegetable Kit, 29,835 Face Masks, Kabasura Kudineer 384020 Medicine, 270021 Arsenic Tablets and 60 rice bags were distributed to the public during the corona lock down. COVID -19 – Relief Fund contribution TO P.M. Cares Funds Rs. 14,50,000/- by Salem unit. Financial help to our deserving staff: Rs. 1000/- paid to 124 teachers as a token of sharing the grief by Vidya Bharathi. Sri.K.E.Srinivasan Correspondent of SKNS PMC Vivekananda Vidyalaya, Perambur, Chennai received the Corona Warriors Award for his selfless service during the nationwide lockdown for COVID.

Vidya Bharati Alumni Donates Smart Phones to School

Alumni of Vyasa Vidya Peethom,
Kallekkad, Palakkad, Kerala,
Jayasree donated smart phones to her school.

Corona Period Seva Activities, Andhra Pradesh

During this pandemic situation also Vidya Bharathi has made its presence in coping up with the conditions and kept its good efforts in helping and carrying the objects into to society. 25 schools joined the team activity from 13 districts. More than 25,000 people were being feeded with food including migrant workers. About 13,000 families were being assisted with Grosories. A total benefiters were about 3 lacs. One day salary has been donated by our sustained school communities towards helping the needy. Some groups of Vidya Bharti like old students, teachers, other patrons have donated/collected amounts and being arranged as salaries to single teacher operated schools, rural area schools etc. More than 13 lacs worth value has been generated and being distributed among the society during this time by various means including above also.

Teachers – Students – Schooling – Online

During lockdown due to the closure of schools, Vidya Bharti made its entry into Online mode of schooling. A workshop has been conducted through Zoom, Microsoft Teams for the teacher community where in all our Vidya Bharti Andhra Pradesh group school teachers are linked and give an Prasikshana by eminent personalities of Vidya Bharti. Online classes, projects, zoom meetings, teams classes were being launched by our schools and made a very progressive result in catering the education needs of students. We have got the confidence and acceptance of the parents in a good way also. Nearly 60 plus SISUVATIKA activities are being extended to our parent community for which has earned a very good response. Vidya Bharti prachar has also contributed a lot in making these efforts fruitful. We made these activities trolling in Facebook, Whatsapp etc.Print media also covered our activities in a good manner. Local media, TV and Social media has been completely utilized in capturing these occasions.

विद्यालय परिवार की मदद के लिए आगे आए पूर्व छात्र, संस्था को दिए सवा लाख रुपये

हसनपुर (पश्चिमी उत्तर प्रदेश)। कोरोना महामारी के दौरान बहुत से समाजसेवी संगठनों ने राशन किट, मास्क, भोजन पैकेट आदि का वितरण कर अपने कर्त्तव्य को निभाया तो वहीं विद्या भारती के सरस्वती शिशु मंदिर एवं विद्या मंदिर हसनपुर के पूर्व छात्रों ने मदद का दूसरा तरीका अपनाया। यहां के पूर्व छात्रों को जब यह जानकारी मिली कि इस महामारी में उनका विद्यालय आर्थिक संकट के कारण अपने आचार्यों, दीदियों और स्टाफ को वेतन नहीं दे पा रहा है तो वे अपने गुरुजनों की आर्थिक सहायता करने में जुट गए।

पूर्व छात्र परिषद के जिला प्रमुख विभोर अग्रवाल के अनुसार इस संकट के समय में देश–विदेश में रह रहे सभी पूर्व छात्र अपने गुरुजनों की सहायता के लिए आगे आए और देखते ही देखते हसनपुर नगर से सवा लाख रुपए संस्था के खाते में आनलाइन ट्रांसफर करा दिए गए। पूर्व छात्र परिषद् के नगर अध्यक्ष डा. अक्षय गर्ग के अनुसार इस अभियान में सत्यप्रकाश लक्ष्मी देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज हसनपुर के 1999 हाईस्कूल बैच के पूर्व छात्रों ने 35 हजार रुपये की धनराशि सहायता के लिए भेजी। 90 हजार रुपये अन्य बैच के पूर्व छात्रों ने भेजे। कई पूर्व छात्रों ने इससे पहले प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री राहत कोष एवं अन्य सामाजिक संगठनों

को सहयोग किया था लेकिन जब इन्हें अपने विद्यालय के आर्थिक संकट के बारे में पता चला तो उन्होंने फिर से इस मुहिम को शुरू किया। विद्यालय के उद्देश्य 'शिक्षार्थ आइए और सेवार्थ जाइए' को विद्या भारती सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के पूर्व छात्रों ने पूरी तरह सार्थक किया। पूर्व छात्र परिषद् के सदस्य एवं भाजपा के जिला उपाध्यक्ष कपिल उर्फ मयंक अग्रवाल ने बताया कि कुछ पूर्व छात्रों ने ग्यारह–ग्यारह हजार रुपए सहायता के लिए भेजे। सहायता करने वाले प्रत्येक पूर्व छात्र को पूर्व छात्र परिषद् इकाई हसनपुर की तरफ से डिजिटल प्रशस्ति–पत्र भेजकर सम्मानित किया गया।

विद्या भारती कर्नाटक ने केयर फंड में दान किए 40 लाख रुपये

कर्नाटक। कोरोना महामारी के कारण लागू किए गए लॉकडाउन के दौरान विद्या भारती कर्नाटक की तरफ से 133 स्थानों पर 155 शालाओं से सेवा कार्य किए गए। 150 संस्थाओं ने सेवा प्रकल्प के कार्य में भाग लेते हुए 13 हजार आहार सामग्री का वितरण किया जिससे 15 हजार कुटुंबों को मदद मिली। 2500 लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई और 10 हजार से ज्यादा मास्क वितरित किए गए। 133 गांवों में जनजागरण का अभियान चलाया गया। प्रधानमंत्री राहत कोष में 37 लाख रुपये और मुख्यमंत्री राहत कोष में 3 लाख रुपये समर्पित किए गए। इस कार्य में शिक्षकवर्ग और 25 हजार कार्यकर्ता और 1500 शिक्षक प्रतिनिधियों ने सहयोग किया।

बेहतर कार्य करने वाले पूर्व छात्रों का किया सम्मान

जरीडीह। जरीडीह बाजार स्थित अवध बिहारी सरस्वती शिशु मंदिर में समारोह आयोजित कर कोरोना महामारी में बेहतर कार्य करने वाले पूर्व छात्रों को प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य कमलजीत सिंह ने कहा कि मैं धन्य हूं कि इस विद्यालय ने वैसे छात्रों का सृजन किया है, जिनके कार्यों से गर्व महसूस होता है। इन पूर्व छात्रों ने कोरोना वैश्विक महामारी में अत्यंत जरूरतमंद लोगों की दिन–रात जिस तरीके से चिलचिलाती धूप में अपनी जान जोखिम में डालकर सेवा की और उनको भोजन, राशन, राहत सामग्री, मास्क, सेनेटाइजर आदि उपलब्ध कराया वह वास्तव में सराहनीय है। पूर्व छात्र संयोजक कृष्णा गुप्ता ने कहा कि विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र सभी जरूरतमंद लोगों की सेवा के लिए तत्पर हैं। कार्यक्रम का संचालन आचार्य विष्णु शर्मा ने किया।

शिक्षा विकास समिति ओडिशा ने पूरे राज्य में चलाया सेवा अभियान, जरूरतमंदों को प्रदान की सहायता

Food items and Masks were provided to distressed families in the area adjacent to the tea garden at Nakshalbari, Uttarbanga and Santization was also done

SEVA ACTIVITIES IN TELANGANA

Saraswati Vidya Peetham Telangana has organised huge seva programmes to help the needy. The organization has taken phased steps during the Covid Lockdown to help the needy. As the Vidya bharathi schools are located in many villages, seva programmes have been organized in those respective villages successfully, helping many needy people. The programmes were organized by Saraswati vidya peetham in coordination with the Seva vibhag and poorva chatra parishad. The daily waged workers, migrant labours and the poor were helped in different ways and means during lockdown. In the first phase the Seva vibhag has distributed food packets to the daily wagers, migrant labours. Ration kits were prepared by the seva vibhag volunteers, Acharyas and mathajis with the support extended by the donors. The slum areas were identified and the ration kits were distributed to the daily wagers, migrant labours accordingly. The lack of basic needs to fight back Covid in the slums was identified while distributing the ration kits.

In the second phase face masks and sanitizers were provided to the residents in slums. The migrant labours leaving to their home towns were provided with food packets, fruits, water packets, ration kits as the next step of seva programme. The moral support needed during the pandemic was provided by volunteers of Seva vibhag. Overall sum up of the seva programmes offered by Telangana Seva Vibhag follows.Total summary is given here:

Schools: 140, Service Centers: 312, Beneficiaries: 61,040

Viswanadhan
Prantha Prachar Pramukh, Telangana

बिना भेदभाव सेवा पर ईसाई परिवार ने जताया आभार

कोठारा परियोजना के तहत 120 परिवारों को प्रदान की गई सहायता

बांसवाड़ा। विद्या भारती जनजाति समिति बांसवाड़ा राजस्थान द्वारा संचालित कोठारा परियोजना 1999 में प्रकल्प के रूप में प्रारम्भ हुई थी। कोठारा परियोजना से पिछले सेवा कार्य से 5 धर्मान्तरित ईसाई परिवार सम्पर्क में आए। इनमें केवड़ियां जिला बांसवाड़ा की बहन शीला डिंडोर व उनका परिवार भी शामिल है। कोरोना के भय के कारण जब घर से बाहर निकलने की बात कोई सोच भी नहीं पा रहा था तब कोठारा परियोजना द्वारा 120 परिवारों को बिना भेदभाव के राशन किट का वितरण किया गया और घर–घर जाकर लोगों को भयमुक्त करने हेतु हवन का आयोजन किया गया।

स्थिति कुछ सामान्य होने पर मैं स्वयं परिवारों से सम्पर्क हेतु गया तो एक ऐसे परिवार से सम्पर्क हुआ जो कई वर्षों से ईसाई धर्म ग्रहण कर चुका था। इस परिवार की एक बहिन शीला डिंडोर से जब मेरी चर्चा हुई तो उनके हृदय से स्वाभाविक उद्‌गार प्रकट हुए कि वर्षों से ईसाई बने हुए हैं पर इस संकट काल में किसी ने भी हमारी सुध नहीं ली। लेकिन कोठारा परियोजना बांसवाड़ा के कार्यकर्ता परिवार से सतत सम्पर्क में ही नहीं रहे, अपितु हमारे लिए एक माह के भोजन की व्यवस्था भी की। उन्होंने कहा कि मैं ईसाई परिवार से होने के कारण संघ को विरोधी मान रही थी, लेकिन अब पता चला कि कोठारा परियोजना के कार्यकर्ता बिना भेदभाव के सेवा कार्य में लगे हुए हैं। मैं अभिभूत हूँ कि मेरा विचार गलत था। आज मुझे वास्तविकता की जानकारी हुई है। मुझे भविष्य में कोई भी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ, तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानूंगी। मैं सदैव विद्या भारती की ऋणी रहूंगी। यह चर्चा सुनकर मुझे भी कोठारा परियोजना का कार्यकर्ता होने पर गर्व महसूस हुआ कि इस पवित्र संगठन के माध्यम से सेवा कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

मानेंग पटेल
सचिव
विद्या भारती जनजाति समिति

...एक सेवा ऐसी भी

समाज है आराध्य हमारा, सेवा है आराधना भारतमाता के वैभव की सेवाव्रत से साधना

विद्यालय में इस गीत को दोहराया जाता था। इसी गीत और विद्यालय से प्राप्त संस्कारों से प्रेरित होकर शायद नन्हे बृंजित कश्यप ने वह कर दिखाया जिसे बड़े–बड़े लोग नहीं कर सकते। बृंजित कश्यप शंकरदेव शिशु निकेतन बुरहा, दरंग जिला, असम में दूसरी कक्षा का विद्यार्थी है। उसके पिताजी किसान हैं। बृंजित के घर से विद्यालय लगभग तीन किलोमीटर दूर है। पहली कक्षा तक उसके पिताजी साइकिल से विद्यालय तक छोड़ने तथा लेने आते थे। लेकिन कार्य के सिलसिले में पिताजी के घर से दूर जाने के कारण उसकी विद्यालय आवागमन की यह सुविधा समाप्त हो गयी। लिहाजा बृंजित को किसी परिचित की साइकिल या मोटरसाइकिल पर तो कभी पैदल ही यह दूरी तय करनी पड़ती थी। घर की आर्थिक स्थिति भी इतनी ठीक नहीं थी कि नयी साइकिल खरीद कर दी जा सके। उसने अपने जन्मदिन पर मिले पैसों को खर्च न कर साइकिल के लिए जोड़ना प्रारंभ कर दिया। पॉकेट मनी के लिए प्राप्त पैसे भी खर्च करने के बजाय गुल्लक में जमा करना शुरु कर दिया। उसके इस प्रयास को देखकर उसकी माँ भी मदद करने लगी। वह कभी–कभार साग– सब्जियाँ बेचकर प्राप्त पैसों में से कुछ पैसे कुछ देकर उसका उत्साहवर्धन करने लगीं।

वह जब भी गुल्लक में पैसे डालता तो अपनी नयी साइकिल के बारे में सोचकर पुलकित हो उठता था। उत्साहवश विद्यालय के अपने मित्रों की मदद से उसने साइकिल चलाना भी सीख लिया। फिर अचानक कोरोना का कहर छा गया। लॉकडाउन लागू हुआ तो विद्यालय जाना बंद हो गया। नौकरी, व्यवसाय बंद होने के कारण पिताजी भी घर पर बैठ गये। रेडियो, टीवी, समाचार पत्रों में लोगों की कठिनाइयों के समाचार आने लगे। लॉकडाउन के चलते आय का स्रोत बंद होने से लाखों परिवार भुखमरी की कगार पर आ गये। हालांकि प्रशासन ने भोजन सामग्री वितरण करना प्रारंभ कर दिया था, परन्तु ऐसे बहुत से परिवार थे जिन तक शासन–प्रशासन की मदद नहीं पहुंच पायी थी। इस कार्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा इसके सहयोगी संगठनों ने भी सहायता करने का बीड़ा उठाया। विद्या भारती ने भी लोगों को जागरुक करना शुरु कर दिया था। इस आह्वान से प्रेरित होकर बालक बृंजित ने भी समाज हित में कुछ करने का निश्चय किया। उसने अपने माता–पिता को अपनी मंशा जाहिर की। अगले दिन सुबह ही विद्यालय के आचार्यों की टोली उनके घर आयी। उसने अपने सपनों की साइकिल के लिए संचित पैसों से भरी गुल्लक बिना किसी झिझक के उन्हे सौंप दी। गुल्लक तोड़ी गई तो उसमें 1200 रुपये निकले। बृंजित ने ये पैसे अपनी नयी साइकिल के इकट्ठा किए थे लेकिन समाज की सहायता के लिए ये पैसे देने में जरा भी देर नहीं की।

लालजी सोनारी
प्रान्तीय संवाददाता
विद्या भारती, उत्तर असम

बाजार में खत्म हुए तो आचार्य और दीदी ने बनाए मास्क

कोरोना के प्रति जनजागरण करते हुए निःशुल्क किया मास्क वितरण

भोपाल। लॉकडाउन के दौरान सरस्वती शिशु मंदिर इच्छावर की दीदी कामिनी सोलंकी और सविता यादव स्वयं के व्यय पर प्रतिदिन मास्क तैयार करती रहीं। इसके बाद मास्क उन लोगों के बीच जाकर वितरित किए गए जो इन्हें खरीदने में सक्षम नहीं थे। विद्यालय की सभी दीदी प्रतिदिन गृह कार्यों से समय निकालकर समाज सेवा में लगी रहीं। विद्यालय की संचालन समिति ने गरीबों एवं अन्य जरूरतमंद लोगों को राशन सामग्री के पैकेट वितरित किए। इन पैकेट में दाल, चावल, आटा, नमक, मसाला, तेल आदि के साथ साबुन भी उपलब्ध कराए गए।

कोरोना वायरस संक्रमण के संकट के बीच वनवासी बहुल नगर प्रतापगढ़ में एक ओर जहां मास्क मिलने बंद हो गए तो वहीं दूसरी ओर जनजातीय समाज के बहुत से लोग दुकान से मास्क खरीदने में सक्षम भी नहीं थे। ऐसे में शिशु मंदिर के आचार्य वीरेंद्र यादव एवं विद्यालय परिवार ने स्वयं मास्क बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने घर पर ही सिलाई मशीन पर मास्क तैयार करना शुरू कर दिया। वीरेंद्र यादव के अनुसार मास्क तैयार करने के बाद सबसे पहले जनजातीय बस्ती में निःशुल्क वितरित किए गए। इसी बस्ती में संस्कार केंद्र भी संचालित होता है। मास्क वितरण के साथ लोगों को कोरोना संक्रमण से बचने के उपाय भी बताए गए। उन्होंने स्वयं के व्यय पर मास्क तैयार किए।

प्रतापगढ़। विद्या भारती प्रकल्प प्रतापगढ़ में कोरोना से बचाव के लिए मास्क तैयार किए गए। सेवा भाव से समस्त आचार्यों के सहयोग से 100 मास्क बनाकर सेवा ग्राम कालोनी में वितरित किए गए। इस विषम परिस्थिति में संस्था ने नियमित रूप से सेवा के कार्य संचालित किए।

शिक्षिकाओं ने घर पर मास्क सिलकर किया वितरण

पचोर। लॉकडाउन में सरस्वती विद्या मंदिर की शिक्षिकाएं घर पर मास्क तैयार कर गरीबों को निःशुल्क वितरित करती रहीं। शिक्षिका नीतू मित्तल, स्वाति चित्रांशी एवं रेखा बेलदार ने बड़ी संख्या में मास्क तैयार किए। प्राचार्य गोविंद ने बताया कि विद्या भारती कोरोना के विरुद्ध लड़ाई में सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर पूरे देश में सेवा कार्य कर रही है। विद्यालय की ओर से कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अपने वाहन एवं भवन आदि उपलब्ध कराने की पहल की गई थी।

पूर्व छात्रों और अभिभावकों ने किया मास्क वितरण में सहयोग

बेगमगंज। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव एवं लॉकडाउन में लोगों की सहायता करने के लिए सरस्वती विद्या मंदिर के आचार्य, दीदी, छात्र–छात्राएं और उनके अभिभावक लगातार कार्य करते

रहे हैं। जरूरतमंद लोगों को आवश्यकता के अनुसार मास्क एवं भोजन वितरित किया गया। इसके साथ ही ग्रामीणों को प्रधानमंत्री जन–धन खाते में धनराशि आने के बारे में जानकारी दी गई और सोशल डिस्टेंसिंग रखने और स्वच्छता के साथ मास्क का प्रयोग करने की सलाह दी जाती रही।

विवेकानंदपुरम में संचालित सरस्वती विद्या मंदिर के पूर्व छात्र अंशुमान शर्मा आम लोगों को जागरूक करने के साथ कोरोना के संक्रमण से बचाव की जानकारी देते रहे। उन्होंने गांवों में जाकर मास्क का वितरण भी किया। विद्यालय की दीदी रेखा शिल्पकार ने पति अजय शिल्पकार के सहयोग से घर पर मास्क बनाकर जरूरतमंद लोगों को वितरित किए। विद्यालय के मौसम लोधी, दीपेश विश्वकर्मा, सुषमा चौरसिया, प्रियंका, मयंक लाहौरी आदि ने भी जरूरतमंद लोगों की हरसंभव सहायता की। विद्यार्थियों की पढ़ाई न रुके इसलिए आचार्य एवं दीदी संबंधित विषयों की पीडीएफ बनाकर व्हाट्सएप और ई–मेल पर भेजते रहे। इसके साथ ही विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की कुशलता की जानकारी भी प्राप्त करते रहे। विद्यार्थियों को आचार्य सुझाव देते रहे कि लॉकडाउन की गाइडलाइंस का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में सेवाकार्य करें।

भाऊराव देवरस प्रकल्प ने तैयार किए मास्क फ्रंटलाइन वर्कर्स को किए वितरित

लांजी। तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए शासन ने जब सभी को मास्क लगाना अनिवार्य कर दिया तो बड़ी मात्रा में मास्क की आवश्यकता महसूस हुई। ऐसी परिस्थिति में विद्या भारती द्वारा संचालित बालासाहब एवं भाऊराव देवरस प्रकल्प कारंजा में संचालित सिलाई केंद्र द्वारा बड़े पैमाने पर मास्क तैयार किए गए और आम लोगों के बीच इनका वितरण किया गया। ये मास्क ग्राम कारंजा में लोगों की सेवा में कार्यरत पुलिस प्रशासन के लोगों, डाक्टरों, गैस एजेंसी के कर्मचारियों, बैंक स्टाफ, ग्रामों में कार्यरत आशा कार्यकर्ताओं को निःशुल्क उपलब्ध कराए गए।

बस्तियों में घर–घर जाकर प्रदान किए मास्क

रीवा। सरस्वती शिशु मंदिर जेल मार्ग में कोरोना महामारी से बचाव के लिए व्यापक/भारी मात्रा में मास्क का निर्माण किया गया। सरस्वती शिक्षा परिषद् के जिला सचिव नीरज खरे ने बताया कि सरस्वती संस्कार केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे प्रकल्प रानी तालाब की बहनों ने विद्यालय में मास्क तैयार किए। इन सभी मास्क का आम लोगों के बीच निःशुल्क वितरण किया गया। मास्क वितरण उमाशंकर पाठक, रवि मिश्रा, लाडली शरण ताम्रकार, नीरज खरे, सोमेश अवस्थी, घनश्याम ताम्रकार, अजय श्रीवास्तव आदि ने बस्तियों में जाकर मास्क वितरण किया। कोरोना काल में सरस्वती विद्यालय, पूर्व छात्र और संस्कार केन्द्र समाज की सेवा में संलग्न रहे।

कौशल उन्नयन केंद्र में तैयार कराए मास्क

सिलवानी। कोरोना वायरस महामारी से बचाव के लिए विद्या भारती बिरसा मुंडा बालक छात्रावास सियरमऊ स्थित डा. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम कौशल उन्नयन केंद्र में मास्क तैयार किए गए और इनका निःशुल्क वितरण किया गया। कौशल उन्नयन केंद्र के कार्यकर्ता श्रीराम कुशवाहा, विजय जैन, विजय श्रीवास्तव व संस्कार केंद्रों के आचार्य व दीदियों ने स्वयं मास्क बनाने का निर्णय लिया और घर पर भी मास्क तैयार किये। इसके अतिरिक्त जरुरतमंदों को खाद्य सामग्री का वितरण किया और कोरोना महामारी से बचाव के लिए जागरूकता अभियान चलाया।

समाचार पत्र वितरकों के बीच वितरित किए मास्क और सेनेटाइजर

लोहरदग्गा। मनोहर लाल अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज लोहरदग्गा के शिक्षकों ने लॉकडाउन की गाइडलाइंस का पालन करते हुए अपने निवास स्थान के आसपास के क्षेत्रों और महाविद्यालय के आसपास के क्षेत्र में जरूरतमंद लोगों को मास्क का वितरण किया। इसी कड़ी में समाचार पत्र वितरकों को भी मास्क वितरित किए गए। इतनी विपरीत परिस्थितियों में अपने परिवार की चिंता छोड़कर समाचारपत्रों के कर्मचारी, न्यूजपेपर एजेंट और हाकर्स निरंतर कार्य करते रहे। ये सभी विशिष्ट प्रकार के कोरोना वारियर्स हैं। वीर शिवाजी चौक स्थित न्यूजपेपर एजेंसी के पास रहने वाली महाविद्यालय की आचार्या छवि कुमारी ने हाकर्स और एजेंसी के कर्मचारियों को मास्क वितरित किए। अलग–अलग क्षेत्रों मे रहने वाले शिक्षक और शिक्षिकाएं अपने–अपने क्षेत्रों में जरूरत के अनुसार मास्क का वितरण करते रहे। मास्क तैयार करने में शिक्षिकाओं के अलावा वनवासी कल्याण केंद्र की महिला कार्यकर्ताओं ने भी सहयोग किया।

मास्क वितरण के साथ चलाया जागरूकता अभियान

डोंडीलोहारा। लॉकडाउन के समय वनांचल शिक्षा न्यास रायपुर, छत्तीसगढ़ के सहयोग से जनजातीय क्षेत्रों में सेवा कार्य किए गए। जिला बालोद में संचालित सरस्वती शिक्षा केंद्र के तत्त्वावधान में कोरोना महामारी से बचाव के लिए मास्क का निर्माण किया गया। आचार्यों ने लोगों को मास्क वितरित किए और दीवारों पर लेखन कर कोरोना से बचाव का संदेश दिया। इसके साथ ही साफ–सफाई का अभियान चलाया गया। आचार्यों ने कंटेनमेंट जोन के प्रवेश द्वारों पर रहकर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई। बालोद जिले के तीन संकुल डौण्डी मंगचुवा, डौण्डीलोहारा के 49 केंद्रों में अभियान चलाया गया। आचार्यों ने प्रधानमंत्री राहत कोष में 4 हजार 572 रुपये दान किए। जिला समन्वयक भूषण पाल आर्य ने सभी आचार्यों से अभियान में शामिल होने का आह्वान किया।

ऑनलाइन शिक्षण के साथ समाज सेवा में भी रही भागीदारी

मनोहर लाल अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन के साथ–साथ सेवा कार्यों में भी अग्रणी रहा। प्राचार्य उत्तम मुखर्जी ने बताया कि 12वीं के विद्यार्थियों को व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लगातार पाठ्य–सामग्री और संबंधित वीडियो उपलब्ध कराए जाते रहे। यूट्यूब की सहायता के साथ ही आचार्य स्वयं भी शैक्षणिक वीडियो तैयार कर विद्यार्थियों तक पहुंचाते रहे। इसके साथ ही प्रतिदिन के कार्यों और आगामी योजनाओं को लेकर वीडियो कांफ्रेंसिंग से विद्यार्थियों से संवाद करते रहे।

आइसोलेशन वार्ड के लिए समर्पित किए विद्यालय भवन और संसाधन

मुंगेर। शिक्षा के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में भी विद्या भारती सदैव अग्रणी रही है। विद्या भारती ने इसकी मिसाल कोरोना काल में भी पेश की। कोरोना महामारी के कारण जब पूरा देश लॉकडाउन की स्थिति से गुजर रहा था और मरीजों की संख्या लगातार तेजी से बढ़ती जा रही थी तब ऐसी विपदा की स्थिति में विद्या भारती ने आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए अपने विद्यालय भवनों को प्रशासन को समर्पित कर दिया था।

विद्या भारती दक्षिण बिहार की इकाई भारती समिति के प्रदेश सचिव गोपेश कुमार घोष के अनुसार कोरोना से निपटने के लिए विद्या भारती के दक्षिण बिहार में चल रहे 250 सरस्वती शिशु मंदिरों को समस्त संसाधनों के साथ आइसोलेशन वार्ड के रूप में उपयोग करने के लिए सरकार को समर्पित कर दिया गया था। विपदा की इस घड़ी में विद्या भारती सरकार को हरसंभव सहयोग देने के लिए तैयार रही है। विद्या भारती की ओर से यह भी कहा गया था कि स्थानीय प्रशासन इन विद्यालयों से जुडे आचार्यों, प्रधानाचार्यों, कर्मचारियों, समिति सदस्यों, विद्वत परिषद्, पूर्व छात्रों, मातृ भारती के कार्यकर्ताओं आदि का सहयोग भी आवश्यकतानुसार सेवा कार्य के लिए ले सकता है।

इसके अलावा सहयोग के इस क्रम में आनंदराम ढाढनियां सरस्वती विद्या मंदिर भागलपुर के समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने एक दिन का मानदेय पीएम केयर फंड में समर्पित किया।

शिशु मंदिर परिवार ने की विशेष पहल

अशोकनगर, मध्य प्रदेश। कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन की स्थिति में प्रशासन के साथ कई स्वयंसेवी संस्थाएं और समाजसेवी प्रभावित परिवारों की सहायता एवं आमजन को संक्रमण से बचाने के लिए लगातार कार्य करते रहे हैं। शिशु मंदिर परिवार के सदस्य बस्तियों में पंहुचकर खाद्य सामग्री, मास्क और सैनेटाईजर का वितरण करते हुए कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए आम लोगों को जागरूक करते रहे हैं। शिशु मंदिर परिवार ने जिला प्रशासन से भी निवेदन किया था कि कोरोना से जंग में विद्यालय परिसर का उपयोग आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए कर सकते हैं और यही नहीं संस्था के वाहनों और अन्य साधनों का भी निःशुल्क उपयोग किया जा सकता है।

प्रशासन को संदेश भेजकर स्वयं किया निवेदन

शिवपुरी। कोविड–19 महामारी और लॉकडाउन के दौरान जहां शासन और प्रशासन अपने स्तर पर लोगों की सेवा में लगा हुआ था तो वहीं विद्या भारती ने अपने विद्यालयों को आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए उपलब्ध कराने की पहल की थी। विद्या भारती ने कहा था कि शिवपुरी विभाग के 17 विद्यालय आवश्यकता पड़ने पर आइसोलेशन वार्ड के लिए उपलब्ध रहेंगे। विद्यालय प्रबंधक ज्ञान सिंह कौरव के अनुसार उन्होंने एडिशनल कलेक्टर कृतिका भीमावत को व्हाट्सप पर संदेश भेजकर अवगत कराया था कि विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती विद्यापीठ आवासीय में 50 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर अस्पताल चौराहा शिवपुरी में 20 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर पिछोर में 25 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर कोलारस में 7 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर बदरवास में 7 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर नरवर में 4 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर करैरा में 10 कमरे, सरस्वती शिशु मंदिर भौती में 6 कमरे उपलब्ध हैं। इनका उपयोग प्रशासन अपनी आवश्यकता के अनुसार कर सकता है। इसके साथ ही विद्या भारती अन्य जिलों में भी यह सुविधा देने के लिए तैयार है।

मध्य भारत प्रांत में राहत शिविरों के लिए उपलब्ध कराए विद्यालय

भोपाल। कोरोना संकट के दौरान मदद के लिए विद्या भारती ने बड़ा कदम उठाया था। विद्या भारती ने मध्य भारत प्रान्त के ग्वालियर, गुना, भोपाल तथा वहरदा में स्थित अपने 80 विद्यालयों के भवनों को आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए उपलब्ध कराने को कहा था। विद्या भारती का कहना था कि इन विद्यालय परिसरों का प्रशासन जरूरत के अनुसार उपयोग कर सकता है। यहां आवश्यकतानुसार आइसोलेशन वार्ड या राहत शिविर आदि बनाए जा सकते हैं। विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त के प्रान्त संगठन मंत्री हितानंद शर्मा के अनुसार कोरोना महामारी से निपटने के लिए स्कूल भवन बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए सभी स्कूल भवनों को प्रशासन को सौंपने का निर्णय लिया गया है।

विद्या भारती मालवा ने खोले द्वार उपलब्ध कराए 182 विद्यालय

उज्जैन। कोरोना वायरस से लड़ने के लिए सरकार के साथ विद्या भारती मालवा ने अपने द्वार खोल दिए। प्रशासन से अनुरोध किया कि कोरोना पीड़ितों की सहायता के लिए विद्यालय भवनों के साथ ही समस्त संसाधनों, वाहनों आदि का उपयोग भी जरूरत पड़ने पर कर सकते हैं। जिस समय कोरोना मरीजों की बढ़ती संख्या से निपटने के प्रयास सरकार अपने स्तर पर कर रही थी उस समय विद्या भारती मालवा प्रान्त ने सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर हरसंभव सहयोग करने की पहल की। विद्या भारती मालवा से सम्बद्ध सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान के सचिव प्रकाशचन्द्र धनगर ने कहा कि सभी सरस्वती विद्या मंदिर समाज के सहयोग से खड़े हुए हैं और समाज पर आई इस विपदा की घड़ी में हम समाज के साथ हैं। इसी हेतु हमारे सभी विद्यालय भवनों, समस्त संसाधनों, वाहनों आदि का उपयोग कोरोना महामारी को हराने के लिए प्रशासन कर सकता है। उन्होंने कहा कि उज्जैन एवं इन्दौर संभाग में विद्या भारती के 182 विद्यालय संचालित हैं। इन सभी विद्यालयों के भवनों आदि का उपयोग आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए किया जा सकता है। इस उद्देश्य से विद्या भारती की ओर से समस्त विद्यालयों की जानकारी, उनके प्राचार्यों के नाम और मोबाइल नंबर, कमरों की संख्या आदि मध्य प्रदेश प्रशासन को प्रदान कर दी गई थी। विद्यालय संचालन में लगे सभी पदाधिकारियों के नाम एवं पतों की जानकारी भी प्रशासन के अधिकारियों को दे दी गई थी।

आदर्श क्वारंटाइन सेंटर बना धाबा छात्रावास

ईश प्रार्थना के साथ शुरू होता था दिन भोजन के लिए स्वयं बनाए दोने व पत्तल

प्रतिदिन किया योगासन और प्राणायाम, अपने हुनर के अनुसार करते रहे श्रमदान

भोपाल। कोरोना माहमारी से बचाव के लिये लागू लॉकडाउन के कारण देश भर में मजदूर जहां–तहां अटके थे। सरकार द्वारा उन्हें वापस उनके घर पहुंचाने का क्रम शुरू किया गया था, लेकिन महामारी की आशंका के कारण उन्हें अपने ग्रामों के आसपास ही 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन में रखा गया था। इसी प्रकार का एक क्वारंटाइन केंद्र विद्या भारती के प्रद्युम्न धोटे स्मृति जनजाति छात्रावास धाबा में भी बनाया गया था। यह केंद्र बैतूल जिले के भैंसदेही विकास खंड के जनजाति ग्राम में स्थित था। भारत भारती शिक्षा संस्था द्वारा यहां 40 जनजाति विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। लॉकडाउन की वजह से छात्रावास रिक्त होने के कारण विद्या भारती ने इस भवन को प्रशासन को उपयोग के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराया था। प्रशासन ने इस छात्रावास में क्वारंटाइन केंद्र बनाया था जहां छात्रावास के कर्मचारी श्रमिक यात्रियों की सेवा में दिन–रात लगे रहे थे। छात्रावास में बने इस क्वारंटाइन केंद्र में श्रमिकों की दिनचर्या देखकर एक बार किसी को भी लगता कि यह कोई योग केन्द्र है। यहाँ प्रतिदिन दिनचर्या ईश प्रार्थना के साथ प्रारम्भ होती और फिर छात्रावास के अधीक्षक रामनरेश दोहरे व विजय खातरकर श्रमिकों को प्रतिदिन एक घण्टे योगासन और प्राणायाम का अभ्यास कराते थे। भोजन के समय सभी भोजन मन्त्र बोलते थे।

यह सब देखकर श्रमिकों के मन में आया कि संस्था हमारे लिए इतना कुछ कर रही है तो क्यों न वे भी संस्था की भलाई के कुछ काम करें और इसके बाद सभी श्रमिक जुट गए अपने मिशन में। जिसको जो काम आता था उसको करने का संकल्प लिया। दो श्रमिकों ने आसपास से खजूर के पत्ते लाकर झाड़ू बनाना शुरू किया तो कुछ श्रमिक छात्रावास की पुताई में लग गए। स्वयं के भोजन करने के लिए श्रमिक प्रतिदिन दोने और पत्तल बनाते थे ताकि बर्तनों का कम से कम उपयोग हो और पानी भी कम खर्च हो। कुछ महिला श्रमिक छात्रावास परिसर में लगी हरी सब्जियों की निराई–गुड़ाई में लग गईं। श्रमिकों ने कहा कि उन्हें दिन भर खाली बैठना अच्छा नहीं लगता और जब ये संस्था हमारी सेवा कर रही है तो बदले में हमें भी तो कुछ करना चाहिए। इसलिए जो काम हमें आते हैं, उसे खाली समय में सेवा मानकर कर रहे हैं। छात्रावास में श्रमिकों के भोजन व ठहरने की उत्तम व्यवस्था की गई थी। उन्हें पलंग और बिस्तर उपलब्ध कराए गए थे। छात्रावास में आए एक सप्ताह से अधिक का समय हो जाने पर सभी एक परिवार के अंग बन गए थे। ये सभी श्रमिक महाराष्ट्र प्रान्त से आए थे और धाबा के आसपास के ग्रामों के निवासी थे।

विद्या भारती का अभिनव प्रयोग, शुरू की मोहल्ला पाठशालाएं

भोपाल। कोरोना संक्रमण काल में लागू लॉकडाउन के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित न हो, इसे ध्यान में रखते हुए जहां ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था की गई तो वहीं मोहल्ला पाठशाला के रूप में एक अभिनव प्रयोग भी किया गया। मोहल्ला पाठशाला का अनूठा प्रयास विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त ने किया।

कोरोना काल में विद्या भारती द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों ने विद्यार्थियों के मोहल्लों में जाकर उन्हें वहीं पर शिक्षा प्रदान करने की पहल की। इसके लिए शिक्षकों ने बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाए और साप्ताहिक कक्षाओं का आयोजन किया। यह प्रयास उन दिनों वरदान साबित हुआ जब शिक्षण व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गई थी या इसके लिए केवल ऑनलाइन माध्यम का सहारा लिया जा रहा था। ऑनलाइन शिक्षण की अपनी सीमाएं हैं, ऐसे में बच्चों का शिक्षण कार्य विद्यालय की तरह सुचारु रूप से चल सके और उससे कहीं अधिक आत्मीय वातावरण में हो सके, इस दिशा में मोहल्ला पाठशाला के रूप में मध्य भारत प्रान्त द्वारा की गई पहल की मीडिया और समाज, सभी ने सराहना की।

मोहल्ला पाठशालाएं विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुईं, क्योंकि इससे न केवल बच्चों की शिक्षण व्यवस्था सामान्य हुई, बल्कि लॉकडाउन के दौरान लंबे समय तक घरों में कैद रहे बच्चों को मानसिक रूप से बड़ा संबल भी मिला। जिस समय विशेषज्ञ बच्चों को मानसिक तनाव आदि विकारों से दूर रखने के लिए काउंसलिंग दे रहे थे, उस समय मोहल्ला पाठशालाओं ने न केवल बच्चों को मानसिक तनाव से दूर रखने में प्रमुख भूमिका निभाई, बल्कि उन्हें कई तरह के रचनात्मक कार्यों को सीखने और उनके व्यावहारिक उपयोग की प्रेरणा भी दी।

बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर किया शिक्षण

शिक्षकों ने विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के छोटे–छोटे समूह बनाए और उनके ही मोहल्ले में उपयुक्त स्थान का चयन कर पाठशाला शुरू कर दी। मोहल्ला पाठशालाओं में शारीरिक दूरी का पालन करते हुए कक्षाएं चलाई गईं। इन कक्षाओं में आचार्यों ने एक विषय की कक्षाएं लगातार 8 दिन तक चलाईं और बच्चों से पुरानी कक्षा में दिए गए कार्य पूर्ण होने की जानकारी भी लेते रहे। शिक्षक बच्चों को किसी एक विषय की रफ या मूल कापी बनवाकर पढ़ाई कराते रहे।

40 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं को मिला लाभ

शाब्दिक अर्थ में भले ही मोहल्ला पाठशाला से आशय शिक्षण के लघु स्वरूप के रूप में आता है, लेकिन इसका दायरा बहुत विस्तृत रहा है। केवल मध्य भारत प्रान्त में ही मोहल्ला पाठशालाओं के माध्यम से 40 हजार से अधिक विद्यार्थियों के लिए कक्षाओं का संचालन किया गया और उन्हें शिक्षा प्रदान की गई। विद्या भारती के शिक्षण संस्थानों से जुड़े लगभग 2 हजार 365 आचार्यों ने लाकडाउन के दौरान पूरे प्रान्त में मोहल्ला पाठशालाओं का संचालन किया। मोहल्ला पाठशालाओं में केवल शिक्षण कार्य ही नहीं किया गया बल्कि शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार आए, इसके लिए लगातार परीक्षण भी किए गए। इसके साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से कई प्रकार की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित करके बच्चों का सामाजिक और सांस्कृतिक ज्ञान बढ़ाने का कार्य भी किया गया।

शिशु शिक्षा समिति की पहल

आइसोलेशन वार्ड के लिए दिया विद्यालय भवन

गुवाहाटी। देश के दूसरे राज्यों की तरह कोरोना के खिलाफ असम सरकार की लड़ाई में मदद के लिए विद्या भारती की असम इकाई आगे आई। शिशु शिक्षा समिति असम के संगठन मंत्री हेमन्त मजूमदार ने कहा कि जरूरत पड़ने पर समिति अपने विद्यालयों को आइसोलेशन सेंटर बनाने के लिए प्रशासन को देगी। प्रशासन चाहे तो राहत कार्य के लिए हमारे विद्यालय परिसरों का उपयोग कर सकता है। सरकार ट्रेनों और बसों में आइसोलेशन वार्ड बना रही है जिसमें काफी पैसे खर्च हो रहे हैं। अगर विद्यालयों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जाएं तो खर्च काफी कम होगा।

शिशु शिक्षा समिति असम के महामंत्री कुलेन्द्र कुमार भागवती ने बताया कि कोरोना महामारी के विरुद्ध अपने विद्यालय भवनों को देने के अलावा हम प्रशासन को अन्य तरीकों से भी सहयोग करने के लिए तत्पर हैं। संकट की इस घड़ी में हम सभी को आगे आना चाहिए। अभी विद्यालय बन्द हैं। इसलिए इन बन्द पड़े विद्यालयों के उपयोग का इससे अच्छा दूसरा कार्य नहीं हो सकता।

विद्यालय चला गांव की ओर

उत्तराखण्ड की भौगोलिक स्थिति विशिष्ट है जिसमें अधिकांश क्षेत्र दुर्गम एवं पहाड़ी होने के कारण अनेक समस्याएं आयीं। ऐसे में प्रांत की टोली ने विचार किया कि क्यों न हमारे आचार्य, प्रबंध समिति के लोग गांवों में ही शैक्षिक गतिविधियों को आगे बढ़ायें। शिक्षा हर घर तक पहुंचे ये हमारा प्रयास रहता है और हमारा लक्ष्य भी है। उन स्थानों पर जहां मोबाइल नेटवर्क की सुविधा उपलब्ध नहीं है और अगर है भी तो इंटरनेट का चलना असंभव है। इस तरह की कई परेशानियों को देखते हुए ''विद्यालय चला गांव की ओर'' संकल्पना के साथ आचार्य दूरस्थ क्षेत्रों में घर–घर जाकर एक सप्ताह कार्य एक ही बार देकर आते थे तथा जहां संभव हो सकता था, वहां सप्ताह में 2 से 3 बार उसका निरीक्षण करने जाते थे। आचार्य परिवार की मेहनत के फलस्वरूप 622 विद्यालयों ने 2,560 केन्द्रों पर 4,463 आचार्यों के माध्यम से 66,341 भैया–बहिनों का अध्यापन कार्य कराया।

जोधपुर प्रान्त

मोहल्ला शिक्षण केन्द्रों से बना सकारात्मक माहौल

लॉकडाउन के समय कार्यकर्ताओं के साथ विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बच्चे विद्यालय नहीं आ सकते परन्तु आचार्य तो बच्चों के घर जा सकते हैं। इसलिए 7 से 10 तक समूह में शिक्षण की योजना का प्रारूप बना और जिला अनुसार प्रधानाचार्यों की बैठक आयोजित करके मोहल्ला/बस्ती शिक्षण की कल्पना रखी गई। कुछ नवाचारी प्रधानाचार्यों द्वारा योजनापूर्वक मोहल्ला शिक्षण केन्द्र प्रारम्भ कर दिए गए, जो उदाहरण बने। प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जैसे मोहल्ला शिक्षण केन्द्र के लिए अभिभावकों के घर का चयन, उनसे अनुमति लेना, भैया–बहिनों को भेजने हेतु अभिभावकों को तैयार करना, आचार्यों की मानसिकता का निर्माण करना, एक ही आचार्य द्वारा एक से अधिक कक्षाओं के भैया–बहिनों को शिक्षण कराना, प्रशासन द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों एवं निर्देशों का पालन करना आदि अनेक चुनौतियां आई और इन्हीं में से रास्ते भी निकले। अनेक आचार्यों–प्रधानाचार्यों ने प्रयोग भी किए और शिक्षण हेतु अभिभावकों, पूर्व छात्रों एवं समिति कार्यकर्ताओं से सहयोग लेना तय किया गया। जब शिक्षण होने लगा तो अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए ऐसी व्यवस्था न होने से वे विद्यार्थी भी कुछ स्थानों पर अपने केन्द्रों पर आने की अनुमति चाहने लगे। विद्या भारती के आचार्य जीवन पर संकट होने के बावजूद बच्चों की शिक्षा की चिन्ता कर रहे हैं, इससे सकारात्मक माहौल बना। 15 जुलाई 2020 तक जोधपुर प्रान्त में 2327 मोहल्ला शिक्षण केन्द्र प्रारम्भ हो गए जिन पर 25, 635 भैया–बहिन अध्ययन हेतु आने लगे। इसके बाद 15 अगस्त तक 4,422 केन्द्रों पर 37,882 भैया–बहिन और 15 सितम्बर तक 5,289 केन्द्रों पर 46,165 भैया–बहिन नियमित रूप से आने लगे। जनवरी 2021 में भी 1701 ऐसे केन्द्र संचालित होते रहे जहां 24,229 भैया–बहिन शिक्षण प्राप्त करते रहे। मोहल्ला शिक्षण केन्द्रों के कारण विपरीत परिस्थितियों में भी 4,779 नवीन प्रवेश हुए जिनमें से अरूण कक्षा में भी हुए। मोहल्ला शिक्षण केन्द्रों के कारण अभिभावक जुड़े रहे और अन्तिम कक्षाओं के अतिरिक्त बहुत कम विद्यार्थी विद्यालय छोड़कर गए। अपने विद्या मंदिरों के मोहल्ला केन्द्रों से प्रेरित होकर शासकीय विद्यालयों में भी अध्यापकों द्वारा घर–घर जाकर गृहकार्य देने एवं जांचने की योजना पर काम होने लगा। जोधपुर महानगर में मोहल्ला शिक्षण केन्द्र के अनुसार मातृ सम्मेलन की योजना बनी। अब तक 90 ऐसे मोहल्ला अनुसार मातृशक्ति सम्मेलन हो गए हैं जिनमें गत वर्ष की तुलना में लगभग दोगुनी माताओं ने सहभागिता निभाई है।

गंगा विष्णु
प्रान्त निरीक्षक,
विद्या भारती शिक्षा संस्थान, जोधपुर

आचार्यों ने दी जरूरतमंद बच्चों की आधी ट्यूशन फीस

दिल्ली। कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान राव मेहरचंद सरस्वती विद्या मंदिर भलस्वा दिल्ली की आचार्या ने एक दिन विद्यालय के एक छात्र के घर पर फीस से संबंधित जानकारी हेतु फोन किया तो पता चला कि विद्यालय में ही पढ़ने वाले कुछ छात्रों के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो गई है कि उनके पास खाने के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री नहीं है। ऐसे में आचार्या ने उन परिवारों के लिए राशन की व्यवस्था कर उनके घर तक पहुंचाया। इसी प्रकार विद्यालय के एक छात्र के अभिभावक को जब पता चला कि उनके क्षेत्र में कुछ परिवारों को सहायता की आवश्यकता है तो उन्होंने कुछ अन्य अभिभावकों के साथ मिलकर जरूरतमंद परिवारों के लिए राशन की व्यवस्था की। कुछ अभिभावक सैनिटाइजर एवं काढ़ा वितरित करने के लिए आगे आये और उन्होंने हर जरूरतमंद की सहायता की। कई आचार्यों ने मास्क उपलब्ध न हो पाने पर घर में उपलब्ध कपड़ों से मास्क तैयार किए और जरूरतमंद लोगों को वितरित किये। कुछ अभिभावकों ने मिलकर प्रतिदिन लगभग 10 हजार लोगों के भोजन की व्यवस्था की। विद्यालय के लगभग सभी आचार्यों ने जरूरतमंद बच्चों की आधी ट्यूशन फीस देने का निर्णय लिया जो इन बच्चों के अभिभावकों के लिए बहुत मददगार सिद्ध हुआ।

लॉकडाउन में चलीं ऑनलाइन कक्षाएं

विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया ई–कंटेंट

मुंगेर। कोरोना संक्रमण को लेकर लॉकडाउन के कारण छात्र–छात्राओं के समक्ष पढ़ाई की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई थी। इस समस्या का समाधान करने और संक्रमण काल में भी बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें, इसके लिए विद्या भारती से संबद्ध भारतीय शिक्षा समिति बिहार द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मंदिर मुंगेर ने आनलाइन शिक्षण की व्यवस्था शुरू की। भारतीय शिक्षा समिति के प्रदेश सचिव गोपेश कुमार घोष ने इस संबंध में जूम ऐप की सहायता से सरस्वती विद्या मंदिर मुंगेर के आचार्यों के साथ समीक्षात्मक बैठक की। इस बैठक में उन्होंने कहा था कि कोरोना संक्रमण काल लम्बा चलने की आशंका है। ऐसे में विद्यालय के आचार्यों को ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था करनी चाहिए। इस समय अभिभावक भी बच्चों को अधिक समय दे रहे हैं जिसका प्रत्यक्ष लाभ बच्चों को मिल रहा है। विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में नित नूतन प्रयोग कर रही है। प्रान्तीय कार्यालय द्वारा ई–लर्निंग से संबंधित सामग्री तैयार कर विद्यालयों तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

शिक्षण प्रमुख नवनीत चन्द्र मोहन, आशीष कुमार, आचार्य विलय कुमार और दीदी खुशबू झा के अनुसार कक्षा प्रथम से 12वीं तक के लगभग 1500 विद्यार्थियों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर विषयवार शिक्षण सामग्री की पीडीएफ बनाकर प्रेषित की गई। इसके अलावा जूम ऐप, यूट्यूब, ऑडियो–वीडियो के माध्यम से भी छात्रों के लिए निश्चित समय–सारिणी के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था की गई। ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था को और उपयोगी बनाने के लिए नवीन प्रयोग भी किए गए।

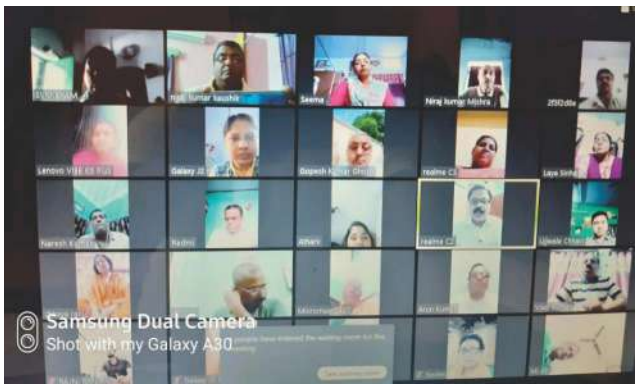

व्हाट्सएप को बनाया अध्ययन और अध्यापन का माध्यम

इमामगंज। इमामगंज प्रखंड क्षेत्र के रानीगंज स्थित सरस्वती शिशु मंदिर ने बच्चों के लिये व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से पढ़ाई की व्यवस्था शुरू की। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाचार्य रंजीत कुमार के अनुसार, विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए सभी कक्षा आचार्यों ने अपने–अपने क्लास का व्हाट्सएप ग्रुप तैयार किया और इससे सभी बच्चों के अभिभावकों को जोड़ा। इन व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से नियमित रूप से बच्चों को गृहकार्य और अध्ययन सामग्री प्रेषित करने की पहल की गई। इससे लाभ यह हुआ कि बच्चों के गृहकार्य और अध्ययन आदि पर अभिभावक भी नजर रख सकें और बच्चों को सामर्थ्य के अनुसार सहयोग कर सकें। दूसरी ओर, लाकडाउन के समय भी बच्चों के अध्ययन में निरंतरता बनी रही।

कोविड–19 की रोकथाम के लिए जब देशभर में लॉकडाउन लगा था तो ऐसे में बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ना स्वाभाविक था, लेकिन यह प्रभाव कैसे कम किया जा सके, इसके लिए विद्या भारती ने उल्लेखनीय कार्य किया।

सरस्वती विद्या निकेतन में किया डिजिटल पाठदान

हाइलाकांदी (असम)। लॉकडाउन के समय सभी शिक्षण संस्थान बंद थे। ऐसे में विद्यार्थियों के भविष्य को देखते हुए करीमगंज के सरस्वती विद्या निकेतन में डिजिटल पाठदान की व्यवस्था की गई। विद्यालय के शिक्षकों–शिक्षिकाओं ने नियमित रूप से 1200 विद्यार्थियों के लिए डिजिटल पद्धति से शिक्षण कार्य किया। प्रधानाचार्य अंजन गोस्वामी के अनुसार लॉकडाउन के समय छात्र–छात्राओं को शिक्षादान किस तरह से दिया जाए, इसको लेकर चर्चा करने के बाद डिजिटल पाठदान का निर्णय लिया गया था। इसके बाद इंटरनेट के माध्यम से छात्र–छात्राओं को शिक्षादान किया गया। इसके लिए व्हाट्सएप का सहारा लिया गया। वहीं, करीमगंज दौरे के दौरान सरस्वती विद्या निकेतन की ओर से मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल को आरोग्य निधि के लिए 19 हजार 861 रुपये का चेक प्रधानाचार्य अंजन गोस्वामी द्वारा सौंपा गया।

पूर्व छात्रों ने किया निर्बल विद्यालयों का सहयोग

40 लाख रुपये की दी आर्थिक सहायता

चित्तौड़ प्रान्त। वैश्विक महामारी कोरोना के कारण देश में भी दीर्घ अवधि तक लॉकडाउन रहा। जब लॉकडाउन प्रारंभ हुआ तो उस समय इतना पता नहीं था कि यह कितनी लंबी अवधि तक रहेगा। जब यह बात ध्यान में आई कि लॉकडाउन तो लंबे समय तक रहने वाला है तो विद्या भारती राजस्थान की ओर से निर्बल विद्यालयों हेतु आर्थिक व्यवस्था के लिए संकेत किया गया। तब चित्तौड़ प्रान्त की ओर से योजना बनने लगी और तैयारी करते समय स्थापित पूर्व छात्रों की ओर ध्यान गया। प्रान्त में सभी प्रवासी कार्यकर्ताओं से दूरभाष पर चर्चा की गई और स्थापित पूर्व छात्रों की सूची बनाई गई। अप्रैल माह में योजना बनी कि इन पूर्व छात्रों से ऑनलाइन बैठक कर संवाद किया जाए और भगवत कृपा से यह योजना सफल होती प्रतीत हुई। मैंने स्वयं भी 26 विद्यालयों के लगभग 900 स्वपोषित पूर्व छात्रों से संवाद किया। उनको अपने क्षेत्र के निर्बल विद्यालयों की जानकारी देते हुए आर्थिक सहयोग का आह्वान किया। इन 26 विद्यालयों से 600 से अधिक स्थापित भैया–बहिनों ने लगभग 40 लाख रुपये की धनराशि का सहयोग किया। इस कष्टप्रद समय में इन भैया–बहनों ने निर्बल विद्यालयों के आचार्यों के कष्ट को समझा और अपनी सामर्थ्य अनुसार सहयोग किया और अब यही भैया–बहिन अपने–अपने विद्यालयों से किसी न किसी कार्यक्रम में नियमित रूप से जुड़ रहे हैं। इस कोरोना कालखंड के समय मुझे ऐसे पूर्व छात्रों से जुड़कर कार्य करने का एक सुखद अनुभव रहा।

गोविंद कुमार
संगठन मंत्री
विद्या भारती, चित्तौड़ प्रान्त

विद्या विकास समिति रांची ने 1.30 लाख परिवारों को वितरित की आर्सेनिक दवा

मधुपुर। विद्या विकास समिति रांची के तत्वावधान में एक लाख तीस हजार परिवारों के लगभग 8 लाख लोगों के बीच होम्योपैथिक दवा आर्सेनिक एल्बम 30 का वितरण किया गया। विद्या विकास समिति रांची के प्रदेश सचिव मुकेश नंदन जी एवं प्रदेश मंत्री रामावतार नारसरिया जी ने गूगल मीट एप पर महेन्द्र मुनि सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, मधुपुर संकुल के सभी विद्यालयों के साथ ऑनलाइन बैठक कर इस दवा के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारत सरकार के आयुष मंत्रालय का कहना है कि होम्योपैथी की दवा आर्सेनिक एल्बम 30 का 3 दिन तक नियमित रूप से सेवन करने से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न होती है और इससे वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से भी बचा जा सकता है। प्रदेश सचिव मुकेश नंदन जी के निर्देशानुसार सभी संकुलों के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों द्वारा आर्सेनिक एल्बम 30 दवा का वितरण किया गया।

भारतीय श्री विद्या परिषद्

एक और कदम समाज की ओर

पश्चिम उत्तर प्रदेश। एक ऐसा वैश्विक संकट जो हमारी पीढ़ी ने क्या हमारे पूर्वजों ने भी न देखा न सुना, पर कहते हैं कि हर अंधेरी रात के पीछे उजाला जरूर होता है। वैसे ही इस महामारी ने जिसे वैज्ञानिकों ने कोविड–19 का नाम दिया था, आमजन को जीवन के वे पक्ष दिखलाए, जिन्हें लोग भूल गए थे या भूलते जा रहे थे। 25 मार्च 2020 से प्रारंभ हुए लॉकडाउन ने सभी गतिविधियों को सहसा रोक दिया। कल–कारखाने, उद्योग–धंधे, यातायात–परिवहन, शैक्षणिक संस्थान एवं कार्यालय सब ठहर गये। परिणामतः रोजगार की तलाश में आये लोगों में आजीविका की समस्या उत्पन्न हो गई। शिक्षा संस्थान बन्द होने से विद्यार्थियों की पढाई पर असर पड़ा। परन्तु उपलब्ध संसाधनों से मानवता की सहायता हेतु मानव मात्र ने अपने हाथ बढाये, जिसमें भारतीय श्री विद्या परिषद् पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यालय परिवार भी शामिल हैं।

सहायता केन्द्र बनाकर विद्यालय परिवारों ने समाज के सहयोग से अपने–अपने क्षेत्र में जरूरतमंद लोगों तक खाद्य–सामग्री का वितरण किया। भोजन वितरण का कार्य न सिर्फ इंसानों के लिए बल्कि पशुओं के लिए भी किया गया। विद्यालय परिवार की शिक्षिकाओं व अभिभावकों एवं संस्कार केन्द्रों द्वारा निर्मित मास्क का न सिर्फ वितरण किया गया वरन् उनके उपयोग का सही तरीका तथा स्वच्छता का महत्व बताया गया। घर पर बैठे बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण प्रदान किया गया और उन्हें नई–नई कलाएं भी ऑनलाइन माध्यम से सिखाई गईं। समय–समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित कर सिखाने की दक्षता और सीखने की क्षमता का आकलन भी किया गया।

बच्चों ने बनाई लॉकडाउन डायरी, अपने घर के प्रति हुआ उत्तरदायित्व का बोध

लॉकडाउन के समय बच्चों को अपने अभिभावकों की सहायता हेतु प्रेरित किया गया, जिससे उनकी घर के कार्यों में रुचि बने और घर के प्रति अपने उत्तरदायित्व का बोध हो। इसी हेतु से बच्चों द्वारा लॉकडाउन डायरी बनवाई गई, जिसमें उन्होंने प्रतिदिन के घरेलू कार्यों को लिखा और साझा किया। इसी क्रम

में सुरक्षा नियमों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं द्वारा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्वों का आभास कराया गया। आचार्यों के प्रशिक्षण हेतु भी विद्या–भारती ई–पाठशाला की प्रेरणा से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये। प्रतिदिन सोशल मीडिया एवं संवाद–सम्पर्क हेतु उपयोग किये जाने वाले मोबाइल फोन को एक वैकल्पिक एवं अनुपम शिक्षण साधन बना दिया गया। नये ज्ञान व अनुभव की चमक एवं अपने विद्यार्थियों से दूर रहकर भी बेहतर तरीके से उनसे संवाद बनाये रखने एवं शिक्षा प्रदान करने की संतुष्टि हमारी शिक्षिकाओं के चेहरे पर दिखाई दी।

आपदा को अवसर में बदला

'न भूतो एवं संभवतः न भविष्यति' प्रकार की इस आपदा में निस्संदेह बहुत कठिनाइयां आईं, परन्तु इस आपदा को अवसर के रूप में लेने का भारतीय श्री विद्या परिषद् पश्चिम उत्तर प्रदेश ने अपने सीमित संसाधनों द्वारा साहस किया और करके भी दिखाया। इस विषमकाल ने हमें अपनी संभावनाओं व क्षमताओं का दर्पण दिखाया और मन में कुछ करने की ठान कर समाज के हर स्तर पर अपने दायित्वों को पूर्ण करने का दायित्वबोध कराया। इसी विश्वास के साथ हम सभी अपने कर्तव्यपथ पर निरन्तर प्रगतिशील होंगे।

डा. विद्योत्तमा
मंत्री, भारतीय श्री विद्या परिषद, पश्चिम उत्तर प्रदेश

आपदा में अवसर

दिल में है यदि आग लक्ष्य का पंथ स्वयं आएगा...

कोरोना काल में मशरूम की खेती करके
बढ़ाई विद्यालय की आय
शिशु मंदिर मद्नापुर के प्रधानाचार्य
दीपक कटियार ने तलाशा मार्ग

गीत लिखने वाले ने भी कदाचित नहीं सोचा होगा कि रचना की प्रभावोत्पादकता कितनी परिणामकारी एवं कल्याणकारी होती है। जब वैश्विक धरातल पर समूची मानवता को कर्तव्य विमूढ़ बनाने वाली वैश्विक महामारी कोरोना शिखर पर थी तब नित नूतन अंगडाई लेने वाली जिन्दगी अपने ही घर में कैद हो गई थी। भविष्य अंधेरे में नजर आ रहा था। कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मजदूर सड़क पर थे। फैक्ट्रियां सुनसान थीं। स्कूल कालेज बच्चों की किलकारियों को सुनने के लिए तरस रहे थे। रोजगार बन्द हो गये थे। नौकरियां छूट रही थीं। चारों ओर अवर्णनीय निराशा का वातावरण था। तब उपरोक्त पंक्ति एक युवा के ध्यान में आयी। इतना ही नही अयोध्या सिंह उपाध्याय की कविता 'कर्मवीर' की पंक्तियाँ–

> "देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं,
> रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।
> काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं,
> भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।
> हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले,
> सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।"

उस युवा के होठों पर आकर जब गुनगुनाने लगीं तो उसमें नवीन चैतन्यता का जागरण हुआ। उसके ध्यान में आया कि भगवान भी उन्हीं की रक्षा करते हैं जो अपनी रक्षा स्वयं करते हैं। फिर क्या आपदा को अवसर में बदलने की प्रतिज्ञा ली सरस्वती शिशु मंदिर मद्नापुर (शाहजहांपुर) के प्रधानाचार्य दीपक कटियार ने। यह विद्यालय जन शिक्षा समिति ब्रज प्रदेश की समिति के निर्देशन में संचालित है। प्रधानाचार्य के सामने वेतन भुगतान की समस्या थी। विद्यालय बन्द था और शुल्क न आने के कारण वेतन कहां से दिया जाए? यू–ट्यूब देखा। सज्जनों से परामर्श किया और पथ का द्वार खुला। विचार आया कि मशरूम की खेती की जाए। उन्होंने 16–18 फुट के एक कमरे में मशरूम उगाने का निर्णय किया। कार्य प्रारंभ हो गया तब अनुभव में आया कि जितना परिश्रम एक कमरे की जगह में करना पड़ रहा है यदि यही जगह अधिक हो तो भी उतना ही परिश्रम और चिन्ता करनी पड़ेगी। तो उन्होंने फिर 62x20 फीट की जगह में टीन डालकर काम शुरू किया। 2 माह में फसल तैयार हुई और यह तैयार फसल तीन माह तक मशरूम देती रही। प्रारंभ में लागत मूल्य ही निकल पाया लेकिन बाद में परिणाम अच्छा रहा। 70 से 100 रुपये प्रति किलो की दर से मशरूम की बिक्री हुई।

प्रधानाचार्य दीपक कटियार का कहना है कि 33x66 फीट के 4 प्लाट लगाने चाहिए जिसमें दो लाख से ढाई लाख तक की मशरूम उगाई जा सकती है। एक प्लाट में 40 क्विंटल भूसा लगता है। उसमें 30 क्विंटल मशरूम पैदा की जा सकती है। उन्होंने भविष्य की योजना बताते हुए कहा कि विद्यालय के निकट की भूमि किराए पर लेकर उसमें मशरूम की उत्तम खेती करेंगे और 'आत्म–निर्भर भारत' के पवित्र मिशन को लेकर किसानों को प्रशिक्षित भी करेंगे। पहले मशरूम का बीज चण्डीगढ से मंगाया था, लेकिन अब वह स्वयं बीज का उत्पादन करेंगे। इस प्रकार वह विद्यालय की आर्थिक समस्या का समाधान कर रहे हैं। ऐसे में यह ध्यान में आ रहा है कि परिस्थितियों से घबराकर हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं चाहिए। उद्यमशीलता सफलता, सुख, समृद्धि और आत्मनिर्भरता की गारण्टी है। ऐसे प्रयोग स्थान–स्थान पर श्रम–साधना का भाव लेकर किए जा सकते हैं।

आत्मनिर्भर ग्रामों के लिए एकल विद्यालयों ने की सार्थक पहल

विद्या भारती द्वारा चलाए जा रहे एकल विद्यालयों (सरस्वती संस्कार केंद्रों) के माध्यम से लॉकडाउन के दौरान त्यौहारों को देखते हुए विभिन्न प्रकार के उपयोगी प्रशिक्षण दिए गए। इस दौरान 188 केंद्रों पर राखी बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें गांव की माताएं, बहनें सम्मिलित हुईं और उन्होंने स्वयं द्वारा निर्मित राखियां रक्षाबंधन पर प्रयोग कीं। गणेश उत्सव पर 59 गांवों में गणेशजी की ईको फ्रेण्डली मूर्ति बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। ग्रामवासियों ने घर पर ही गणेश जी की मूर्ति बनाकर स्थापना की और सार्वजनिक स्थानों पर भी अपने द्वारा बनाई गई मूर्तियों की ही स्थापना की। दीपावली पर 16 ग्रामों में दीपक बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद 16 ग्रामों में ग्रामीणों ने स्वयं के द्वारा बनाए गए दीपक जलाकर दीपावली मनाई।

गांव वापस लौटे कामगारों को दिया कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण

रोजी–रोटी की तलाश में ग्रामों से लोग मजदूरी के लिए महानगरों एवं नगरों में जाते हैं। कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन के कारण उन्हें अपना कार्य छोड़कर वापस अपने गांव आना पड़ा। ऐसे में उनके रोजगार के लिए बड़ी समस्या सामने आई। इसे देखते हुए 5 जिलों में श्रमिकों का उनके कौशल के अनुसार सर्वे किया गया। सर्वे के पश्चात "भारत भारती आवासीय विद्यालय" में इलेक्ट्रीशियन एवं कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए पांच–पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में इलेक्ट्रीशियन के लिये 18 गांवों से 40 लोग एवं कंप्यूटर शिक्षा के लिये 16 गांवों से 35 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

छात्रावासों में कौशल विकास की ट्रेनिंग : सुदूर वन क्षेत्र में शासकीय स्कूलों में प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं की पढ़ाई हो जाती है, लेकिन वहां रहने वाले अधिकांश छात्र उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में सुदूर वन क्षेत्र के छात्र अच्छी शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़ें, इस दृष्टि से विद्या भारती के मार्गदर्शन में प्रान्त में भैयाओं के आठ छात्रावास एवं बहिनों का एक छात्रावास संचालित किया जा रहा है। इन छात्रावासों में 241 भैया एवं 139 बहिनें अध्ययनरत हैं। इन छात्रावासों में कौशल विकास का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। रानी दुर्गावती छात्रावास में सिलाई सेन्टर, रंगोली, पाकशाला, ताप्ती छात्रावास भारत भारती में विद्युत, कृषि, प्रतापगढ़ व सियरमऊ में कृषि और ढाबा में सभी छात्रावासों में बागवानी का कार्य किया जाता है।

गरीब परिवारों को राशन, सब्जियों और किराना सामग्री का वितरण

बैतूल। कोविड–19 के कारण लॉकडाउन के दौरान विद्या भारती के मार्गदर्शन में चलने वाले एकल (सरस्वती संस्कार केंद्रों) एवं छात्रावासों (प्रकल्पों) के माध्यम से जनजाति क्षेत्र में सेवा कार्य किए गए। इस दौरान ग्रामों में कोविड–19 से बचाव के लिए सावधानियों आदि की जानकारी दी गई और दीवारों पर लेखन किया गया। गांवों में स्वयं के व्यय से मास्क बनाकर वितरण किया गया और कृषि उपज बिक्री केन्द्रों पर कृषकों के बीच मास्क एवं सैनिटाइजर वितरित किये गये। ऐसे गरीब परिवारों जिनका जीवन दैनिक मजदूरी पर आश्रित था उन परिवारों को अनाज, सब्जियां एवं किराना सामग्री आदि का वितरण किया गया। विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने ग्राम रायसेन में वाल्मीकि समाज के, मोहल्ले के परिवारों को अनाज एवं सब्जियां उपलब्ध कराईं। इसके अलावा विद्या भारती ने पुलिस एवं स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्ताओं के लिए भोजन, अल्पाहार और चाय की व्यवस्था की जो अपने परिवार की परवाह किये बिना हमारे बीच निरंतर सेवा दे रहे थे।

रूप सिंह लौहाने
प्रान्त प्रशिक्षण प्रमुख
विद्या भारती मध्यभारत जनजाति क्षेत्र की शिक्षा

सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, तिलौथू

स्वरोजगार में बना सारथी, प्रवासी श्रमिकों को दिया निःशुल्क प्रशिक्षण

वैश्विक महामारी कोविड–19 की विपदा की घड़ी में देश में बहुत से ऐसे श्रमिक थे जिनका रोजगार समाप्त हो गया था और वे बेरोजगार हो गए थे। ऐसे में सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र तिलौथू के माध्यम से उन प्रवासी श्रमिकों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिए गए जो बाहर के राज्यों में काम करते थे और लॉकडाउन के समय रोजगार छूट जाने के कारण अपने प्रदेश में वापस आ गए थे और यहां उनके पास रोजगार के साधन नही थे। ऐसे प्रवासी श्रमिकों के लिए सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र में 15 दिन का निःशुल्क सघन प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की गई और इन श्रमिकों को इलेक्ट्रिशियन, वायरिंग, प्लंबिग, साइकिल मरम्मत और मोबाइल रिपेयरिंग आदि का प्रशिक्षण दिया गया। सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र में 60 प्रवासी श्रमिकों को निःशुल्क प्रशिक्षण देने की योजना बनी थी, जिसमें 43 प्रवासी श्रमिकों की सहभागिता रही। संस्थान में अब इस तरह प्रतिवर्ष कुछ श्रमिकों को निःशुल्क प्रशिक्षण देने की योजना बन रही है ताकि प्रवासी श्रमिक कुशल तकनीकी जानकार बनकर स्वरोजगार के साथ देश के विकास में योगदान दे सकें।

संस्थान में बनाई ऑटोमेटिक फुल बाडी सैनेटाइजेशन टनलः सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र में कोरोना से बचाव के लिए प्राचार्य श्री विष्णु कुमार द्वारा अनुदेशकों एवं प्रशिक्षुओं के सहयोग से ऑटोमेटिक फुल बाडी सैनेटाइजेशन टनल का निर्माण किया गया। इसके अलावा समाज, किसी वर्ग एवं संस्थान की मांग पर सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र इस प्रकार की टनल का निर्माण बाजार से बहुत कम कीमत पर करने और इसके लिए प्रशिक्षण देने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि कोरोना महामारी से आम जनता को बचाया जा सके।

10 सरस्वती संस्कार केन्द्रों का भी किया जा रहा संचालनः सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र के माध्यम से 10 सरस्वती संस्कार केन्द्रों का भी संचालन हो रहा है। इन केन्द्रों के संचालन का मुख्य उद्देश्य झुग्गी–झोपड़ियों में रह रहे दलित, पिछड़े वर्गों तथा पहाड़ों और तराई में जीवनयापन कर रहे लोगों तक शिक्षा पहुंचाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है।

कुशल कामगार तैयार करता है संस्थान

शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, बिहार की ओर से एक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना का विचार किया गया और 2010 में सरस्वती औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र के नाम से इसकी स्थापना की गई। यह संस्थान सन् 2011 से पूर्ण रूप से संचालित हो रहा है और तिलौथू बस स्टैंड के निकट सरस्वती विद्या मंदिर परिसर में अवस्थित है। इस औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य देश एवं राज्य में बढ़ती औद्योगिक इकाइयों को कुशल कामगार उपलब्ध कराना था ताकि राज्य के, खासकर जनजातीय एवं कमजोर वर्गों के युवाओं एवं युवतियों को बेहतर तकनीकी शिक्षा प्रदान कर उन्हें नियोजन एवं स्वनियोजन का अवसर उपलब्ध कराया जा सके। इसके लिए भारत सरकार के श्रम मंत्रालय के अंतर्गत, महानिदेशक रोजगार एवं प्रशिक्षण द्वारा संचालित एनसीवीटी कोर्स के तहत यहां व्यावसायिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण देने की मान्यता प्रदान की गई। इस संस्थान ने अभी तक 713 प्रशिक्षुओं को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया है।

सुदूर दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की अलख जगा रहे आचार्य

650 एकल विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे 12 हजार से अधिक विद्यार्थी

भोपाल। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पूरा देश गुरुओं के योगदान का स्मरण करता है। इसी गुरु–शिष्य परंपरा को पुर्नस्थापित करने का प्रयास विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त एकल विद्यालयों के माध्यम से कर रहा है। विद्या भारती, सुदूर वनांचल और दुर्गम क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं तक शिक्षा की अलख जगा रही है।

विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त ऐसे विद्यार्थियों तक शिक्षा की ज्योति जला रहा है जिन तक सुविधाएं नहीं पहुंच पाती। इन विद्यार्थियों को न केवल विषयगत शिक्षा दी जाती है, बल्कि संस्कार एवं सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से पोषित संस्कार विद्यार्थी के जीवन का अभिन्न भाग बन जाते हैं और जीवन संस्कारित बनता है। इसके लिए रायसेन, होशंगाबाद, बैतूल और हरदा जिले में 650 से अधिक एकल विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। इन एकल विद्यालयों में क्षेत्र के 12 हजार से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। एकल विद्यालयों को विशेष तौर पर जनजातीय और वनांचल बहुल जिलों में संचालित किया जा रहा है। बैतूल जिले के जनजातीय क्षेत्र में 165 से अधिक एकल विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं।

तीन घंटे की होती है कक्षा

एकल विद्यालयों में शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार 3 घंटे की कक्षा लेते हैं। इस दौरान 30–30 मिनट के कालांश में कक्षा अनुसार विषय की पढ़ाई कराई जाती है। इसके साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को बौद्धिक रूप से मजबूत करने हेतु प्रत्येक दिन अलग–अलग बौद्धिक कथाएं, देशभक्ति गीत आदि का गृहकार्य भी देते हैं और उनका परीक्षण भी किया जाता है।

पूर्वोत्तर भारत में कोरोना आपदा को अवसर में परिवर्तित किया विद्या भारती ने

स्वामी विवेकानन्द के विचारों में बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का प्रकटीकरण ही शिक्षा है। वे कहते थे कि शिक्षा मनुष्य को साहसी बनाती है, जिससे वह किसी भी कार्य को आसानी से करने हेतु सन्नद्ध हो जाता है।

वस्तुतः उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक का अधिकार है। इसी शिक्षा की लौ को ज्वाला में परिवर्तित करने का सफल प्रयास विद्या भारती ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में किया है। एक ओर पूरा विश्व जहां कोरोना से जूझ रहा था तो वहीं विद्या भारती के साधक बिना रुके, बिना थके अहर्निश न सिर्फ शिक्षा के दीप प्रज्वलित कर रहे थे, अपितु पूर्वोत्तर भारतीय परिक्षेत्र के ग्रामों में जाकर अन्न व शिक्षा आदि की व्यवस्था कर रहे थे। पूर्वोत्तर भारत में कोरोना आपदा के एक वर्ष में विद्या भारती ने शैक्षिक क्रान्ति की मशाल को और अधिक तीव्र कर दिया है। पूर्वोत्तर भारत के दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में जाकर वहां के स्थानीय निवासियों के सहयोग से शैक्षिक व्यवस्था तैयार करके कक्षा–कक्षीय वातावरण का निर्माण संगठन के जुझारू कार्यकर्ताओं ने किया है।

नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करने की बात की गई है। इस सम्बन्ध में विद्या भारती से सम्बद्ध विद्यालयों (शिशु वाटिका, शिशु मन्दिर, विद्या निकेतन आदि) में इसका प्रयास श्रेयस्कर तरीके से किया जा रहा है। स्थानीय भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा देने के साथ–साथ संस्कारित शिक्षा प्रदान कर आदर्श नागरिक बनाने की जिम्मेदारी का निर्वहन भी विद्या भारती पूर्वोत्तर परिक्षेत्र में कर रहा है। इन विद्यालयों में शारीरिक विज्ञान, योग, संगीत, संस्कृत व नैतिक शिक्षा का भी अध्ययन प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तर तक कराया जाता है।

मेघालय और त्रिपुरा शिक्षा समिति

कोरोना के दौरान मेघालय शिक्षा समिति, शिलांग के अध्यापक वृन्द ने घरों में जा–जाकर पाठ्य सामग्री का वितरण किया और ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था की। दसवीं तथा बारहवीं के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए विशेष कक्षाओं की व्यवस्था की गई। विद्या भारती शिक्षा समिति त्रिपुरा ने कोरोना आपदा के दौरान 60 जनजातीय विद्यार्थियों की क्षमता वाले एक बालक छात्रावास का निर्माण त्रिपुरेश्वरी विद्या मन्दिर, गांधीग्राम में पूर्ण किया है। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति के सहयोग से 30 छात्रों के आवास हेतु भी छात्रावास का निर्माण प्रगति पर है जिससे जनजातीय क्षेत्र के छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सके।

अरुणाचल और नागालैंड शिक्षा समिति

अरुणाचल शिक्षा विकास समिति ने कोरोना आपदा के समय न सिर्फ अपने विद्यार्थियों का ध्यान रखा, अपितु विद्यार्थियों के परिवारों में जाकर राशन व अन्य आवश्यक सामग्री का वितरण भी किया। इस सन्दर्भ में समिति के अधिकारियों ने 28 ग्रामों के 332 परिवारों में जाकर उनका सहयोग किया और विशेषकर माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक वर्ग के छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था की। कुछ इस प्रकार का कार्य जनजाति शिक्षा समिति नागालैंड द्वारा भी किया गया। अपने संगठन से सम्बद्ध गामादी विद्या भारती स्कूल, धनसिरीपार, नागालैंड के शिक्षकों के गुणवत्तापूर्ण अध्यापन की सराहना करते हुए राज्यपाल श्री पी.बी. आचार्य ने विद्यालय को 'राज्यपाल पुरस्कार' से सम्मानित किया है।

मणिपुर और असम शिक्षा समिति

शिक्षा विकास समिति मणिपुर ने भी आपदा से प्रभावित नागरिकों को राशन वितरण किया और छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण की समुचित व्यवस्था की। विद्या भारती की शिक्षा विकास परिषद् दक्षिणी असम की इकाई ने कोरोना आपदा के दौरान शंकरदेव विद्या निकेतन, रोहा में छात्रों के अध्ययन–अध्यापन के लिए कक्षों का निर्माण कराया तथा छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध कराने व सूचना–प्रौद्योगिकी से जोड़ने हेतु कम्प्यूटर उपलब्ध कराये। इन परिक्षेत्रीय विद्यालयों में विद्युत हेतु पर्यावरणानुकूल सौर ऊर्जा के पैनलों की उपलब्धता करायी जा रही है जिससे अध्ययन के साथ–साथ पर्यावरण को भी सन्तुलित रखा जा सके। शिशु शिक्षा समिति, असम प्रान्त ने कार्बी एंगलांग जिले में एकलव्य मॉडल स्कूल की स्थापना हेतु भूमिपूजन किया तथा स्थानीय लोगों की सहायता हेतु सेवाकार्य भी किया।

शिक्षा के साथ जनजागरण भी कर रही विद्या भारती

विद्या भारती ने (आवश्यक शैक्षणिक कार्य) वर्ष 2020 की कोरोना आपदा के दौरान किए जिससे पूर्वोत्तर क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आज विद्या भारती शैक्षिक क्षेत्र में विश्व का वृहदतम गैर सरकारी संगठन है। वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत में विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र द्वारा 667 स्कूलों और 609 एकल विद्यालयों व शिशु केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। इन शिक्षण संस्थाओं में लगभग 10 हजार 306 अध्यापकों के सान्निध्य में 1 लाख 99 हजार 85 छात्र अध्ययनरत हैं। यह संगठन शिक्षा जगत् में निरन्तर शिक्षा की अलख जलाता चला आ रहा है। शहरी क्षेत्र हो अथवा ग्रामीण क्षेत्र अथवा दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र, विद्या भारती के द्वारा (सर्वत्र शिक्षा तथा सेवा कार्य) जारी हैं। भारतीय सीमाओं से सटे क्षेत्रों में विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों के माध्यम से जन–जागरण का कार्य भी किया जाता है। देशभक्ति व संस्कार की शिक्षा यहां की शिक्षा प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए विद्या भारती को भारतीय सेना का सहयोगी व सीमा का प्रहरी भी कहा जाना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

डॉ. पवन तिवारी
क्षेत्रीय सह संगठन मन्त्री
पूर्वोत्तर क्षेत्र, विद्या भारती

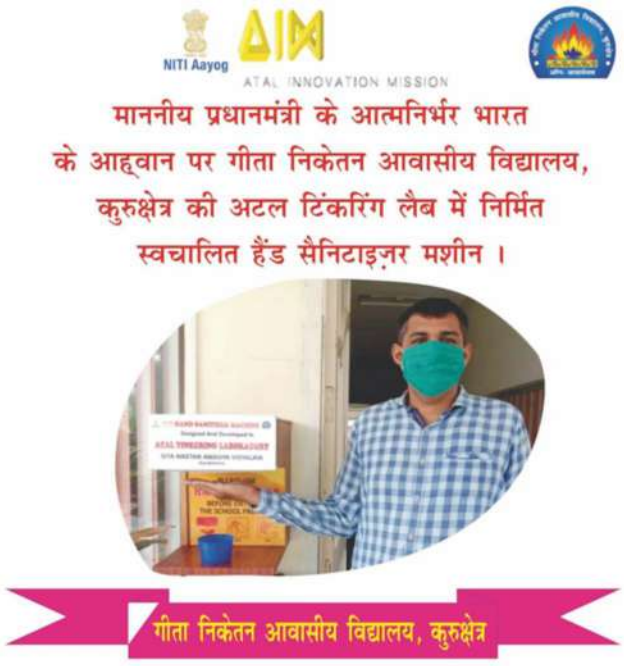

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरुक्षेत्र ने बनाई हैण्ड सेनेटाइजेशन मशीन

कोरोना वायरस का प्रकोप बढ़ने के साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग, साफ–सफाई और सेनेटाइजेशन बहुत जरूरी हो गया था। कोरोना महामारी से बचाव के लिए हर जगह सेनेटाइजर का प्रयोग किया जाने लगा था और इसके उपयोग को आसान बनाने के लिए कई तरह के प्रयोग किए जा रहे थे। इसी बीच गीता निकेतन आवासीय विद्यालय में भी हैण्ड सेनेटाइजेशन मशीन को बनाने का विचार किया गया। प्राचार्य नारायण सिंह जी के मार्गदर्शन में श्रीमती गीता अरोड़ा जी ने अटल टिंकरिंग प्रयोगशाला में सेनेटाइजर मशीन बनाने की दिशा में कार्य किया। गीता अरोड़ा अटल प्रोजेक्ट की शिक्षिका हैं। उन्होंने विद्यालय परिसर में उपलब्ध सामग्री और कुछ आवश्यक सामग्री बाजार से खरीदकर उसका उपयोग करते हुए सेनेटाइजेशन मशीन बनाई। विद्यालय परिसर की आवश्यकता को देखते हुए 2 सेनेटाइजेशन मशीनें बनाई गईं। सेनेटाइजेशन मशीनों की डिजाइनिंग में सुरेश सैनी जी का विशेष योगदान रहा। सेनेटाइजेशन मशीन के निर्माण पर विद्यालय के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम शर्मा जी ने कहा कि यह समय चुनौती को अवसर में बदलने का है। विज्ञान के लघु प्रयोगों से जीवन को सरल बनाना और देश को आत्मनिर्भर बनाना ही हमारा मूलमन्त्र है। केंद्र सरकार के अटल नवाचार मिशन के अंतर्गत गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरुक्षेत्र में वर्ष 2017 में अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना की गई थी। इस प्रयोगशाला का उद्देश्य बच्चों में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ाना देना है। समय–समय पर विद्यार्थी अटल टिंकरिंग प्रयोगशाला के माध्यम से समाज की समस्याओं का समाधान करते रहे हैं।

सेंसर की मदद से काम करती है मशीन मात्र 15 सौ रुपये आई लागत

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय में बनाई गई हैण्ड सेनेटाइजेशन मशीन से कोई व्यक्ति बिना उसे छुए हाथों को सेनेटाइज कर सकता है। इस सेनेटाइजर मशीन में सेंसर, मोटर, आरडिनो, बैटरी आदि का उपयोग किया गया है और इन सभी को कोडिंग की सहायता से कंट्रोल किया गया है। जैसे ही कोई व्यक्ति अपना हाथ नोजल और सेंसर के पास लाता है तो सेनेटाइजर हाथों पर आ जाता है और हाथ सेनेटाइज हो जाते हैं। इस मशीन में एक बार में इतना सेनेटाइजर रहता है जिससे 20 से 30 लोग उसका प्रयोग कर सकते हैं। यह मशीन उतना ही सेनेटाइजर स्प्रे करती है जितनी आवश्यकता होती है। मात्र 15 सौ रुपये की लागत से यह हैंड सेनेटाइजर मशीन प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है।

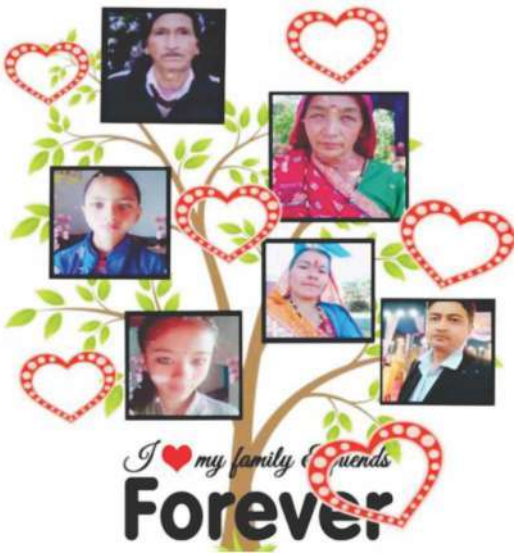

आपदा में अवसर

गतिविधियों के माध्यम से सीखे रचनात्मक कार्य

अल्मोड़ा। समुद्र तल से 1,890 मीटर की ऊंचाई पर स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कौसानी, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में ऑनलाइन पढ़ाई का हमारे भैया–बहिनों व अभिभावकों पर इस तरह रंग चढ़ा कि इनका उत्साह देखते ही बनता था। प्रतिदिन काम करना, याद करना, हर दूसरे–तीसरे दिन फोन से सुनने आदि नित्यप्रति की दिनचर्या में सम्मिलित हो गया। प्रधानाचार्य जी अपने विद्यालय के भैया–बहिनों के अतिरिक्त 14–15 बच्चों को प्रतिदिन आनलाइन पढ़ाते रहे और गृहकार्य का मूल्यांकन करके अभिभावकों को भेजते रहे। विद्यालय परिवार प्रातः 7.00 बजे गृहकार्य देकर सायं 7.00 बजे वापस लेता और निरीक्षण करके पुनः ऑनलाइन वापस भेज देता। छात्रों को व्यस्त रखने

के लिए अनेक क्रियाकलापों का भी सहयोग लिया गया। कक्षा तृतीय से अष्टम् तक गृहकार्य में एक विषय क्रियाकलाप आधारित दिया गया जिसमें भैया बहिनों ने अपनी फूल की क्यारियों, गमलों की निराई–गुड़ाई की। दूसरा, रात्रि भोजन परिवार के साथ भोजन मंत्र के साथ किया। भैया–बहिनों की एकाग्रता, समझ, रुचि, गम्भीरता बढ़ाने के लिए एक क्रियाकलाप आधारित गृहकार्य दिया गया जिसमें एक मुट्ठी चावल व दाल को मिलाकर उन्हें अलग–अलग छांटकर रखना था। लॉकडाउन के समय बच्चे छोटे–बड़े कार्यों में मदद करना, साज सज्जा, चाय बनाना, सामान व्यवस्थित करना आदि सीखें, इस उद्देश्य को लेकर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

विद्या भारती ने पूरे राज्य में किए सेवा कार्य

विद्या भारती उत्तराखण्ड द्वारा कोरोना महामारी के दौरान पूरे राज्य में सेवा कार्य किये गये जिसमें विद्यार्थियों, आचार्यों तथा अभिभावकों ने सहयोग किया। उत्तराखण्ड के 65 विद्यालयों द्वारा 34 स्थानों पर 5400 अनाज के पैकेट वितरित किए गये तथा 6500 लोगों को भोजन कराया गया। सुरक्षा की दृष्टि से 15 हजार मास्क तथा 1200 सेनेटाइजर बांटे गये। राज्य के 1250 ग्रामों में 431 कार्यकर्ताओं ने कोरोना के प्रति सजगता के लिए जनजागरण अभियान चलाया। मानवता का परिचय देते हुए पशुओं के लिए 650 स्थानों पर पशु आहार वितरित किए गए। मुख्यमंत्री सहायता कोष में 5 लाख रुपये की सहायता प्रदान की गई।

बच्चों को मिला माता-पिता का दुलार

सबसे विशेष क्षण तब होता है जब माता–पिता अपने बच्चों को प्रेम, स्नेह से दुलारते हैं। ऐसा ही एक गृहकार्य बच्चों को दिया गया जिसमें बच्चों को माता–पिता का दुलारते हुए फोटो खींचकर विद्यालय को भेजना था तथा अपने इस क्षण को जीवनपर्यन्त सहेज कर रखना था। इसका उद्देश्य था कि बच्चों को वैसा स्नेह मिले जो आज की भागदौड़ की जिंदगी में शून्य हो गया है। विद्यालय द्वारा किये गए इन क्रियाकलापों के माध्यम से यह कहना उचित होगा कि कोरोना महामारी के काल में शिक्षा में नए विकल्प तथा अवसर के रूप में परिवर्तित किया गया।

राहत कार्यों के लिए आगे आए पूर्व छात्र

कोरोना महामारी में उत्तराखंड में पूर्व छात्रों ने भी विद्याभारती के संस्कारों का परिचय देते हुए सेवा कार्य किए। राज्य के 109 विद्यालयों के लगभग 10 हजार पूर्व छात्रों ने 55 स्थानों पर 5,768 अनाज के पैकेट बांटे और 6,880 लोगों को भोजन कराया। इसके अलावा 1000 मास्क और 600 सेनेटाइजर भी बांटे। पूर्व छात्रों ने पीएम केयर फंड में 53,037/- रुपये का योगदान दिया।

लॉकडाउन में हाथ से लिखी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

लॉकडाउन के समय का सार्थक उपयोग करते हुए सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज ढालीपुर देहरादून के हिन्दी के प्रवक्ता सुदेश कुमार ने 5000 सवालों की हस्तलिखित प्रश्नोत्तरी तैयार कर दी। सुदेश जी ने प्रश्नोत्तरी में समसामयिक मुद्दों के साथ सभी विषयों के सामान्य ज्ञान आधारित प्रश्नों को शामिल किया है। उन्होंने विश्व, भारत के विभिन्न राज्य व बड़ी घटनाएं, उत्तराखण्ड प्रदेश, खेल, आर्थिक, राजनीतिक करेंट अफेयर्स जैसे सामान्य ज्ञान के सभी प्रकार के प्रश्न और उनके उत्तर हाथ से लिखकर प्रश्नोत्तरी तैयार की है, जिससे छात्र लाभान्वित होंगे। सुदेश जी का कहना है कि लाकडाउन लगने के बाद मन में समय गुजारने को लेकर दुविधा थी। पहले कुछ दिन घर के कामों में समय व्यतीत किया, लेकिन इससे काम नहीं चला। इसके पश्चात् उन्होंने सामान्य ज्ञान से संबधित 5000 सवाल व उनके जवाब की पूरी पुस्तक तैयार कर दी।

कोरोना महामारी में जनजागरण के लिए दीपक जी ने कला को बनाया हथियार

- जींद में मुख्य सड़कों पर चित्रकारी के माध्यम से दिया कोविड–19 से बचाव का संदेश
- विशेष रूप से 700 फुट की लाइव पेंटिंग और व्यंग्य चित्र बनाकर किया जनजागरण

चित्रकार अपने रचनात्मक दृष्टिकोण, सृजनात्मक क्षमता, कल्पना एवं रंग योजना से आंतरिक अभिव्यक्ति को कैनवस, रंग और रेखाओं के माध्यम से सहज ही अपनी कृति में उकेर देता है। जो बात हजार शब्दों में नहीं कही जा सकती वह बात एक मौन चित्र बड़ी आसानी से बयान कर देता है। कोरोना महामारी के दौरान कला के माध्यम से इसे चरितार्थ किया है विद्या भारती हरियाणा प्रान्त के कला प्रमुख के रूप में कार्यरत दीपक कौशिक ने। कोरोना काल में लाकडाउन के समय जींद शहर की मुख्य सड़कों पर कोविड–19 महामारी से कैसे बचा जा सकता है, इसका संदेश दीपक कौशिक ने अपनी चित्रकारी के माध्यम से जनमानस को दिया है। इसी के साथ 700 फुट की लाइव पेंटिंग और व्यंग्य चित्रकारी के माध्यम से कोरोना महामारी से बचाव के लिए जनजागरण किया है। दीपक कौशिक ने कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद समाज में चेतना जाग्रत करने के लिए कला को हथियार बनाकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण अभियान की शुरुआत की थी और वह निरंतर अपनी चित्रकारी के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान चला रहे हैं। इसमें शराबबंदी, अन्ना हजारे के आंदोलन के दौरान पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, मतदाता जागरूकता अभियान, 2020 में आई सबसे बड़ी महामारी कोरोना के दौरान रोड पेंटिंग आदि के माध्यम से जनजागरण करना विशेष रूप से शामिल है। उल्लेखनीय है कि दीपक कौशिक ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कला स्पर्धाओं में पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

सही अर्थों में समाज सेवक हैं विद्या मंदिर वाले

कोविड–19 ने सम्पूर्ण विश्व के व्यवस्था तन्त्र को बहुत प्रभावित किया है। 22,मार्च 2020 के जनता कर्फ्यू के पश्चात् लॉकडाउन ने सामान्य जनजीवन पर बहुत असर डाला। अधिकांश मजदूर वर्ग एवं कमजोर वर्ग के लोगों के लिए कार्य बन्द होने से दो समय के भोजन की भी कठिनाई हो गयी। ऐसे में विद्या भारती सहयोग के लिए आगे आई। विद्या भारती के विद्या मन्दिर शिक्षा संस्कार के साथ–साथ सामाजिक सरोकार में भी पीछे नहीं रहते और अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इसी कड़ी में विद्या मंदिरों से आग्रह किया गया कि वे अपने परिसर में रहने वाले चौकीदारों, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों, वाहन चालकों एवं उनके परिवार तथा अन्य कर्मचारियों, आचार्यों तथा संस्कार केन्द्र चलाने वाली बस्ती में एक बार सम्पर्क कर सभी का ध्यान कर लें और जहां आवश्यक हो वहां उनका सहयोग करना है।

ऐसे ही जोधपुर महानगर के 4 संस्कार केन्द्र की बस्ती में सम्पर्क कर वहां रहने वाले 85 परिवारों को राशन सामग्री आदि उपलब्ध कराई गई। इस प्रकार सहायता से उनके व उनके परिवार के सदस्यों के चेहरों पर आयी मुस्कान ने आत्म संतुष्टि का भाव पैदा किया। ऐसे ही एक दिन मसुरिया बस्ती में चलने वाले संस्कार केन्द्र के पास रहने वाले उत्तर प्रदेश के श्रमिक शैलेन्द्र सिंह जो घरों में रंगरोगन का कार्य करते हैं एक दिन प्रातःकाल घर पर आ गए और आग्रह किया कि भाई साहब आप लोग सूखा राशन देते हैं लेकिन अगर भोजन सामग्री उपलब्ध कराते तो हमारा जीवन–बसर कुछ दिन चल जाता। हम तीन लोग यहां रहते है, मजदूरी अभी है नहीं और गांव भी जा नहीं सकते। यह जानकर मैंने अपने नजदीक की दुकान बबलू किराणा स्टोर को फोन कर उन्हें सामग्री देने का आग्रह किया। वो मजदूर अपने दोनों साथियों के साथ सामग्री लेकर प्रसन्न मन से अपने घर गया और पूरे रास्ते कहता गया कि ये विद्या मंदिर वाले शिक्षा का कार्य तो करते ही हैं परन्तु संकट के समय समाज की सेवा भी बहुत अच्छी तरह से करते हैं। कोई दुःखी या संकट में न रहे, यह इनके मनोभाव रहते हैं। इसके कारण से संस्कार केन्द्र के आसपास रहने वाले लोगों में विद्या मंदिर के प्रति श्रेष्ठ भाव जाग्रत हुए।

महेन्द्र कुमार दवे
प्रान्त सचिव
विद्या भारती शिक्षा संस्थान, जोधपुर

बालकों के लिए माताओं को भेजे गतिविधियों के वीडियो

अधिकारी सभी का यथेष्ट मार्गदर्शन करते हैं। अधिकारी की दृष्टि कितनी गहरी व दूरस्थ हो सकती है यह मा० काशीपति जी, अखिल भारतीय संगठन मंत्री के बारे में ध्यान आया। लॉकडाउन के कारण सभी विद्यालय बंद थे। ई–लर्निंग से कार्य चल रहा था। लेकिन शिशुवाटिका एवं कक्षा एक व दो के विद्यार्थियों के लिए ई–लर्निंग कठिन था। मा. काशीपति जी द्वारा सर्वदूर संवाद के माध्यम से यह विषय गया कि दीदी गतिविधियों की वीडियो बनाकर माताओं को भेजें और माताएं बालकों को घर पर क्रियाकलाप कराएं। जब लॉकडाउन में ढील हुई तो माताओं को विद्यालय में बुलाकर प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे घर पर दीदी की भूमिका में शिक्षण कार्य करा सकें। यह कार्य जिन स्थानों पर किया गया वहां प्रभावी रहा। इन कक्षाओं को विद्यालय में आने का मौका वर्ष भर नहीं प्राप्त हुआ फिर भी बालक शिक्षण कार्यों से अछूते नहीं रहे।

मा. काशीपति
अखिल भारतीय संगठन मंत्री

'मेरा समाज मैं कुछ करुंगा' इस भाव के साथ सबने किया कार्य

कोरोना महामारी के समय पहले चरण में लॉकडाउन हो गया। लॉकडाउन के दौरान कैसा व क्या करेंगे, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय प.पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के उद्‌बोधन और उसके पश्चात् मा. सरकार्यवाह भैयाजी जोशी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन 'आत्मनिर्भर भारत' से सभी को नई ऊर्जा मिली। 'नर सेवा नारायण सेवा' का व्रत लेकर सभी सेवा में जुट गये और पूरे देश में हमारे विद्या भारती के कार्यकर्ता, विद्यालय के आचार्य–आचार्या, अभिभावक एवं पूर्वछात्र समाज के कार्य में लग गए। जब सेवावृत्त का संकलन केंद्र में किया तो मालूम हुआ कि हमने कितना कार्य किया। जैसे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए 10 करोड़ से अधिक राशि संग्रह करना कठिन था लेकिन सबने मिलकर संग्रह किया। 'मेरा समाज मैं कुछ करुंगा' इस भाव के साथ जो काम सबने मिलकर किया उससे देश के हर एक स्थान पर आदर्श स्थापित किया। स्वयं सभी आचार्यों ने ऑनलाइन लर्निंग में भी विद्या भारती को आदर्श बनाया।

गोविंद महंत
अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री

हम एक भारत माता की संतान हैं, पूरे देश में नजर आया यह दृश्य

जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, ऐसी स्थिति में माँ भारती के सपूत अपने दायित्व का निर्वहन करने के लिए निकल पड़े घर से और चाहे श्रमिकों की सेवा हो, क्वारंटाइन केन्द्र का संचालन हो, घर–घर जाकर भोजन सामग्री का वितरण हो; पूरे देश में लाखों लोगों द्वारा इन सभी गतिविधियों में अपने को झोंक देना वास्तव में यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारत जैसे विशाल देश में जहां इतनी विविधता है, परन्तु किसी भी प्रकार के संकट में हम एक भारत माता की संतान हैं यह दृश्य पूरे भारतवर्ष में अनुभव करने को मिला। हम तो हमेशा इस बात को दोहराते ही रहते हैं।

''एक देश है एक संस्कृति एक हमारा नाता।
हम सब इसकी सन्तानें हैं भारत हमारी माता।''

शिवकुमार
अखिल भारतीय मंत्री

लॉकडाउन : क्षमता जागरण का पर्व

इस सेवा विशेषांक में हमने कोरोना महामारी काल में हुए लॉकडाउन के दौरान विद्या भारती के कार्यकर्ताओं द्वारा किये गये सेवा कार्यों का लेखा–जोखा संजोया है। समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पहचान कर, बिना किसी की अपील के स्वतःप्रेरणा से, किसी भी विषम परिस्थिति में, प्राकृतिक आपदा में, स्वयं की चिन्ता न करके अपने आप को समाज देवता की सेवा में खपा देना, यही सीखा है विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने।

लॉकडाउन में अनेक व्यक्तियों को विविध प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा– रोजगार चले गये, उद्योग–व्यापार बंद हो गये, अर्थव्यवस्था की गति धीमी हो गई, बहुत से श्रमिकों को महानगरों में काम मिलना बंद होने के कारण अपने पैतृक स्थानों पर लौट जाने की विवशता थी किन्तु वाहन–साधन के अभाव में सैकड़ों किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ी भूख–प्यास, धूप–ताप–वर्षा का सामना करते हुए। जीविकाविहीन हो जाने की चिन्ता मस्तिष्क पर थी और गृहस्थी के सामान का बोझ सिर पर। विद्या भारती के संस्थानों, पूर्व छात्रों और समाज ने आगे बढ़कर मुक्त हृदय से स्वयं के व्यय में कटौती करके अपनी बचतों को अपने भविष्य की चिन्ता न करते हुए समाज के इस पीड़ित वर्ग की सेवा में लगा दिया। कहीं खाद्य सामग्री, कहीं पकाया हुआ भोजन वितरण करने वाले 'गीता रसोई' जैसे उपक्रम जीवन की इस मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति में लगे रहे। लौट कर आये हुए लोगों की तात्कालिक सहायता के साथ उनके गांव में ही जीविका के वैकल्पिक साधनों की व्यवस्था हेतु प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

पुनर्जीवित हुए सम्बन्ध

समाज जीवन पर महामारी तथा लॉकडाउन के प्रतिकूल प्रभाव के अतिरिक्त अनेक अनुकूलताओं की भी पर्याप्त चर्चा हुई। प्रकृति का शुद्धिकरण सबके ध्यान में आया। नदियां व अन्य जलस्रोत स्वच्छ हो गये, वायु प्रदूषण का स्तर कम हुआ, वन्यजीव सड़कों पर दिखने लगे, वाहन न चलने से सड़कों पर भीड़ कम हुई तो सड़क दुर्घटनाएं कम हो गईं, चिकित्सालयों में छोटी–मोटी स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर लगने वाली रोगियों की कतारें दिखनी बंद हो गईं। पारिवारिक जीवन पुनः ध्यान में आया, विशेषकर बच्चों को, जिन्हें अपने माता–पिता की जीविका की भागदौड़ के कारण उनका स्नेह–सान्निध्य मिलना तो दूर, अनेक को तो साप्ताहिक अवकाश के अतिरिक्त दर्शन भी दुर्लभ ही थे। सगे–सम्बन्धियों–मित्रों से प्रत्यक्ष भेंट संभव नहीं थी किन्तु फोन और सोशल मीडिया के सहयोग से सम्बन्ध पुनर्जीवित हुए।

विद्यालय–महाविद्यालय बंद थे किन्तु शिक्षा की प्रक्रिया तो नहीं रोकी जा सकती थी। तकनीक का सहारा लेकर ऑनलाइन कक्षाएं संचालित होने लगीं। अनेक शिक्षक बंधु–बहनें जो तकनीक के प्रयोग से अपरिचित थे, डरते थे, उन्होंने भी चुनौती को स्वीकारा और पीपीटी–पीडीएफ–इमेज–वीडियो–ऑडियो बनाने में जुट पड़े और सतत् अभ्यास से सफल भी हुए।

राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था को मिलेगा सत्संकल्पों का लाभ

शैक्षिक गतिविधियों का भी ऑनलाइन विकल्प उपलब्ध था। विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों द्वारा विविध आयोजन चलने लगे। संगोष्ठी–परिसंवाद–चर्चा सत्र–व्याख्यान इत्यादि। सुहृदजनों–विद्वज्जनों की कृपा से लॉकडाउन की अवधि में मुझे भी तीन सौ से अधिक ऐसे आयोजनों में भाग लेने, विभिन्न विषयों के अधिकारी विद्वानों को सुनने और कहीं–कहीं अपने विचार व्यक्त करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। संभवतः प्रत्यक्ष रूप से इतने स्थानों पर जाना, इतने विद्वानों को सुनकर अपनी समझ विकसित करना या अपने विचारों से उन सबको अवगत कराना, यदि लगने वाले समय, श्रम, धन एवं ऊर्जा की दृष्टि से विचार करें तो असंभव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही था। संगठन की दृष्टि से कहूं तो अनेक विद्वान, जो शिक्षा के सम्बन्ध में भारतीयता के दृष्टिकोण से विचार करते हैं किंतु पूर्व में अपरिचित थे, इन आयोजनों के माध्यम से संपर्क में आये। मुझे विश्वास है कि ऐसे मनीषियों–हितैषियों के विचारों, बौद्धिक क्षमताओं तथा सत्संकल्पों का लाभ विद्या भारती संगठन को तथा इस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था को अवश्य प्राप्त होगा।

शक्ति को किया पुनर्जाग्रत

लॉकडाउन काल सबके सम्मुख बड़ी चुनौती लेकर आया था, किन्तु समाज के समेकित प्रयासों के परिणामस्वरूप इस राष्ट्र ने अपनी क्षमताओं को पहचाना, सुप्त नहीं तो विस्मृत हो रही शक्ति को पुनर्जाग्रत किया, यही इस विभीषिका का सकारात्मक पक्ष कहा जा सकता है। इस भूले हुए आत्मविश्वास का जागरण – संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा !!

अवनीश भटनागर
अखिल भारतीय मंत्री
विद्या भारती

सामान्य व्यक्ति में भी जगी संवेदना

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व और समाज के सभी क्षेत्रों को झकझोरा है। प्रारम्भ के समय में तो पूरे समाज में एक भयानक वातावरण निर्माण हुआ। इस महामारी के कारण बीमारियों की स्थिति तो भयानक है ही, साथ ही लॉकडाउन के कारण रोजगार के लिए देशभर के विभिन्न स्थानों से आकर बसे प्रवासी श्रमिकों की दो प्रकार की परेशानी थी। एक, अपने गांवों में जाकर अपने लोगों को मिलना कैसा होगा? दूसरा, जहां रह रहे हैं वहां काम ही नहीं है तो पेट भरना कैसा होगा? इस भयानक स्थिति में समाज के सामान्य व्यक्ति में भी संवेदना जाग्रत हुई। विशेषकर विद्या भारती के आचार्य, अभिभावक, छात्र, पूर्व छात्र और अन्य कर्मचारी सभी ने कोरोना महामारी में राहत कार्यों में अपना दायित्व निभाया। इस संदर्भ में एक उदाहरण से विषय को अवगत कराने का प्रयास करूंगा।

विद्या भारती एक स्वयंसेवी संगठन होने के कारण सामान्यतः इसमें कार्य करने वाले आचार्य और अन्य कर्मचारियों को वेतन कम ही होते हैं। तेलंगाना के प्रांत कार्यालय में कार्यरत अशोक नाम का कार चालक लॉकडाउन के समय एक दिन मेरे पास आकर कहने लगा – ''आचार्य जी प्रतिवर्ष मेरे विवाह दिवस पर परिवार में सभी चारों सदस्य नया वस्त्र खरीद कर पहनते हैं और घर में विशेष भोजन बनाकर खाते हैं। इसके लिए लगभग पांच हजार रुपये खर्च होते हैं, परंतु इस बार ऐसा करने का मन नहीं कर रहा। इसलिए पांच हजार रुपये का राशन खरीद कर प्रवासी श्रमिकों के परिवार को देने का मन बनाया है।''

ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं। हर एक व्यक्ति में संवेदनशीलता जाग्रत होने का कारण 'पूरा समाज मेरा है' प्रत्येक व्यक्ति में यह भाव है। स्वयं से जो भी हो सकता है वो सब करने का प्रयास सभी ने किया है।

ऐसी ही कुछ प्रमुख घटनाओं को चुनकर 'सेवा विशेषांक' के रूप में मुद्रित करने का निर्णय विद्या भारती प्रचार विभाग की केंद्रीय टोली ने लिया है। आशा है यह पुस्तिका हम सभी के लिए प्रेरक सिद्ध होगी।

सुधाकर रेड्डी
दक्षिण मध्य क्षेत्र संगठन मंत्री
एवं विद्या भारती प्रचार विभाग प्रभारी

VIDYA BHARATHI'S ENGAGEMENT WITH STUDENTS ACROSS

Vidya Bharati with its 13K big formal schools and 12K informal institutions, could reach all the stake holders during the Pandemic. Teachers and management network took benefits of technological boom and online reach was possible. Offline methods to engage in learning experiences by students with digital content was handed over in person with the help of stake holders. This network was built by Vidya Bharathi with the help of 1.5L teachers, 4.5L Alumni, 1.5L Management members and around 5L mothers in entire India. I shall list out some of the methods followed.

1. Reaching students with recorded lessons* and forming a group to engage in learning which was well received in tribal areas with enthusiasm.
2. Organizing weekly tuition centers* in rural areas with a follow up action. This was very popular in Andhra Pradesh.
3. Encouraging Mohalla Vidyalas* in all the colonies, where our teachers reached and held regular classes both off-line and on-line. This is a popular mode in U.P, Uttarakhand, Rajasthan, M.P, Chhattisgarh and Bihar.
4. Training mothers in the school* and on line to conduct primary classes in their localities. This was well received in Orissa.
5. Home-a-school – Ghar hi Vidyalay* was a necessity with a little on line training during lock-down period and direct contact classes with necessary inputs after unlocking was declared. Home schooling went on well in Karnataka, Gujarat, Orissa, Assam, M.P, etc.
6. Red letter days, National heroes Birthday celebrations* and environment protection related activities were conducted as usual during Covid-Pandemic.
7. Online training* for all the concerned including teachers was conducted to upgrade, upskill and empower them.

D. Ramkrishna Rao
All India President
Vidya Bharati

सेवा कार्य में तत्परता से जुटे रहे विद्या भारती के कार्यकर्ता

वैश्विक महामारी कोरोना के समय मेरा प्रवास सरस्वती कुंज, निराला नगर लखनऊ था। उस समय इस महामारी के बारे में कोई ज्यादा जानता नहीं था। कोरोना महामारी को लेकर लोगों में दहशत बन गई थी। विद्या भारती ने अपनी तरफ से पहल करते हुए इस महामारी से निपटने का निर्णय लिया और आगे बढ़कर हजारों भूखे, पीड़ितों और जरूरतमंदों की सहायता में समाज के साथ जुट गई। विद्या भारती ने स्वयंसेवी संस्थाओं को भी साथ लेकर चिकित्सा, आवास, भोजन और अन्य समस्याओं से जूझ रहे गरीबों, बेसहारों, मजदूरों और झुग्गी बस्तियों में रहने वाले परिवारों को राहत पहुंचाने के लिए तत्परता से काम किया। इस दौरान विद्या भारती के कई कार्यकर्ता कोरोना से संक्रमित भी हो गए, लेकिन महामारी उनका हौसला नहीं डिगा सकी। कुछ दिन क्वारंटीन के बाद सभी स्वस्थ हो गए और फिर उसी ऊर्जा के साथ इस हेतु जुट गए। कोरोना काल के समय कई ऐसी चुनौतियां सामने आईं, जिनका अनुभव व्यक्त करना बहुत ही कठिन है।

यतीन्द्र शर्मा
अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री
विद्या भारती

सेवा में जो आनंद वो किसी भी कार्य में नहीं

असम। बात 10 अप्रैल 2020 की है। मैं रामायण धारावाहिक देख रहा था। तब मेरे पास हमारे ही विद्यालय में पढ़ने वाले एक भैया का फोन आया कि यह बालक फोन पर बता रहा है कि आचार्य जी हमारे घर पर खाने के लिए कुछ भी नहीं है। आप मेरे पिताजी को विद्यालय में मजदूरी करने के लिए रख लीजिए ताकि हमारे घर में भोजन की व्यवस्था हो जाये। बच्चे की बात ने मुझे झकझोर दिया। तब मैंने विद्यालय के सचिव को फोन किया व फोन पर ही हमने निर्णय लिया कि हमको कुछ करना है। हमने उन लोगों की खोज शुरू की जो सहायता कर सकते हैं। इनमें डालमिया भारत सीमेन्ट, टाटा भारत लिमिटेड और शान्ति उपेन्द्र फाउंडेशन नई दिल्ली सहायता के लिए तैयार हो गई।

घने जंगल के बीच गांव में पहुंचाई खाद्य सामग्री

सबसे पहले डालमिया भारत सीमेन्ट को हमने 19 परिवारों की सूची बनाकर दी और उन्होंने अविलम्ब हमारी योजना को स्वीकृति प्रदान की। हमने चावल 5 किग्रा, दाल 2 किग्रा, तेल 1 लीटर, सोयाबीन 500 ग्राम, नमक 1 किग्रा, मसाला 200 ग्राम का एक किट तैयार किया और अगले दिन निकल गये गाँव लागचुरुई पो. उमरांगसू जिला डीमा हासाओं असम में। जब हम गांव में गये तो लोगों ने अनुशासन का परिचय देते हुए पंक्ति बना ली। हमने अगले दिन की भी योजना बना ली और हम टाटा भारत लिमिटेड के सहयोग से बहुत दूर घने जंगल में केंकरांगसीम गांव पोस्ट उमरांगस् जिला डीमा हासाओ पहुंचे जहां का रास्ता बहुत ही खराब था। यहां हमारे लिए भाषा की बहुत बड़ी दिक्कत थी। हम खेलमा भाषा नहीं जानते और वे हिन्दी नहीं जानते थे। गांव के सभी लोग हमको देखकर घरों में छुप गये क्योंकि उस गांव में कोई जाता ही नहीं। इसलिए वो डर गये थे लेकिन हमारे साथी श्री हुईचुंगलियाग खेलमा उसी जनजाति के थे। इसलिए उन्होंने खेलमा भाषा से सबको समझाया कि हम सब उनकी सहायता करने के लिए आये हैं। सहायता पैकेट प्राप्त करके गांव के लोग अपनी खुशी शब्दों में बयां नहीं कर पा रहे थे। इसके अगले दिन हमने फिर एक विशेष काम हाथ में लिया वो था कोरोना वारियर्स का सम्मान। हमने 30 डाक्टरों और 38 पुलिस कर्मियों को असमिया फुलां गम्छा देकर सम्मानित किया। पुलिस कर्मचारियों का कहना था कि आप सभी को बहुत–बहुत धन्यवाद जो आपने हमको सम्मान दिया।

51 भैया–बहनों के खाते में तीन महीने तक भेजे एक–एक हजार रुपये

हमने शान्ति उपेन्द्र फाउंडेशन नई दिल्ली के सहयोग से डीमा हासाओ के सरस्वती विद्या मन्दिरो में पढ़ने वाले 51 भैया–बहनों को 1000 रुपये प्रति माह के हिसाब से 3 महीने तक उनके खाते में राशि भेजी। जिस विद्यालय में बच्चा पढ़ता था उसका 3 महीने का शुल्क विद्यालय के खाते में भिजवाया। इससे उनके आचार्यों को मानधन मिला।

इन सभी प्रयासों से हमको भी बहुत कुछ सीखने को मिला और अनेक नये लोग हमारे सम्पर्क में आये। यह सब करने के बाद मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि सेवा में जो आनन्द है वो किसी भी काम में नहीं है।

राहुल पारीक
पूर्णकालिक कार्यकर्ता, विद्या भारती

कुछ ऐसे भी रहे अनुभव...

जैसे हम दूध नहीं, अमृत वितरित कर रहे हों

खण्डवा। खण्डवा नगर वैसे तो दादाजी धुनीवाले और प्रसिद्ध गायक किशोर कुमार के नाम से प्रख्यात है। सेवा कार्य करना यहां की अपनी संस्कृति में शामिल है, फिर भी ईश्वर जब भी कोई अच्छा कार्य करवाता है तो मनुष्य को अपना माध्यम बनाता है। ऐसा ही कार्य विद्या भारती की प्रेरणा से कार्यकर्ताओं ने लॉकडाउन के समय किया। यह कार्य नगर की बड़ी टीम द्वारा किया गया जिसमें भोजन के पैकेट, पानी एवं दूध आदि का वितरण जैसे कार्य सम्मिलित थे। उस समय एक दिन जब हम दूध का वितरण कर रहे थे तभी एक माँ अपने बालक के साथ नजर आई। बालक ने शायद 24 घण्टे से कुछ खाया नहीं था। जैसे ही उस बहन को बालक के लिए दूध दिया, उसकी आंखों से खुशी और करुणा के आंसुओं ने हमारे हृदय को झकझोर दिया। ऐसा लगा जैसे उसके लिए हमने दूध का नहीं अपितु अमृत का वितरण किया हो। भोजन–पानी और दूध प्राप्त करके श्रमिक बंधुओं के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दे रहे थे। वे सभी 'वंदेमातरम', 'जय श्रीराम' और 'भारत माता की जय' के घोष लगा रहे थे। इसी प्रकार, लॉकडाउन के दौरान प्रशासन को सहयोग प्रदान करने की दृष्टि से एक सप्ताह रामनगर पुलिस चौकी पर जाकर ट्रैफिक व्यवस्था संभालने की जवाबदारी भी हम विद्या भारती के कार्यकर्ताओं ने बखूबी संभाली। इन पुनीत कार्यों में हमें जिस प्रकार की आत्मिक आनंदानुभूति हुई है उसका लेखन करना कठिन है। हमें गर्व है कि संगठन से प्राप्त संस्कारों के कारण ही हम इस कार्य को करने के लिए मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार हो सके। कोरोना योद्धा के रूप में कल्याणगंज विद्यालय के प्राचार्य, आचार्य परिवार, सेवक–सेविका एवं समिति परिवार का सहयोग रहा है।

सामान्य आग्रह पर उपलब्ध कराए एक हजार मास्क और राशन सामग्री

इन्दौर। लॉकडाउन के समय विद्या भारती के कार्यकर्ता अन्य आनुषांगिक संगठनों, समवैचारिक बंधुओं के साथ मिलकर सेवा कार्य में संलग्न थे। ऐसे में सबके प्रयासों से महामारी को 'महासंकट से अवसर में बदलने' की प्रेरणा भी मिली। यह मधुर स्मृति सदैव प्ररेणादायक रहेगी। उस दौरान विद्यालय के ही एक अभिभावक से वितरण हेतु मास्क अथवा धनराशि उपलब्ध कराने का छोटा सा आग्रह किया। इस पर जुनेजा परिवार ने अगले ही दिन 1000 मास्क विद्यालय को प्रदान किए। एक अन्य आग्रह जो राजगढ जिले में रहने वाली संस्कार केन्द्र प्रमुख दीदी ने किया। उन्होंने बताया कि इन्दौर के मरीमाता क्षेत्र में मेरी बहन रह रही है और उनके पास खाने के लिए कोई प्रबंध नहीं है। यह पता चलते ही उस क्षेत्र में रहने वाले विद्यालय के कार्यकर्ता बन्धु तथा भगिनी उनके घर पहुंचे और 10 से 15 दिन का राशन, सब्जी तथा फल आदि उपलब्ध कराया।

लॉकडाउन में पक्षियों व मूक प्राणियों के लिए दानापानी से लेकर भूखे और जरूरतमंद अपनों की सेवा का कार्य सबके द्वारा चलता रहा। इसी के साथ सरस्वती शिशु मंदिर माणिकबाग इन्दौर के विद्यालय परिसर में रह रहे सेवक–सेविकाएं और आचार्य परिवारों के लिए राशन–पानी की व्यवस्था शिशु समिति परिवार ने की थी।

समय की इतनी पाबंदी तो शिशु मंदिरों में ही संभव

शाजापुर। इतिहास के पृष्ठों को पलटने पर हम 'विश्व का कल्याण हो, प्राणीमात्र में सद्भावना हो' के घोष को सार्थक होते हुए पाएंगे। लॉकडाउन में प्रवासी श्रमिकों और अन्य अभावग्रस्त लोगों को विद्या भारती के नलखेड़ा विद्यालय के कार्यकर्ताओं ने एक माह तक भोज्य पदार्थ एवं भोजन के पैकेट प्रदान किये। शाजापुर समिति के कार्यकर्ताओं ने ड्यूटी पर तैनात पुलिस बंधुओं एवं स्वास्थ्य कर्मियों के लिए चाय की व्यवस्था की। इसी बीच मजदूर भाइयों को उनके स्थान तक पहुंचाने के लिए वाहन व्यवस्था हेतु सुसनेर के एसडीएम साहब का फोन आया। इस पर उनसे निवेदन किया गया कि शिशु मंदिरों के सम्पूर्ण संसाधनों का उपयोग प्रशासन कहीं भी और कभी भी कर सकता है। ऐसा निर्णय हमारे माननीय संगठन मंत्री जी एवं प्रान्तीय समिति ने लिया है। इसके बाद तत्काल

निर्देशित स्थान पर वाहन भेज दिए गए। इसके बाद पुनः एसडीएम साहब का फोन आया कि समय की इतनी पाबंदी सरस्वती शिशु मन्दिरों में ही हो सकती है। उन्होंने धन्यवाद और बधाई दी।

पैरों पर पानी डालते ही जैसे निकल पड़ी भाप

सेंधवा। कोरोना काल में लॉकडाउन के समय घर से बाहर निकलना सख्त मना था। संक्रमण का डर बहुत ज्यादा था, परन्तु अपने अंदर के स्वयंसेवक को मैं घर से बाहर निकलने से रोक नहीं पाया। बाल्यकाल से संघ से जुड़े होने के कारण आपदाकाल में समाज की सेवा करना स्वभाव में था। संघ कभी बाढ़ तो कभी चक्रवात तो कभी भूकंप जैसी आपदाओं में सदैव सेवा के लिए खड़ा रहता है, तो बस हम भी पहुंच गए माँ बिजासनी के द्वार पर प्रवासी मजदूरों की सेवा करने। बिजासनी ट्रस्ट ने प्रवासियों के लिए भोजन की व्यवस्था की थी। यहां प्रतिदिन 10 से 15 हजार लोग भोजन ग्रहण करते थे। यह श्रृंखला 45 दिनों तक अनवरत चलती रही। प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने भी सराहा। उस समय मजदूरों की दशा बहुत दयनीय थी। वे तपती गर्मी में सामान लेकर पैदल यात्रा कर रहे थे। उनके साथ दुधमुहे बच्चे, वृद्धजन, गर्भवती महिलाएं भी थीं। हम उनकी यात्रा की दूरी और कष्टों को तो कम नहीं कर सकते थे, परंतु उसे थोड़ा सरल बनाने के लिए प्रयासरत थे। एक दिन की बात है जब हम सब भोजन व्यवस्था में लगे थे तब एक महिला मेरे पास आई जिसकी गोद में बच्चा था। वह बहुत दूर से भरी गर्मी में पैदल चलकर आ रही थी। मैंने उन्हें भोजन का आग्रह किया तो वह बोली पानी मिलेगा क्या। उस समय वहां पानी नहीं था तो मैंने बिसलरी की बोतल मंगवाई और पानी दिया। वो नंगे पैर थी और पूरे पैर छालों से लाल हो गए थे। मैने बिसलरी का पानी पैरों पर डाल दिया तो पैरों से भाप सी निकल पड़ी। ये देखकर मेरा मन भर आया और हमने मजदूरों के लिए पदवेश की व्यवस्था करना भी प्रारम्भ किया। हर दिन नए अनुभव मिल रहे थे। एक व्यक्ति की यात्रा के दौरान मृत्यु हो गई तो हम लोगों ने उसके दाह संस्कार की व्यवस्था की। गरीबों के घर आवश्यक सामग्री के पैकेटों का वितरण किया। आज भी जब मैं उन दिनों का स्मरण करता हूँ तो मन दुःख से भर उठता है। हम तो माँ बिजासनी के सेवक हैं, बस माँ के आदेश और इच्छा से जितना हम लोगों से बन पड़ा हमने किया। उन दिनों श्रमिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहे थे। ऐसी विकट स्थिति में घर पर रहकर तमाशा नहीं देख सकता था, इसलिए पूरे लॉकडाउन के समय सेवा करने निकल पड़ा। दिन भर ना जाने कितने लोगों के संपर्क में आता था। किसे कोरोना है, किसे नहीं, कुछ पता नहीं था। बस अपनी तरफ से सावधानियां बरतते हुए निरंतर कार्य करते रहे। परिवारजनों और करीबियों ने बहुत समझाया कि भाई साहब अपनी उम्र को जरा देखते हुए घर पर रहिये, कहीं संक्रमण न हो जाये, परतु मैंने सिर्फ अपनी आत्मा की सुनी और अपना कार्य करता रहा।

मोहन जोशी
अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर
सेंधवा संचालन समिति, विद्या भारती मालवा

आचार्य देवो भवः जब पूर्व छात्र ने लॉकडाउन में उपलब्ध कराई दवाएं

'सबहिं सहायक सबल के, कोऊ न निर्बल के सहाय' मन में इसी प्रकार के भाव लिए ओमप्रकाश जी बहुत निराश और परेशान थे। मण्डला जिले के छोटे से गांव लालीपुर में रहने वाले ओमप्रकाश जी हृदयरोग और उच्च रक्तचाप से पीड़ित रहते थे। उनका इलाज नागपुर में चल रहा था और उन्हें नियमित जांच और दवाओं के लिए नागपुर आना–जाना पड़ता था, लेकिन लॉकडाउन के समय आने–जाने की कोई सुविधा नहीं थी। शायद इसी सोच में वे यह पंक्ति दोहरा रहे थे।

ओमप्रकाश जी के घर के सामने ही सरस्वती शिशु मन्दिर मण्डला का कक्षा 9वीं का छात्र अंकित दुबे रहता है। उसने देखा कि ओमप्रकाश काका कुछ दिनों से परेशान दिखाई देते हैं। अंकित ने जब काका से परेशानी पूछी तो रुंधे गले से उन्होंने बताया कि बेटा 'अब तो मेरी मौत निश्चित है। मैं जीवित नहीं बचूँगा ऐसा लगता है। अंकित ने कुछ समय विचार किया फिर बोला काका आपको कुछ नहीं होगा। मुझे स्मरण आ रहा है कि मेरे प्राचार्य जी बार–बार चर्चा करते हैं कि हमारे पूर्व छात्रों का जाल पूरे देश में फैला है। सभी बड़े शहरों में मण्डला विद्यालय के पूर्व छात्र इनके संपर्क में हैं। इसके बाद अंकित ने अपने प्राचार्य कमलेश अग्रहरि जी से दूरभाष पर चर्चा कर ओमप्रकाश काका की समस्या बताई। आचार्य श्री ने व्हाट्सएप पर उनकी दवा की पर्ची मंगाई और नागपुर में रहने वाले अपने पूर्व छात्र को भेज दी। पूर्व छात्र ने अपने खर्च पर एक माह की दवाएं नागपुर से मण्डला आने वाले मेडिकल कोरियर से भेज दीं। 2–3 दिन बाद जैसे ही ओमप्रकाश काका को दवाएं मिलीं तो वे फूट–फूट कर रोने लगे और कहा कि आचार्य जी तो मेरे लिए देवता हो गए। उन्होंने मेरी जान बचा ली। अंकित भी अपनी आँखें बंद कर विद्यालय में पढ़ाई जाने वाली सूक्ति याद करने लगा 'मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः अतिथि देवो भवः आचार्य देवो भवः'।

पुरुषोत्तम नामदेव
जबलपुर, मध्य प्रदेश

...काश कोरोना फिर से हो जाए

प्रान्त कार्यालय विद्या धाम का अनुभव

12 जून को कार्यालय के एक कार्यकर्ता की कोविड रिपोर्ट पॉजिटिव आई परन्तु अन्य कोई कष्ट नहीं था। सावधानी बरतते हुए पूरे कार्यालय का कोरोना टेस्ट कराया गया और पता चला कि कार्यालय के 3 कार्यकर्ताओं को छोड़कर शेष 16 कार्यकर्ता कोरोना पॉजिटिव हैं। इससे एकदम भय का वातावरण बन गया। घरवालों का रोना पीटना शुरू हो गया। शुभचिंतकों के फोन पर फोन आने लगे। उस समय तो और अधिक घबराहट होती थी जब वे सावधानियां बताने लगते थे। समाचार पत्रों में विद्या धाम सुर्खियों में आ गया। कोरोना पॉजिटिव पाए गए कार्यकर्ताओं को वैन से क्वारनटाइन सेंटर ले जाया गया। वहां की व्यवस्थाएं देखकर तो सभी को घबराहट होने लगी। ऐसा लगा कि अभी तक तो कुछ नहीं हुआ परन्तु यहां तो कुछ न कुछ होकर ही रहेगा। हम 16 लोग पॉजिटिव थे, अतः हमने प्रशासन से अपने लिए विद्या धाम में ही क्वारनटाइन सेंटर बनाने का आग्रह किया। इस पर प्रशासन ने शर्त रखी कि उस स्थान पर कोई कोरोना नेगेटिव व्यक्ति नहीं रह सकता है। विद्या धाम में दो वरिष्ठ प्रचारक श्री विजय नड्डा जी व श्री हर्ष कुमार जी ही थे, जो पॉजिटिव नहीं थे। हम सभी सोचने लगे कि अब तो हमें यहीं रहना होगा। परन्तु सुखद आश्चर्य तब हुआ जब हमें ज्ञात हुआ कि ये दोनों ही वरिष्ठ अधिकारी कार्यालय छोड़कर कहीं और रहने जा रहे हैं। फिर तत्काल ही हम सभी को विद्या धाम कार्यालय में शिफ्ट कर दिया गया। साधुवाद है उन दोनों प्रचारकों की सोच को। इस प्रकार जिन्हें आइसोलेट होना चाहिए था वे विद्या धाम परिसर में खुलेआम घूमने लगे और जिनको खुलेआम घूमना चाहिए था वे आइसोलेट हो गए।

विद्या धाम में हमारा जीवन बहुत ही सुविधाजनक और आनंदपूर्ण रहा। प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक व्यस्त दिनचर्या रही। योग और व्यायाम की भी पूर्ण व्यवस्था थी। भोजन आदि हम सभी मिलकर स्वयं ही बनाते रहे। सभी को कोई शारीरिक कष्ट पहले भी नहीं था और बाद में भी नहीं हुआ। कोई दवा आदि भी नहीं खानी पड़ी। मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ कि जो थोडी शारीरिक समस्याएं जैसे घुटने का दर्द आदि पहले थे, वहां रहकर वे भी ठीक हो गए। सबसे बड़ा लाभ जो हुआ वह यह कि नियमित दिनचर्या और सात्विक भोजन का महत्व समझ में आ गया और जीवन में उन बातों को धारण किया जिसके कारण प्रति मास कम से कम 5 हजार रुपये जो स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से व्यय होते थे, उनकी बचत होने लगी। 17 दिन पूरे होने के बाद कुछ कार्यकर्ताओं के मुख से निकल ही गया, ''काश कोरोना फिर से हो जाए''।

करुणेन्द्र
प्रान्तीय संवाददाता, विद्याभारती पंजाब

कोरोना दे गया मितव्ययता की सीख

रवि कुमार
प्रांत संगठन मंत्री
विद्या भारती
हरियाणा

आमतौर पर जब भी कोरोना महामारी की चर्चा आती है तो सामान्यतः लोग यही कहते सुने जाते हैं कि इस दौरान आर्थिक गतिविधियां पूरी तरह से ठप पड़ गईं थी, बहुत सारे व्यवसाय समाप्त हो गए, आर्थिक मंदी का दौर चल पड़ा था, बहुत सी आर्थिक कठिनाइयां सामने आईं, तमाम लोग बेरोजगार हो गए, लोगों को अनगिनत मुसीबतों का सामना करना पड़ा आदि अर्थात् ज्यादातर चर्चा आर्थिक पक्ष को लेकर ही होती रही है, ऐसा स्वाभाविक भी है क्योंकि आर्थिक रूप से हर कोई किसी न किसी रूप में प्रभावित अवश्य हुआ है। लेकिन इसके अलावा कोरोना महामारी के दौरान लंबे चले लॉकडाउन में बहुत कुछ नए अनुभव होने और सीखने का भी विषय रहा होगा, इस पर सामान्यतः चर्चा कम ही होती है।

ऐसा ही एक प्रसंग यह है कि विद्या भारती के विद्यालयों में पढ़े पूर्व छात्र जीवन में सफलता प्राप्त कर सामान्य से विशेष बने हैं। ऐसे ही एक पूर्व छात्र नवीन गोस्वामी जो गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र से विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करके इंजीनियरिंग में गए, परंतु बाद में कॉरपोरेट क्षेत्र में नौकरी नहीं की बल्कि व्यवसाय के क्षेत्र में आ गए। नवीन गोस्वामी वर्तमान में ऊर्जा क्षेत्र की कम्पनी चलाते हैं। गुरुग्राम में आपका निवास है।

लॉकडाउन के बाद स्थिति सामान्य होने पर उनका कुरुक्षेत्र आगमन हुआ। कार्यालय में बैठकर कुछ विषयों पर चर्चा हुई। इस दौरान उन्होंने बताया कि कोरोना काल में हमें अपने घर के खर्चे के बारे में ध्यान आया कि हमारे घर का खर्च मात्र 10 हजार रुपये मासिक रह गया है, जबकि कोरोना से पूर्व हम 50 हजार रुपये प्रति माह खर्च कर रहे थे। इस तरह घर के खर्च में तो काफी कमी आई ही, साथ ही हर माह होने वाले अन्य खर्च भी नहीं हुए। लॉकडाउन के दौरान बाहर आना–जाना भी पूरी तरह बंद था। पूर्व में सप्ताहांत पर परिवार सहित किसी अच्छे रेस्टोरेंट में जाकर भोजन करना, माह के अंत में किसी पर्वतीय क्षेत्र में या भ्रमणीय स्थल पर 2–3 दिन के लिए घूमने जाना आदि अभ्यास में था। लॉकडाउन के दौरान यह ध्यान में आया कि बाहर भोजन न करना और भ्रमण भी नहीं किया तो भी जीवन आनन्द से चल सकता है। कोरोना काल न आता और लॉकडाउन की स्थिति न होती तो शायद यह मितव्ययता का पाठ हमें सीखने को नहीं मिल पाता। Cost of living और standard of living दोनों अलग–अलग हैं। लोग सोचते हैं कि लिविंग की कॉस्ट बढ़ने से स्टैण्डर्ड भी बढ़ेगा जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं होता है। नवीन गोस्वामी जैसे कितने ही लोगों को कोरोना महामारी के दौरान मितव्ययता का पाठ सीखने को मिला होगा।

बच्ची के संस्कार का हिस्सा बन गया सेवा का भाव

दिल्ली। कोरोना महामारी ने अचानक सब–कुछ स्थिर कर दिया था। जो जहां था वहीं रह गया। ऐसे में भी सरस्वती बाल मंदिर राजौरी गार्डन के आचार्यों ने हमसे लगातार संपर्क बनाए रखा। उस कठिन घड़ी में न सिर्फ मेरी पांचवीं कक्षा की बेटी को बिना फीस की चिंता किए निरन्तर पढ़ाने का काम किया बल्कि उसे सेवा का पाठ भी पढ़ाया। विद्यालय ने वीडियो के माध्यम से बच्चों को मजदूरों व सब्जी बेचने वालों के लिए मास्क बनाने का कौशल सिखाया। प्रत्येक बच्चे की तरह मेरी बेटी ने भी 10 मास्क बनाकर वितरित किए। उन दिनों उसके सीखने के गुण को मैंने करीब से अनुभव किया। सेवा का वह भाव उसके संस्कार का हिस्सा बन गया है।

अभिभावक हेमा जोशी

विद्यालय ने परिवार को फिर से खड़े होने का संबल दिया

दिल्ली। मेरा परिवार आर्थिक रूप से अत्यंत दयनीय अवस्था से गुजर रहा था। पिता बहुत बीमार थे और मेरी बड़ी बहन मानसिक रूप से विक्षिप्त हैं। इस बीच लॉकडाउन में मेरी नौकरी भी चली गई। उस समय राजौरी गार्डन में बारहवीं कक्षा में पढ़ रही मेरी छोटी बहन ने पढ़ाई न करने का फैसला ले लिया। इसका पता चलने पर विद्यालय ने न केवल फीस, बल्कि मोबाइल फोन और भोजन आदि में भी सहयोग किया। विद्यालय परिवार ने पूरी तरह से टूट चुके मेरे परिवार को विश्वास दिया और फिर से खड़े होने का मानसिक संबल दिया। मेरी बहन को आचार्या के घर रहकर पढ़ाई पूरी करने का भरोसा भी दिलाया। अब मेरे लिए विद्यालय अपने परिवार से कम नहीं है।

अभिभावक नीतू गौरी जोशी

सराहनीय है मोहल्ला शिक्षण केंद्र की पहल

जोधपुर। विद्या भारती द्वारा चलाए गए मोहल्ला शिक्षण केंद्र की योजना से मैं बहुत प्रभावित हुआ। पूर्व में जब विद्या मंदिर के भैयाजी ने संपर्क किया तब मुझे लगा कि कहीं बच्चों को कोरोना तो नहीं हो जाएगा। इस प्रकार मन में संदेह था पर भैया जी द्वारा बार–बार संपर्क करने पर मैंने स्वीकृति दी और अपने बच्चों को मोहल्ला शिक्षण केंद्र भेजा। महीने भर बाद भैया जी ने आग्रह किया कि आपके घर पर जगह है तो क्या वहां मोहल्ला शिक्षण केंद्र बना सकते हैं। तो मैंने अपने पिताजी से स्वीकृति ली और अपने घर पर मोहल्ला शिक्षण केंद्र चलाने की अनुमति प्रदान की। प्रारंभ में एक घंटा मोहल्ला शिक्षण केंद्र चल रहा था लेकिन बाद में 2 घंटे की योजना बनी और फिर विषय अनुसार शिक्षक आने लगे। विद्या भारती की यह योजना बहुत सराहनीय है। मैं इसके लिए विद्या भारती को धन्यवाद देता हूं।

अभिभावक प्रमोद सोनी
आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय बिलाड़ा

हमारे बच्चों की शिक्षा के लिए दांव पर लगाया अपना जीवन

जोधपुर। कोरोना महामारी के समय सब लोग डर के कारण घर में ही रहने का प्रयास कर रहे थे तो वहीं सरस्वती स्कूल वाली दीदी जी और भैया जी हमारे बच्चों की पढ़ाई की चिंता करते हुए महामारी में भी घर–घर आकर पढ़ा रहे थे। फीस इसके आगे कोई मायने नहीं रखती जो अपने जीवन की परवाह किये बगैर हमारे बच्चों की पढ़ाई की चिंता कर रहे हैं।

अभिभावक कीर्ति जी
सरस्वती शिशु मंदिर मंडिया रोड पाली

दिहाड़ी श्रमिक बीमार अभिभावक के आत्मसम्मान ने दिल को छू लिया

गाजियाबाद। कक्षा 7 के एक बालक के ऑनलाइन क्लास में नहीं जुड़ने के कारण जब आचार्य जी घर गये तो पता चला कि बालक और उसका छोटा भाई एक कमरे के घर में अकेले हैं। पिता को टीबी है, लॉकडाउन में दवाई नहीं मिली, तबियत बिगड़ी तो दिल्ली के विशेष टीबी हॉस्पिटल में भर्ती हो गए। बच्चों की मां भी वहीं देखरेख हेतु रहने लगी। घर में राशन समाप्त था। बच्चों ने बताया कि पास की दुकान से उधार लाते हैं। अब दुकानदार का कहना है कि पैसा जमा कराओ। इसके बाद स्कूल ने पैसा जमा कराया, बच्चों को राशन की किट पहुंचाई और कुछ रुपये भी दिए। बालक पढ़ता रहा। बालक के पिता 2 महीने बाद हॉस्पिटल से घर आये। कुछ दिन बाद माता–पिता मुझसे मिलने आये। पूरा हिसाब कर रुपये मेरी मेज पर रखकर रोने लगे। बोले स्कूल का कर्ज तो नहीं उतार सकते लेकिन जो पैसे हैं वह ले लीजिये। दिहाड़ी मजदूरी करने वाले बीमार पिता के आत्म स्वाभिमान ने मेरी आत्मा को छू लिया। यह घटना मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अनुभव है।

विपिन राठी
प्रधानाचार्य सरस्वती विद्या मंदिर
नेहरू नगर गाजियाबाद

आचार्य अनुभव

जमाखोरी के इस माहौल में बाबाजी ने कराया अपरिग्रह का दर्शन

गुजरात। विद्या भारती सेवा कार्य में सदैव आगे रहा है, वह कार्य चाहे समाज की सेवा का हो या राष्ट्र की सेवा का। श्री सरस्वती विद्या मंदिर के आचार्यो ने जरूरतमंद लोगों के घर राशन देने का कार्य हाथ में लिया। इस दौरान एक ऐसा अनुभव हुआ जो शायद जीवनभर स्मृति में रहेगा। लालचभरे इस जीवन में मंदिर के एक पुजारी बाबा ने अनूठी मिसाल पेश की। कार्यकर्ता भाई जब पुजारी बाबा के घर पहुंचे तो उनके घर के दर्शन मात्र से उनकी जीवनशैली का परिचय हो रहा था। उनके घर में बहुत ही कम सामान था। कार्यकर्ता भाइयों ने अपना कर्त्तव्य निभाते हुए बाबाजी को कुछ अनाज अर्पण किया तो बाबाजी ने उसे स्वीकार करने से इनकार करते हुए कहा कि मेरे पास दो वक्त का खाना मिलता रहे उतना अनाज है। मुझे इस अनाज की आवश्यकता आज के लिये नहीं है। इसलिए आज आप ये अनाज किसी जरूरतमंद को दें। बाबाजी की यह बात सुनकर सभी कार्यकर्ता कुछ समय के लिए स्तब्ध हो गए। उन निर्धन बाबा के भीतर कार्यकर्ताओं ने बहुत ही अमीर इंसान के दर्शन किये। इस घटना से यह यकीन हो गया कि ईश्वर आज ऐसे इंसानों के स्वरूप साक्षात् उपस्थित है। आज के जमाखोरी के माहौल में अपरिग्रह का दर्शन कराके बाबाजी ने हम सब को धन्य कर दिया।

श्रमिक ने साबित किया मानवता ही धर्म

कच्छ। कोरोना काल की विकट परिस्थिति में कच्छ में हुए मारवाड़ी भाईयों के परिश्रम और परोपकार के दर्शन। कम मात्रा में कमाई करने वाले श्रमिक मारवाड़ी भाइयों ने सेवा करने का व्रत लिया। रोज की कमाई करके रोजाना खाने वाले इन भाईयों ने एक संगठन बनाकर भोजन वितरण का कार्य हाथ में लिया। इस कठिन घड़ी में धर्म के भेदभाव को भूलकर जो भी इंसान अनाज का दान करने आता तो यह संगठन उस प्राप्य अनाज को पकाकर तैयार किया हुआ भोजन जरूरतमंदों में बाटने लगा। यदि यह भाई चाहते तो उस अनाज का उपयोग अपने कोठार भरने के लिये कर सकते थे लेकिन उन्होंने भोजन–वितरण का कार्य हाथ में लेकर मानवता के दर्शन कराए। इससे साबित हो गया कि इंसान अपने कर्म, अपने कार्य से ही अमीर बनता है।

मोहल्ला शिक्षण केन्द्र के कारण अतिरिक्त विषय की हो गई तैयारी

जोधपुर। मोहल्ला शिक्षण केन्द्र के लिए स्थान तय करने में प्रारंभ में कुछ कठिनाइयां आईं मगर जब अभिभावकों को इनका महत्व समझ में आया तब अधिकतर लोग अपने घर पर केंद्र चलाने का आग्रह करने लगे। विद्यालय में मैं केवल हिंदी विषय पढ़ाती थी मगर केंद्र पर इसके साथ सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने का अवसर भी मिला। इस कारण एक और विषय की तैयारी हो गई जिसका लाभ मुझे प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में मिल रहा है। प्रधानाचार्य और अधिकांश आचार्यों का गांवों में जाना हुआ। प्रारम्भ में कुछ भैया–बहिन रुचि कम ले रहे थे मगर सतत संपर्क के कारण उनकी रुचि बढ़ने लगी। अभिभावक भी आचार्यों का इंतजार करते थे और यदि किसी दिन जाना नहीं होता तो अभिभावकों का फोन आ जाता था कि आज आप आए नहीं।

प्रेसता डांगा
श्री मारुत नंदन शारदा बाल निकेतन नागौर

विद्यार्थियों की कितनी चिंता करते हैं आचार्य

जोधपुर। विद्यालय द्वारा संचालित केंद्रों पर योजना के अनुसार सप्ताह में 2 दिन फिड़ौद गांव और 2 दिन अटीयासन गाँव में मैं स्वयं एक आचार्य को साथ लेकर जाता था। सुखद अनुभव यह रहा कि विद्यालय से जो गृहकार्य मिलता था अधिकांश भैया–बहिन उसे समय पर पूरा करते थे। कई भैया बहिनों ने तो कॉपियां भी पूरी भर दी थीं। उनके आसपास के अन्य विद्यालयों के भैया–बहिनों के अभिभावक कहते थे कि इनके आचार्य 15 किलोमीटर दूर आकर भी विद्यार्थियों की संभाल करते हैं। इनको कितनी चिंता है अपने विद्यार्थियों की लेकिन हमारे बालकों के आचार्य 8 महीने में एक बार भी नहीं आए। प्रारंभिक समय में मोहल्ला शिक्षण केंद्र के लिए कई लोगों ने अनुमति देने में हिचकिचाहट दिखाई, लेकिन बाद में जब इसका महत्व समझाया गया तो सभी ने सहयोगात्मक रवैया अपनाया।

अरुण कुमार
प्रधानाचार्य आदर्श विद्या मंदिर पोकरण

शुरुआत में कुछ कठिनाई के बाद सभी का मिला सहयोग

जोधपुर। प्रारंभ में तो कोरोना के डर से अभिभावक बच्चों को आने की अनुमति नहीं दे रहे थे लेकिन जब घर जाकर उनको समझाया गया कि विपरीत परिस्थिति में भी हमें बच्चों का नुकसान नहीं करना चाहिए। इस परिस्थिति में भी हमें बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना है, इसके लिए आप भी हमारा सहयोग करें। इसके बाद कुछ अभिभावकों ने बच्चों को शिक्षण केंद्रों पर भेजना शुरू कर दिया और जिनके घर पर जगह थी उन्होंने पढ़ाने के लिए स्थान भी दिया। वहीं, पहले जो अभिभावक मना कर रहे थे कुछ समय के बाद वह भी धीरे–धीरे सहयोग करने लगे और अपने बच्चों को भेजने लगे।

रीना जी व शानू जी
दीदी, आदर्श विद्या मंदिर पाली

समाचार-पत्रों में सुर्खियां बने

अच्छी पहल — कोरोना संकटकाल में विद्यार्थियों को शैक्षणिक नुकसान से बचाने...

विद्याभारती चला रहा मोहल्ला पाठशाला

40 हजार शिक्षार्थियों को मिल रही शिक्षा

छोटे-छोटे समूह बना कर पढ़ा रहे आचार्य

मिराज खान के परिवार को शिशु मंदिर की दीदी ने दिया राशन और नकदी

सराहनीय — बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर साप्ताहिक कक्षाएं लगाई जा रहीं

बच्चों की पढ़ाई चालू रखने मोहल्लों में जाकर पढ़ा रहे

छोटे-छोटे समूह बना कर पढ़ा रहे आचार्य

दिन में जरूरतमंदों तक भोजन पहुंचा रहे, रात में यूट्यूब पर बांट रहे गणित का ज्ञान

जागरण विशेष

सीएम ने किया विद्या भारती के ई-लर्निंग एप का लोकार्पण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना के संकट काल में शारीरिक दूरी के साथ विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा जारी रखने के लिए अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान विद्या भारती ने संपूर्ण स्वदेशी एलएमएस एप तैयार किया है। गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी ... पढ़ते हैं। उनके जीवन की सुरक्षा हो और पढ़ाई भी बाधित न हो। ई-लर्निंग ...

सरस्वती विद्या निकेतन में डिजिटल पाठदान शुरू

हाइलाकांदी, 9 अप्रैल (हि.स.)। लॉकडाउन के चलते निर्देशों को मानते हुए ... विद्यार्थियों को एक साथ अपने-अपने घर में बैठकर डिजिटल पद्धति से पाठदान किया जा रहा है। विद्या निकेतन के प्रधानाचार्य अंजन गोस्वामी ने बताया कि सरकारी निर्देश अनुसार शिक्षण संस्थान में छुट्टी की घोषणा करने के बाद छात्र-छात्राओं को शिक्षा दान किस तरह से दिया जाए इसको लेकर चर्चा करने के बाद यह निर्णय लिया गया है। इंटरनेट के जरिए छात्र-छात्राओं को शिक्षादान किया जाएगा। ... व्हाट्सएप के माध्यम से शुरू किया गया है। उल्लेखनीय है कि ... करीमगंज दौरे के दौरान ... विद्यानिकेतन की ओर से मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल के हाथों ... निधि में 19,861 रुपए का ...

रोग की दवा — डॉ. ऋषिराज वशिष्ठ ने कोरोना महामारी से बचाव के लिए आयुर्वेद के मूल ग्रंथों से खोजी बूटियां

आयुर्वेदाचार्य ने बनाया काढ़ा, बढ़ाएगा प्रतिरोधक क्षमता

लॉकडाउन में सेवा कार्य में जुटा है विद्या भारती परिवार

દ્વારકામાં શ્રી સરસ્વતી શિશુમંદિર ખાતે આવતીકાલે બાળકોને સુવર્ણપ્રાશન ટીપાં પીવડાવવાનો કાર્યક્રમ

લોકડાઉનમાં લોકોને ફોન સંપર્ક કરી નિર્ધારિત સમયમાં આવવા અપીલ

विद्या भारती के 80 स्कूल में बनेंगे आइसोलेशन वार्ड

भोपाल (नवदुनिया रिपोर्टर)। विद्या भारती अपने 80 स्कूलों के भवनों को आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए देगा। ये स्कूल मध्य भारत प्रांत के ग्वालियर, गुना, भोपाल व हरदा में हैं। विद्या भारती के पदाधिकारियों ने कहा है कि स्कूल परिसरों का भी प्रशासन ...

विद्या भारती ने 36 लाख रुपए रिलीफ फंड में कराए जमा

भास्कर न्यूज | कुरुक्षेत्र

विद्या भारती हरियाणा संगठन के अध्यक्ष डॉ. ऋषिराज वशिष्ठ ने कहा कि विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संगठन है जो हरियाणा में विभिन्न स्तर के 72 विद्यालय संचालन कर रहा है। कोरोना के बंद के कारण विद्यालय नहीं हो पाए हैं लेकिन विद्यालय के आचार्य, प्रबंध समिति एवं छात्र समाज सेवा में ... निभा रहे हैं। बताया कि विद्या भारती की दो ... शिक्षा समिति एवं ... शिक्षा समिति कार्य ... इन दोनों समितियों में काम करने वाले विद्यालय ... आचार्यों, प्रबंध समितियां एवं पूर्व छात्रों के सहयोग से 11593 पैकेट अनाज के वितरित किए ... 1952 सैनिटाइजर, 8179 मास्क, 784 जगहों पर पशु चारा उपलब्ध करवाने के साथ 85 गांवों के लोगों को ... वायरस के प्रति जागरूक ... है। इसके अतिरिक्त ... द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से ...

गीता रसोई में पूर्व छात्र देश-विदेश ...

भोजन वितरण से पूर्व प्रभु की आरती करते सदस्य।

101 प्रवासी मजदूरों के बीच खाद्य सामग्री वितरित

राजगीर (एसएनबी)। पूज्य तपस्वी जगजीवन जी महाराज सरस्वती विद्या मंदिर ने ... एकेडमी में फंसे 101 प्रवासी मजदूरों के ... दिनों का खाद्य सामग्री पैकेट ... गया। इस खाद्य साम... है। विद्यालय के प्राचार्य ... कि यह सभी मजदूर ... के दरभंगा, बगहा, ... एवं मधेपुरा के प्रवासी ... के दौरान लॉकडाउन ... मजदूरों को पहचान क... दिया गया। बताया जा... अखिल भारतीय शिक्षा ...

खाद्य सामग्री देते विद्यालय प्रबंधक।

विद्या भारती दक्षिण बिहार भारतीय शिक्षा समिति के तत्वाधान में दक्षि... सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के द्वारा संपूर्ण लॉकडाउन की स्थिति में नर से ... ध्यान में रखते हुए भोजन सामग्री के अलावे कच्चा एवं पक्का सब्जी मज... जा रहा है। इस वितरण समारोह में अमन कुमार सिंह, जय भारती वर्मा, ... कुमार चौधरी, मनोज, रामेश्वर उरांव, अतुल तिवारी, ईश्वर शर्मा सहित कई ...

ମାସ୍କ ଓ ସାନିଟାଇଜର ବଣ୍ଟନ

विद्या भारती के सेवा कार्य

'विद्या भारती'

40 हजार विद्यार्थियों को मिल रही शिक्षा

मध्य स्वदेश

लॉकडाउन प्रभावितों की सेवा कर रहा सरस्वती शिशु मंदिर परिवार

स्कूल परिसर को आईसोलेशन वार्ड बनाने किया जिला प्रशासन से निवेदन

अशोकनगर, ब्यूरो। कोरोना के चलते लॉकडाउन की स्थिति बने हुए तीसरा सप्ताह बीत रहा है। ऐसे में प्रशासनिक व्यवस्थाओं के...

चित्तौड़गढ़ भास्कर

कोरोना को हराना लक्ष्य • रेजीडेंट डॉ. अंकिता अग्रवाल तीन महीने से घर नहीं लौटीं, बोलीं-भीलवाड़ा में अब कोई पॉजिटिव नहीं, सुनकर सुकून मिला

हमारी बेटी दिल्ली एम्स टीम में, हरियाणा में 200 संक्रमितों का इलाज किया, अब 80 निगेटिव

अभी झज्जर में हूं, तीन दिन बाद खुद को क्वारेंटाइन करूंगी

पीड़ित मानवता की सेवा में जुटे होनहार सुखदेव

विविधता संरक्षण एवं प्रबन्धन में बीएससी स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण...

विद्या विकास स...
हजार परिवारों म...

मध्य स्वदेश संव...

बैतूल जिले के सुदूर छोटे (चिरापाटला) के निवासी के विद्याभारती कार्यालय में तैयारी कर रहे हैं। वहीं को के बीच स्वयं के खर्चे प ग्रामीणों को बांटकर मानव सुखदेव उइके 2007 में 'भारत-भारती' में पढ़ने आ यहां भारत भारती छात्रावास में रहकर 12 वीं भोपाल में विद्या भारती बिहारी वाजपेयी हिन्दी वि...

ઓખા મરીન પોલીસ દ્વારા લોકડાઉન દરમ્યાન ચુસ્ત અમલવારી

પોલીસના ફુટ પેટ્રોલીંગ દરમ્યાન ચુસ્ત કામગીરીને બિરદાવતાં સ્થાનિકો

દેશભરમાં કોરોના વાયરસ સંદર્ભે ચાલી રહેલાં લોકડાઉનમાં પોલીસ વિભાગની લોકડાઉનની અમલવારીમાં ચુસ્ત કામગીરીની સાથે સાથે લોકોને પણ ઉમદા સહયોગ આપ્યો છે.
આમ છતાં અમુક લોકો લોકડાઉન દરમ્યાન જાહેરનામાનો ભંગ કરતા હોય તેની સામે લોકહિત માટે પોલીસે દંડનીય કામગીરી પણ કરી હતી. ઓખા મરીન પોલીસની લોકડાઉનના પ્રથમ રાઉન્ડ તેમજ બીજા રાઉન્ડમાં પણ પી.એસ.આઈ. જે.જી. સોલંકીની આગેવાની હેઠળ ચુસ્ત બંદોબસ્ત જાળવ્યો હતો અને લોકડાઉન દરમ્યાન અત્યાર સુધીમાં કલમ ૧૮૮ ના કુલ ૧૫૪ કેસ, ૨૦૭ ના કુલ ૧૪૫ કેસ તેમજ ૨૭૦ના એક કેસ કરવામાં આવ્યા હતા. તાજેતરમાં પોલીસ દ્વારા કરાયેલ ફુટ પેટ્રોલીંગમાં ઉમદા કામગીરી જોતાં લોકોએ પોલીસ પર પુષ્પવર્ષા કરી કામગીરીને બિરદાવી હતી.

...देवरस प्रकल्प कारंजा
...तरित किया मास्क

दीन बन्धुओं की सेवा कर रहा शिशु मंदिर परिवार

जरूरतमंदों को भोजन सामग्री प्रदान करते शिशु मंदिर के आचार्य।

...ॉक डाउन पार्ट टू को देखते हुए सरस्वती शिशु ...दिर में ऑन लाईन पढ़ाई की व्यवस्था हुई शुरू

शंकरदेव शिशु निकेतन ने किया घर-घर जाकर खाद्य सामग्री का वितरण

चांगसारी, 12 अप्रैल (नि.सं.)। पूरे विश्व भर में कोरोना वायरस महामारी के चलते संकट का वातावरण बना हुआ है। देशभर में लॉकडाउन के समय खाद्य संकट हो रहे है। राज्य के ... जिला के उत्तर गुवाह... शिशु निकेतन द्वारा ... के बीच ... भी कई लोग संस्था के जरिए बेसहारे लोगों की सहायता के लिए आगे आए। इनमें से है- आचार्य संगीता चमुवा, सुरभि तामुली, ...

नि:शुल्क मास्क बांट रहे, विद्यालय के पू... छात्र एवं अभिभावक कर रहे सहयोग

जन-धन खातों में राशि आने की जानकारी देकर सोशल डिस्टेंसिंग क... पालन करने की दे रहे सलाह

बेगमगंज। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव एवं लॉकडाउन में लोगों की सहायता करने के लिए नगर के सरस्वती विद्या मंदिर के आचार्य, दीदी, छात्र-छात्राएं और उनके अभिभावक लगातार कार्य कर रहे हैं। मास्क एवं भोजन जरूरतमंद लोगों को वितरित किया जा रहा है। हितग्राहियों के प्रधानमंत्री ... खाते में राशि आने के बारे में जानका... रही है। वहीं अवकाश के इन दिनों ... प्रभावित न हो इसके लिए ऑनलाइन ... संचालित की जा रही है। विवेकानंद ... संचालित सरस्वती विद्या मंदिर के पू... शर्मा भी लोगों को जागरूक करने का ... उन्हें कोरोना के संक्रमण से बचाव के लि... रहे हैं। वे गांवों में मास्क का वितरण ... विद्यालय की दीदी रेखा शिल्पकार ... शिल्पकार के सहयोग से घर पर मास्क ... जरूरतमंद लोगों में वितरित कर रही हैं। य... तक लगभग 370 मास्क वितरित कर चुके ... के मौसम लोधी, दीपेश विश्वक... शिल्पकार, सुषमा चौरसिया, प्रियंका जैन, म...

हरिभूमि

उज्जैन, बुधवार 1 अप्रैल 2020

कोरोना वायरस से लड़ने के लिये सरकार के साथ विद्या भारती मालवा ने खोले अपने द्वार

182 विद्यालय आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए सौंपे

जरूरतमंदों तक पहुंचा रहे खाद्यान्न सामग्री एवं राशन...

ट्रेन रुकते ही महज 3 घंटों में श्रमिकों को बांटे 1500 से अधिक भोजन के पैकेट

श्रमिकों को भारत भारती आवासीय विद्यालय के सहयोग से मिला खाना

ट्रेन से जा रहे श्रमिकों को उपलब्ध कराए भोजन के पैकेट। • नवदुनिया

बैतूल (नवदुनिया प्रतिनिधि)। बैतूल से गुजर रही श्रमिक स्पेशल ट्रेन में सवार श्रमिकों व अन्य लोगों को रविवार रात में बैतूल स्टेशन पर भोजन मुहैया कराया गया। इसमें विद्या भारती के भारत भारती आवासीय विद्यालय के सदस्यों का खूब सहयोग रहा।

रविवार रात में एक ट्रेन दक्षिण भारत से बिहार की ओर जा रही थी जिसमें 1500 से अधिक यात्री सवार थे। इसकी सूचना मिलने पर भारत भारती आवासीय विद्यालय के सदस्यों ने 3 घंटे में 500 से अधिक भोजन के पैकेट तैयार कर ट्रेन में यात्रियों को वितरित किए।

विश्व को कोरोना महामारी से मुक्ति के लिए गायत्री मंत्र का सामूहिक जप

विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण पूरा विश्व चिन्तित है और इस महामारी के विरुद्ध समाज का हर वर्ग अपने–अपने स्तर पर संघर्ष कर रहा है। इसी कड़ी में विद्या भारती के आहवान पर मध्य भारत प्रान्त के हजारों परिवारों ने अक्षय तृतीया पर 26 अप्रैल को अपने घर पर लगातार दस मिनट तक गायत्री मंत्र का जप किया। एक ही समय पर अलग–अलग स्थानों पर गायत्री मंत्र के सामूहिक जप से जहां मन एकाग्र हुआ, तो वहीं कोरोना महामारी के कारण आम लोगों के मन में उत्पन्न मानसिक दबाव को कम करने में भी सहायता मिली। विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त ने 26 अप्रैल के दिन सुबह ठीक 10 बजे, 10 मिनट तक गायत्री मंत्र का जप करने के लिए आह्वान किया था। इस आहवान पर हजारों परिवारों ने अपने घर पर गायत्री मंत्र का जाप किया। आध्यात्मिक एवं मंत्र शक्ति के प्रयोग से कोरोना वायरस के संक्रमण से विश्व को मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से यह आयोजन किया गया था। सभी लोगों ने स्नान के पश्चात् पवित्रता के साथ गायत्री मंत्र का जप किया। गायत्री मंत्र मन को शांति प्रदान करने वाला है।

- मध्य भारत प्रान्त के आह्वान पर अक्षय तृतीया पर किया गया आयोजन
- हजारों परिवारों ने एक ही समय पर 10 मिनट तक किया मंत्र का जप
- छात्र–छात्राएं, अभिभावक, आचार्य व दीदी और आम लोग हुए शामिल

तीन लाख 15 हजार से अधिक लोगों ने किया करीब साढ़े तीन करोड़ मंत्रों का जप

मध्य भारत प्रान्त के 1,252 सरस्वती शिशु मंदिरों एवं विद्या मंदिरों और एकल विद्यालयों के लगभग 77,384 छात्र–छात्राएं, 12,762 पूर्व छात्र, 1,34,797 अभिभावक, विद्यालयों में अध्यापन कार्य में संलग्न 4,135 आचार्य–दीदी, कर्मचारी, विद्यालय संचालन समितियों के 4,762 सदस्य और उनके 36,424 परिजनों तथा समाज के अन्य परिवारों के 45 हजार से अधिक सदस्यों ने सम्मिलित होकर एक ही समय पर गायत्री मंत्र का जप किया। इस तरह मध्य भारत प्रान्त में अक्षय तृतीया पर कुल 3 लाख 15 हजार 264 लोगों ने 3 करोड़ 40 लाख से अधिक मंत्रों का जप किया।

विद्या भारती के मध्य भारत प्रान्त के प्रचार प्रमुख चंद्रहंस पाठक के अनुसार कोरोना महामारी से मुक्ति के लिए लोगों ने गायत्री मंत्र और आध्यात्मिक शक्तियों से सामूहिक प्रार्थना की। चंद्रहंस पाठक के अनुसार पौराणिक मान्यता है कि अक्षय तृतीया के अवसर पर किए गए शुभ कार्य अक्षय फल देने वाले होते हैं। सामूहिक रूप से गायत्री मंत्र के जप से प्रकृति एवं ईश्वर, कोरोना वायरस के संक्रमण से विश्व को अवश्य मुक्ति दिलाएंगे। मध्य भारत प्रान्त के अंतर्गत आने वाले सभी सरस्वती शिशु एवं विद्या मंदिरों तथा संस्कार केन्द्रों, एकल विद्यालयों की ओर से छात्र–छात्राओं, अभिभावकों, आचार्यों एवं दीदियों सहित सभी संबंधित लोगों को फोन और सोशल मीडिया के माध्यम से गायत्री मंत्र के सामूहिक जाप कार्यक्रम में सहभाग करने के लिए सूचना दी गई थी।

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

लॉकडाउन के अन्तर्गत विद्यालयों एवं पूर्व छात्रों के माध्यम से किये गये सेवा कार्यों का वृत्त

सेवा कार्य में लगे विद्यालयों की संख्या	8,626
कुल सेवा स्थान	21,825
कार्यरत कार्यकर्ता	98,898
वितरित अनाज पैकेट	7,42,645
लाभार्थी संख्या	14,41,047
भोजन वितरण (लाभार्थी)	24,07,923
मास्क वितरण	14,13,685
सैनेटाइजर वितरण	2,26,055
पशुओं को आहार	86,499
ग्रामों में जनजागरण	49,897
प्रधानमंत्री केयर फण्ड (राशि)	8,75,11,717
मुख्यमंत्री / प्रशासन सहायता कोष (राशि)	1,09,58,332

हमारा लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना है, जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी–झोंपड़ियों में निवास करने वाले दीन–दुखी, अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

VIDYA BHARATI
Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan
Quality Education with Values

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
मूल्य आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

प्रज्ञा सदन, सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
महात्मा गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065
Email: vbsamvad@gmail.com | Website: www.vidyabharti.net